दो शब्द

आदरणीय बन्धुओं व गुरुजनों ! आज आप लोगों के स्नेह तथा आशीर्वाद से माला का ४५ वां विशेषाङ्क बाल रोगचिकित्सांक आप लोगों के कर कमलों में प्रस्तुत करते हुये महान हर्षित हूँ । मुझे विशेष प्रसन्नता तो इस कारण है, कि मैं प्रथम महिला चिकित्सक हूँ । जिसने प्रसिद्ध आयुर्वेदिक मासिक पत्रिका के विशेषांक का सम्पादन किया है । यह मेरे लिये विशेष गौरव की बात है । वैसे तो आज हमारी प्रधान मन्त्री तथा स्वास्थ मन्त्री दोनों ही महिला है । यदि वह दिल से चाहे । तो आज आयुर्वेद का बहुत कल्याण हो सकता है । परन्तु उन्हे तो भारतीय की अपेक्षा वैदेशिकता में ही महानता दृष्टि गोचर होती है । आज १८-२० वर्ष के इस शासन में भारतीय संस्कृति की जो क्षती हुई है, इतने कम समय में इतनी क्षती किसी काल में नहीं हुई । इस अल्प काल में जिस तेजी से हमने विदेशी रहन सहन व खान पान को अपनाया है इन सबका कारण शासकीय प्रोत्साहन ही है, अन्य स्वतन्त्र देशों में अपनी चिकित्सा पद्धती अपनी राष्ट्र भाषा तथा अपनी वेशभूषा है । परन्तु हम भारतीयों का तो सब कुछ ही विदेशी है, हमारे समाज का स्वास्थ्य चाहे जैसा हो, परन्तु रुग्णों को वही औषधिया मिलेगी जो एक रोग को तो पूर्ण रूप से नष्ट करती नहीं बल्कि कई रोगों के बीज शरीर में और डाल देती है । आयुर्वेद के नाम पर आज हमारा शासक वर्ग बहुत शोर गुल करता है, कि हम ने यह कर दिया यह कर चुके तथा यह कर रहे है । परन्तु आयुर्वेद को एक ऐसे चौराहे पर खड़ा कर दिया है कि आज आयुर्वेद ही के सन्मुख जीवन मरण का प्रश्न है, उन्हे औषधी निर्माण के लिये शुद्ध चीजे नही मिलती । जो कुछ मिलती भी है उनका मूल्य आकाश को छू रहा है, इसी कारण वैद्य वर्ग भी धीरे २ अपनी औषधियों को छोड़ कर विदेशी औषधियों को अपनाता जाता है, आयुर्वेद के प्रति शासक वर्ग की उपेक्षा तथा वैद्य वर्ग का उत्साह हीन होना आदि कुछ ऐसे कारण हैं, जिनसे आयुर्वेद का भविष्य कुछ धुन्धला ही दृष्टि गोचर हो रहा है, यह बाल रोग चिकित्सा अंक आप लोगों के सहयोग आर्शीवाद व प्रोत्साहन का ही मूर्त रूप है, यह कैसा बना है, आप सब हम को न्याय संगत निर्णय दें । मैं आप लोगों के इस सहयोग व आर्शीवाद के लिये आभारी हूँ । पितृ तुल्य वैद्यरत्न श्री पं० विश्वेश्वरदयालु जी की भी आभारी हूँ, जिन्होंने माला की कुछ सेवा करने का अवसर दे कृतार्थ किया ।

निवेदिका

लेडी डा० दमयन्ती देवी त्रिवेदी
वैद्य शास्त्रिणी, वैद्यालंकार
१४८२ वजीर नगर कोटला मुबारिकपुर दिल्ली ३

बाल रोगांक की विषय-सूची

हमें दुःख है कि कई कारणों से हम पूरी सामग्री नहीं दे सके वह आगे के अङ्कों में क्रमशः पूर्ण करेंगे। प्र० सं०

शुभ कामनाएँ

उपराष्ट्रपति भारत

नई दिल्ली
अप्रेल ११, १६६६

महोदया !

आपका पत्र दिनांक ७ अप्रेल ११६६ का प्राप्त हुआ धन्यवाद ।

यह खुशी की बात है । कि आप आयुर्वेदिक मासिक पत्रिका अनुभूत योगमाला का आगामी विशेषांक "बाल रोग चिकित्सांक" नामक प्रकाशित करने जा रही हैं । मैं आपके इस अङ्क की सफलता के लिये हार्दिक शुभ कामनाएँ भेजता हूँ ।

भवदीय—
जाकिर हुसेन

GOVRNOR'S SECRETARY. स० १२१७८ । जी० एस० Governor's Comp
UTTAR PRADESH
लखनऊ
सितम्बर १४, १६६६

चीफ
UTTAR PRADESH.

महोदया.

आपके पत्र संख्या ३२२६ दिनांक मई ४ । १६६६ के संदभ में.

मुझे यह कहने का आदेश हुआ है कि आयुर्वेदिक मासिक पत्रिका का विशेषांक "बाल रोग चिकित्सा" अंक प्रकाशित होने जा रहा है ।

उक्त अङ्क की सफलता के लिये श्री राज्यपाल महोदय की शुभ कामनायें विदित हों ।

भवदीय—विभूति डे । सहायक सचिव

श्री मोहनलाल जी व्यास, स्वास्थ्य मन्त्री गुजरात

कार्यालय—स्वास्थ्य व श्रम मन्त्रालय, अहमदाबाद (गुजरात)

आयुर्वेदिक का बाल रोग विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है । यह जानकर मुझे प्रसन्नता होती है मुझे आशा है । कि इस विशेषांक मे बाल रोगों की जानकारी के साथ आयुर्वेदीय एवं परम्परागत वैद्यकीय सिद्ध उपचारों का उल्लेख भी होगा ।

विशेषांक की सफलता चाहता हूँ ।

मोहनलाल व्यास, स्वास्थ्य और श्रम मन्त्री गुजरात

७, विधान सभा मार्ग,
लखनऊ

श्रीमती जी, मई ३, १९६६

आपका २५-४-६६ का पत्र मिला। प्रसन्नता है कि आप आयुर्वेदिक मासिक पत्रिका अनुभूत योगमाला का "बाल रोग चिकित्सांक" प्रकाशित करने जा रही हैं।

स्वास्थ्य सबके लिये आवश्यक है। स्वास्थ्य रक्षा हमारा कर्तव्य है। हमें अपने जीवन की दिनचर्या और रात्रिचर्या इस प्रकार बनाना चाहिये कि हम स्वस्थ नागरिक की भांति समाज की सेवा कर सके। स्वयं स्वस्थ रहें और दूसरों के स्वस्थ रहने का कारण बनें।

बालक अबोध होते हैं। बालक बालिकाओं का स्वास्थ्य उनके माता पिता और बड़ों की देखरेख पर निर्भर करता है। बालकों की सुलभ चिकित्सा के सम्बन्ध में जानकारी देने वाले साहित्य की आवश्यकता है। माता अपने शिशुओं को किस प्रकार रखे, अपने स्वास्थ्य के साथ बालकों के स्वास्थ्य की किस प्रकार चिन्ता की जा सकती है। अपने आहार-विहार पौष्टिक भोजन, शारीरिक श्रम और आवश्यकतानुसार औषधियों के सेवन से स्वस्थ शरीर को रखते हुये बालकों की स्वास्थ्य रक्षा करना सभी पसन्द करते हैं। इस लिये यह आवश्यक है कि ऐसे साहित्य की रचना की जाय। विशेषांक के रूप में विषय के जानकार विद्वानों से सामग्री सकलन करके एक जगह प्रस्तुत करना समाजोपयोगी कार्य है। मैं इसके लिये आपको बधाई देता हूँ।

भवदीय—दरबारी लाल शर्मा

परामर्शदाता

कैम्प वहारिस्तान, सोमनजी, पेटिट रोड
कम्बाला हिल, बम्बई २६
५-५-६६

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आयुर्वेद की प्रसिद्ध पत्रिका अनुभूत योगमाला बाल रोग चिकित्सा अङ्क नामक विशेषांक निकाल रही है और इसका सम्पादन सुयोग्य विदुषी श्रीमती दमयन्ती देवी त्रिवेदी द्वारा होता है। मुझे विश्वास है, इस अङ्क में चिकित्सक वर्ग के लिये उपादेय सामग्री होगी। मैं इस सराहनीय प्रयास की पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

—शिव शर्मा

लखनऊ

आदरणीय, महोदया, २१।५।६६

आपका पत्र दिनांक १३-५-६६ प्राप्त हुआ यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आयुर्वेदिक मासिक पत्रिका अनुभूत योगमाला बरालोकपुर इटावा का बाल रोग चिकित्सा अंक आपके सम्पादन में शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है। अनुभूत योगमाला ने आयुर्वेद जगत की अच्छी सेवा की है और उसके विशेषाङ्क संग्रहनीय रहे हैं। मुझे आशा है कि पूर्व विशेषांकों की भांति यह विशेषाङ्क भी आयुर्वेद जगत् एवं सर्व साधारण के लिये उपयोगी सिद्ध होगा। सम्प्रति लेख भेजने में असमर्थ हूँ किन्तु आपके प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ।

भवदीय
श्री मुकुन्दीलाल द्विवेदी, बी० आई० एम० एस०

३।५।६६

श्रीमती अखण्ड सौभाग्यवती
डा० दमयन्ती देवी वैद्यशास्त्रिणी
की कुशलतायें दिल्ली ५

आपका कार्ड मिला धन्यवाद अनुभूत योग माला का आगामी बाल रोग चिकित्सा अङ्क निकल रहा है हर्ष की बात है हमारा वेदोक्त आशीर्वाद है कि आपके विशेष सम्पादकत्व में यह अंक सर्वाङ्ग पूर्ण निकले और प्रजा के बच्चों का कल्याण हो और माला के श्रीसम्पादक जी को और आप विशेष संम्पादिका जी को सहस्रशः बालकों का आशीर्वाद मिले। मैं गुजरात सरकार ने बनवाई हुई आयुर्वेद फार्माकोपिया—भेषज संहिता के संशोधन के काम में व्यस्त रहने से इस अंक के लिये लेख भेजने में निरुपाय हूँ।

पुनः हमारा वेदोक्त आशीर्वाद है आप इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करे।

शुभाकांक्षी
अखण्ड भूमण्डलाचार्य अनन्त श्री विभूषित
भुवनेश्वरीपीठाधीश जगद्गुरु आचार्य
श्री चरणतीर्थ महाराजः।

सम्मति पत्र

श्रीनिवास पार्क कानपुर
२१-१-६७

अनुभूत योगमाला आफिस, बरालोकपुर (इटावा) ने १९६७ ई० नूतन वर्ष का अपना बाल रोगांक विशेषांक प्रकाशित कर भारतीय जनता एवं देश का बड़ा उपकार किया है। यह विशेषांक भारत ही नहीं वरन जितने भी देश हैं अर्थात् भारत से बाहर देश वाले भी इस अपूर्व विशेषांक से लाभ उठा सकते हैं। और बालकों पर आये दिन जो अनेकों व्याधियां ग्रह बाधायें आदि जन्म काल से ही घेरती हैं जिनके कारण प्रसूतागार में ही सैकड़ों बच्चे काल के गाल में चले जाते हैं। उनको बचाने में सुरक्षा में समर्थ हो सकते हैं।

प्रति वर्ष वैद्यराज श्री विश्वेश्वर दयालु जी सहस्रों मुद्रा की क्षति उठाकर इस प्रकार के विशेषांक प्रकाशित कर आयुर्वेद शास्त्र एवं चिकित्सा के द्वारा केवल जन कल्याण निष्काम सेवा में संलग्न हैं।

इस अनुभूत योगमाला पत्रिका की अब अर्ध शताब्दी होने का समय भी समीप है। और वैद्यराजजी उत्साह पूर्वक अपने कार्यमें निःस्वार्थ भावना से संलग्न है। यह आपके आयुर्वेद के प्रति उत्साह का ही फल है कि माला प्रति मास यथा समय पर प्रकाशित होती रहती है। आशा है कि माला की ज्योति इसी प्रकार सदैव प्रज्वलित होती रहेगी। इस सफलता के लिये मैं इस विशेषांक की सम्पादिका श्री दमयन्ती देवी त्रिवेदी देहली तथा आ० म० म० पं० विश्वेश्वर दयालु जी वैद्यराज को हार्दिक बधाई देता हुआ माला के प्रति शुभकामना प्रगट करता हूँ।

शम्भूनाथ पाण्डेय शास्त्री

देश के भाग्य विधाता "बालक"

बालक ही सभी देशों के मूल कारण और भाग्य विधाता हैं यह कहना अतिशयोक्ति न

होगा। यदि किसी भी देश को सुख समृद्धिशाली बनाना है तो उस देशके बालक आरोग्य (स्वस्थ) तथा होनहार होना आवश्यक है। वहीं से हमारी मूल भित्ति प्रारम्भ होती है और माता पिता का प्रभाव बालक पर अवश्य होता है। यदि माता पिता पूर्ण आरोग्य सदाचारी तथा उन्नतिशील हैं तो सन्तान अवश्य ऐसी ही होगी और शिशु के जन्म देने के बाद जैसी शिक्षा दीक्षा होगी उसका प्रभाव बालक पर अवश्य ही होगा।

बालक को होनहार तथा 'देशरत्न" बनाना माता पिता का बहुत बड़ा कर्तव्य है। केवल जन्म देने के बाद ही माता पिता का धर्म नहीं समाप्त हो जाता। जब तक यह समर्थ बालक सुयोग्य, शिक्षित तथा स्वयं उपयोगी न बन जावें तब तक उसके साथ कर्तव्य का पालन करना चाहिये। यदि केवल एक ही गुणी पुत्र है तो समस्त कुल का दीपक होता है। जिस प्रकार चन्द्रमा सारे जगत को प्रकाशित करता है और हजारों तारागण केवल टिमटिमाते रहते हैं। उसी प्रकार चन्द्रमा के सदृश सुयोग्य बालकों का निर्माण माता पिता के आधीन है। बहुत से माता पिता इस बिधिको नहीं जानते हैं कि किस प्रकार योग्य बालकों का जन्म दिया जावे उनके लियेयह 'बाल रोगांक' (माला) का विशेषांक बहुत ही उपयोगी होगा, और बालकों को प्रारम्भ से ही लेकर बहुत समय तक उसे व्याधियां घेरे रहती है उनके लिये भी यह विशेषांक एक प्रकार का गृहस्थी का आभूषण होगा। शास्त्रों में लिखा है कि बालक पर प्यार ५ वर्ष तक करे और फिर ५ वर्ष तक शनैः शनैः ताड़ना देकर उत्तम मार्ग सदाचार तथा अपनी संस्कृति की ओर, और विद्याध्ययन की ओर प्रवृत्त करावे। इसके बाद जब वह अध्ययन समाप्त कर पूर्ण समर्थ हो जाय और ब्रह्मचर्य पूर्वक अपनी विचार क्रिया कुशलता का उपार्जन करले तब सुयोग्य कन्या के साथ संस्कार कर देवे। और उत्तम जीविका साधन में संलग्न कर उसके प्रति माता पिता मित्रवत व्यवहार करें, अर्थात् गृह सम्बन्धी सब कार्यों मे उसकी सम्मति प्राप्त करले और जब वह बालक सर्वथा योग्य हो जावे तब समस्त भार उसे देकर माता पिता वाणप्रस्थ तथा सन्यास की ओर प्रवृत हो यही उत्तम विधान है। इस समय देश का इतना वातावरण दूषित है कि प्रत्येक बालक अपने माता पिता तथा गुरू (शिक्षक) के अनुशासन मे रहना उचित नही समझता और अनेकों प्रकार के ओपव व्यापार मे संलग्न रहता है! उसी का परिणाम है कि देश अधोगति को प्राप्त हो रहा है देश को सुयोग्य बनाने के लिये उत्तम बालक तैयार करना है यही देश की आधार शिला है।

वैद्य श्री शम्भुनाथ पांडेय शास्त्री, प्रधानाध्यापक
श्री आयुर्वेद महाविद्यालय (कानपुर)

विषयाऽनुक्रमणिका

श्री धन्वन्तरये नमः

वर्ष ४५ } बरालोकपुर, ३० जनवरी सन् १९६७ { अङ्क १

"बालक"

रचयिता

प्रधान सम्पादक—

वालक ही निज देश जाति की उन्नत करते।
देश हेतु बलिदान सदा ही शिशु जन करते॥
आविष्कारोंको कर२ के वे देश सुरक्षा को हैंकरते
विद्वत्तावलशौर्य चमत्कृत निज सुदेश को हैं करते
बालक ही सब भाति देश के परम सहायक।
है भविष्य का बोझ इन्ही के भाल एकायक॥
इनका रक्षण भार वैद्य वृन्दों शिर आया।
इसी हेतु यह बाल अंक सम्मुख है आया॥
बालक रक्षण करो यही कर्तव्य बड़ा है।
प्रस्तुत करने हेतु किया श्रम अधिक कड़ा है॥
वैद्य वृन्द ने हृदय कुलप को तोड निकाले।
करो परीक्षण सभी जाय शिशु रोग निकाले॥

बा

प्रधान सम्पादक **बालक** प० विश्वेश्वरदयालु वैद्य

क

बालक, सुत, पुत्र, तनय, आत्मज नाम वाले हमारी होनहार सन्तान है इन्हीं पर हमारी कुल परम्परा और देश के भविष्य का भार है। इसके पैदा करने, पोषण करने, शिक्षण और संरक्षण का भार हमारे जिम्मे है। हम इन विषयों से कितनी दूर है, यह सभी को जानने की मुख्य बात है। हम इस विषय मे कितने उदासीन हैं उसका परिणाम हमारे सामने है।

१—गर्भाधान संस्कार है-गर्भाधान समय—दम्पति की मनोकामना और शुद्ध संकल्प कैसा होना चाहिये। हम यौवन की तरंगो में इतने मस्त हो गर्भाधान करते हैं कि कोई भी इच्छा और संस्कार हमारे पास न होकर केवल विलास मात्र ही, विषय लोलुपता से विषयाग्नि में अपना सर्वस्व अर्पण कर अपने जीवन की ब्रह्मचर्य मूल को आहुति दे निर्बल बुद्धरहित हो बैठते हैं और बार २ गर्भाधान होने से स्त्री भी कमजोर हो जाती है, इस प्रकार दम्पति कमजोर भीरु हो जाते हैं, और कामज सन्तान कामुक हो होती है। विषय लोलुपता सम्बन्धित सन्तान भी विषयी होती है और बहू का मुख देख उसी पर सर्वस्व अर्पण कर कर माता पिता, भाईबन्धु, परिवार से नाता तोड़ बैठते हैं। और विषयी प्रवृत्ति वाले सभी जघन्य कार्य करने पर उतारू होते हैं। यही कारण है कि आज का परिवार संतान सुख से वञ्चित हो नारकीय यातनायें भोग कर रहा है। इसमें दोष सन्तान का नहीं सच पूछो तो हमारा ही है। जैसा बीज बोया है वैसा ही फल सामने है। पुन्नामनरकात्त्रायते पुत्रः। पुत्र नरक (दुःख) से रक्षा करने वाला होता है। परन्तु अब आप पुत्र पैदा करते कहां हैं। अब तो आप लड़के पैदा करते हैं। लड़के शब्द पर ध्यान दें लड़ (लड़ाई) के (कर) अब तो लड़ के लड़के काम करने कराने वाले होते हैं। खाना—लड़के, पीना, पहिनना, रहना सभी लड़के करने वाले होते हैं।

हम अपने कर्तव्य से च्युत होकर (ब्रह्मचर्य खोकर) निर्बलहो तरह २ के रोगों के शिकारहो जीवन को दुःखमय बना लेते हैं। भरे पेट मैथुन करने से, अम्लपित्त, अधिक मैथुन से, मस्तिष्कायविकार उन्माद अपस्मार, राजयक्ष्मा बुद्धि नाश, क्लैब्य, प्रमेह (स्वप्नदोष) कब्ज के शिकार होते हैं।

रात्रि जागरण से—जुकाम, नजला, खांसी, दमा के मारे हैरान रहते हैं। गर्भावस्था में मैथुन करने से—गर्भस्राव, गर्भपात, तालुकटक आदि रोगों वाली विकृतांग सन्तान पैदा करते हैं। मातायें भी इसमें सहायक होती हैं। चक्की पीसते समय बच्चों को गोदी में लिटाये रहती हैं इससे चक्की की गर्द गुबार से जुकाम खांसी होती है। इसी तरह चूल्हा या पसीना निकलने वाले मैथुन कार्यों को कर शीघ्र दूध पिलाने से सूखा, हरे दस्त, दस्त, दूध पटकना आदि अनेक रोग जो पेट एवं मस्तिष्कसे सम्बन्धित है होतेहैं।

नेत्र रोग रोहा—अहिपूतना आदि माता की असावधानी से ही होते हैं, इसी से ५ मास गर्भावस्था से लेकर एक वर्ष का बालक होने तक स्त्रीप्रसंग वर्जित है। पर करे कौन विषय लोलुपता से आज अपना और सन्तान का कितना बड़ा ह्रास है। और अधिक सन्तान वृद्धि भी दूध पोषकतत्व, कपड़े, पढ़ाई के खर्च, विवाह शादी के कारण मानसिक सन्तापके कारण बनते हैं। सैकड़ों कुटुम्ब कर्जदार जायदाद बेच तबाह हो दर २ मारे फिरते देखे गये हैं। कब, कितने दिन बाद सतान पैदा करनी चाहिये। हकीम सुकरात की स्त्री ने जब उनका बच्चा १२ साल का हो गया, तब स्त्री ने अपने लड़के से कहलाया कि अब्बा से कहो हमें दूसरा भाई दो, सुकरात ने कहा १२ वर्ष हो गये अभी वह घाव पूरा नहीं हुआ, समय आने पर १६ वर्ष बाद पुनः भाई पैदा हो सकेगा। सोचो और विचारो अब क्या दशा है। हमारे कुछ भाई तो छटी के दिन ही नहीं चूकते हैं। आज यह विषयी सन्तान देश का भारभूत हो रहा है। सन्तति निरोध वगैरह इसी के कारण सरकार विवश हो चला रही है। अतः संयम सीखो, पुत्र पैदा करो लड़के नहीं।

इसी लिये इस विशेषांक को जन्म दिया गया है कि संतानों की रक्षा हो उनके रोग दूर हो हृष्टपुष्ट बलशाली हो और पूर्व की भांति वीर विद्वान हो जगत में नाम पैदा करें। और भारत की रक्षा करने में समर्थ हो, आज संघर्ष का काल है संघर्ष में प्रमुख होने वाली विजय शाली सन्तानें भारत की अपेक्षित हैं, आप भी बल शाली हो अपने देश की अपने परिवार की अपनी, औरतों, लड़की बहिन, भौजाई, और देश की अबलाओं की रक्षा कर सकने में समर्थ हो, यह सभी कार्य ब्रह्मचर्य से ही होने वाले हैं ब्रह्मचारी ही, वीर, बुद्धिमान सभा में संग्राम में शूरता दिखा सकता है विषयी सदा एकान्त में रहना पसन्द करता है, नित्य नूतन शृंगारों की तरफ ध्यान रखता है परन्तु सुन्दरता वीर्य रक्षण से होती है केवल तेल, स्नो, बनावटी उपकरण झुर्रियां नहीं मिटा सकता, सुन्दरता नहीं ला सकता, सुन्दरता मांस से परिपूर्णता, कोमलता, चिक्कणता, मादकता, और रक्तता ही से होता है यह सभी वीर्य रक्षण से ही होती है, शब्द माधुर्य स्वर वैखरता, ऐश्वर्य, तेज, ब्रह्मचर्य की निसानी है, चन्द्रमा रूपी एक पुत्र रात्रि अंधकार को दूर करने में समर्थ होता है सैकड़ों तारागण नहीं, एक सूर्य अपनी शूरता से तारागणों का विलुप्त करता है और अपार तेज विकीर्ण करता है, अतः एक शूर संग्राममें सैकड़ों कायरों को दमन कर नष्ट कर देता है तेज कान्ति बल, सौन्दर्य रहित कुछ भी नहीं कर सकता, शेर का एक पुत्र, गिजाई के सैंकड़ों बच्चों से अच्छा है और शेर ही पुत्रवान कहलाने का अधिकारी है।

बच्चों का लालन पालन

बच्चों को दूध पिलाना

वि० म० लेखिका लेडी डा० दमयन्ती त्रिवेदी वय शास्त्रिणी वैद्यालंकार

नये जन्मे हुए बच्चे के लिये सब से अधिक शीघ्र पचने वाला, पोषण करने वाला, स्वास्थ्य प्रद तथा प्रकृति का दिया हुआ जो भोजन है, वह है माता का दूध। इसकी बराबरी संसार का कोई भी भोजन नहीं कर सकता, जन्म लेने से पहले बच्चे का पोषण माता के रक्त से होता है, और उसके जन्म के समय प्रकृति उसकी माता की छातियों में दूध के रूप में उसके लिये भोजन तैयार करती है। जो चीजें बच्चे के पोषण के लिये आवश्यक हैं वह सभी चीजें बच्चेको इस दूध में होती है, तथा यह दूध बच्चे का पाचन शक्ति के भी अनुकूल होता है अतः माता का स्वास्थ्य ठीक है, तो बच्चे को लगभग एक वर्ष तक अपनी छातियों का ही दूध पिलना चाहिये, अगर ऐसा न हो सके माँ नाजुक प्रकृति की हो तथा एक सवा वर्ष दूध न पिला सके तो कम से कम चार पांच मास ता जरूर ही दूध पिलाना चाहिये, क्योंकि इस अवस्था में बच्चा और किसी प्रकार का भोजन पचा ही नहीं सकता। बहुत से बच्चे जन्म लेने के बाद कुछ ही सप्ताहों में केवल इसी लिये मृत्यु को प्राप्त होते हैं, कि उन्हें इसी बीच में अस्वाभाविक भोजन देकर उनकी पाचक शक्ति बिगाड़ दी जाती है।

अगर आरम्भ में कम से कम दो तीन मास तक भी बच्चे को छाती से दूध पिलाया जावे। तो वह जीवन के मार्ग पर बहुत अच्छी तरह चल पड़ता है जो बच्चे बहुत कम जोर व नाजुक हों तथा ऐसे माता पिता से उत्पन्न हो जो कि उपदंश तथा उष्ण वात से पीड़ित रहे हों, छातियों का दूध पिलाने से उनके जीने की सम्भावना बहुत कुछ बढ़ जाती है।

(२) अतः जबतक कोई बहुत बड़ा कारण न हो तब तक छातियों के दूध के अतिरिक्त अन्य कोई भोजन नहीं देना चाहिये। जिन बच्चों को छोटी अवस्था में तथा आरम्भ में माँ का दूध नहीं मिलता वह प्रायः मर जाते हैं। उनसे जो बच्चे किसी प्रकार बच भी जाते हैं। वह हमेशा कुछ न कुछ रुग्ण ही रहते हैं। उनकी पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। और इस प्रकार जब एक बार उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। वह सहज ही बहुत सी बीमारियों के शिकार हो जाते हैं, जिन बच्चों को आरम्भ में ही माँ के दूध की अपेक्षा और कोई भोजन दिया जाता है। उन्हें प्रायः अतिसार, वमन आने लगते हैं, शोष रोग हो जाता है। नींद नहीं आती उदर में वायु के कारण गुड़गुड़ाहट होने लगती है।

बच्चे का जन्म व दूध

जन्म के बाद बच्चे के शरीर को अच्छी प्रकार साफ करके उसे स्नान कराकर वस्त्र में लपेट कर उसे माँ के पास हो बिस्तर पर लिटा देना चाहिये। क्योंकि जन्म होने के समय बच्चे के शरीर पर बहुत कुछ जोर व दबाव पहुचता है। इस लिये उसे इस समय और सब बातों से बढ़ कर विश्राम की अधिक आवश्यकता होती है, जो इस समय दूध नही पिलाना चाहिये।

वह जितना सो सके उसे उतना सोने देना चाहिये। अधिकांश अवस्थाओं मे बच्चे को छः से बारह घन्टे तक किसी प्रकार के भोजन की आवश्यकता नहीं होती। हां अगर बच्चा इससे पहले ही कुछ बेचैन हो तथा चिल्लाने लगे तो पहले उसे एक चावल का आठवा भाग स्वर्ण भस्म जरा से शहद मे मिला कर दे, अगर स्वर्ण भस्म न हो तो जरा से स्वर्ण को शहद में रगड़ कर दे।

जन्म के दिन दूध पिलाना

छातियों को खूब अच्छी तरह धोकर और साफ करके सुखा लेना चाहिये। जब तक बच्चे को जन्म लिये छः से बारह घन्टे न बीत जांय तब तक उसके मुँह मे स्तन नही देना चाहिये, छातियों से जो दूध सबसे पहले निकलता है। उसमे कुछ रेचक गुण होता है, जिसका प्रभाव बच्चे की आन्तों पर बहुत अच्छा पड़ता है, रेचन गुण के कारण ही बच्चे का गहरे हरे से रंग के दो तीन दस्त आ जाते हैं। इससे बच्चे के उदर की गन्दगी बाहर निकल जाती है।

अगर बच्चे को जन्म से चौबीस घन्टों के अन्दर कोई मल त्याग न हो तो आठ दस बूंद रेंडी का तेल अथवा इतना ही जैतून का तेल गरम जल मे मिलाकर पिलावें। तथा रेंडी का तेल उदर पर भी लगावे। इस प्रकार करने से एक दो दस्त हो जाते हैं।

इसके बाद बारह घन्टों मे दो बार अर्थात् छः छः घन्टे बाद बच्चे को दूध पिलाना चाहिये। पहले चौबीस घन्टों में बच्चे का छातियों का चूसना या न चूसना उसकी दूध पीने की इच्छा पर निर्भर करता है। यदि छातियों मे दूध होगा और बच्चे को आवश्यकता होगी तो वह पी लेगा नहीं तो छोड़ देगा, यह नियम है। कि उस अवसर पर बहुत जोर से चूसने पर भी बहुत ही थोड़ा दूध निकलता है। यदि छातियों में दूध न हो तो भी जोर लगाकर चूसने से बच्चे का कोई हानि नहीं होती वैसे ही पहले चौबीस घन्टों मे बच्चों को प्रायः कुछ भी दूध नहीं मिलता ऐसे अवसर पर पास पड़ोस की स्त्रियों के कहने पर भी बच्चे को ऊपर का पाडी गाय इत्यादि का दूध नहीं देना चाहिये। क्यों कि ऐसा करने से बच्चे की पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। तथा बच्चा रुग्ण ही रहने लगता है।

नोट—जन्म लेने के समय से छः और बारह घन्टे के अन्दर केवल एक बार दूध पिलाना चाहिये। इसके बाद छः छः घंटे बाद दूध पिलावे।

जो स्त्रिया पहले पहल प्रसूता होती हैं। उनकी छातियों मे प्रायः दो तीन दिन तक कुछ भी दूध नहीं होता और कभी कभी २ तो ऐसा

होता है। कि पाँच छः दिन के बाद ही दूध ठीक प्रकार से उतरने लगता है। ऐसे अवसर पर माता को चिन्तातुर नहीं होना चाहिये चिन्ता करने से तो दूध का प्रवाह और भी रुकेगा और उसके उतरने में और भी देर होगी। ऐसे अवसर पर माता को चाहिये कि दो-दो घन्टे के बाद बच्चे के मुख मे छाती दे। इस प्रकार बच्चे के चूसने से ही दूध का ठीक-ठीक प्रवाह आरम्भ हो जावेगा।

(४) बहुत सी माताओं में बड़ी नासमझी होती है। यह बच्चा जब चुपचाप व शान्त रहता है। उस समय भी बच्चे को भूखा समझ कर पानी मिला गौ का दूध पिला देती हैं। परन्तु ऐसा नही करना चाहिये क्यों कि जो बच्चा दूध न पीना चाहता हो उसे यदि जबरदस्ती दूध पिला दिया जायगा तो फिर वह शौक से छातियों को नहीं चूसेगा—जिस शौक से भूखा रहते हुये चूसा करता है। इसी कारण छातियों पर वह दबाव भी नहीं पड़ेगा दूध उतरने के लिये जिसकी आवश्यकता होती है।

बच्चे को थोड़ा सा दूध पिलाकर हटा देना तथा फिर थोड़ी देर मे थोड़ा पिला देना भी नासमझी है। इससे बच्चे के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

अतः छातियों मे दूध उतरने के लिये लगातार प्रयास करते रहना चाहिये। २-२ घन्टे के बाद बच्चे के मुख मे छाती देनी चाहिये। सचमुच छातियों से दूध उतारने के लिये धैर्य व समझदारी की बहुत आवश्यकता है।

इतना सब कुछ करने पर भी पर्याप्त दूध न उतरे और बच्चा बेचैन दिखाई दे तो थोड़ा सा पानी उबाल कर ठंडा करके उसमें थोड़ी सी चीनी मिला कर ४-४ घण्टे पर चार से पांच छोटे चम्मच यह पानी बहुत होगा इससे ज्यादा मात्रा में यह पानी नहीं देना चाहिये। क्यों कि अगर हमने पानी से ही बच्चे का पेट भर दिया तो फिर बच्चे को छाती चूसने की इच्छा नहीं रह जावेगी, इसी प्रकार धैर्य पूर्वक ठीक समय पर बच्चे के मुख मे छाती देते रहना चाहिये। इस प्रकार बिना किसी विशेष कठिनाई के पांचवें छठे दिन अधिकांश स्त्रियों की छाती में इतना दूध उतरने लगता है। जो बच्चे की आवश्यकता के लिये बहुत होता है।

यदि बच्चा बेचैन हो तथा मीठा पानी देने से भी चुप न होता हो तो गौ के दूध मे पानी मिलाकर दो से चार छोटे चम्मच भर देना चाहिये। इससे अधिक मात्रा मे दूध व पानी न दें। क्यों कि अधिक मात्रा मे देने से बच्चे को पाचन शक्ति शीघ्र बिगड़ जाने का भय रहता है।

बच्चों को दूध पिलाने का ढंग

बच्चे को दूध पिलाते समय माता को यह ध्यान रखना चाहिये। कि बच्चे को दूध पीते समय किसी प्रकार की बाधा न पड़े। बच्चे को दूध पिलाने के समय प्रायः होता यह है। कि उसकी नाक छाती से लग कर इस प्रकार दब जाती है। कि वह अपने नथनों से ठीक तरह से श्वास नहीं ले सकता। उसके मुख में तो छाती की घुंडी रहती है। इस लिये वह मुख के रास्ते

भी श्वास नहीं ले सकता। बच्चा थोड़ी देर दूध पीता है, और फिर श्वांस लेने के लिये रुक जाता है। इस तरह वह बिना पूरा तरह पेट भरे थोड़ी देर में ही थक जाता है। यह ढंग बहुत ही दोषपूर्ण है। क्यों कि या तो बच्चा थोड़ी देर में ही बहुत सा दूध पी लेता है और बाद में अवश्य ही कैं करने लगता है और या इतना कम दूध पी पाता है कि वह उसके पोषण के लिये पूरा नहीं होता। इसका परिणाम यह होता है, कि बच्चे का विकास अपेक्षाकृत बहुत ही कम होता है और वह दिन प्रति दिन दुबला होने लगता है। अतः माताओं को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। और दूध पिलाने की कला को ध्यान पूर्वक सीखना चाहिये।

माता को सदा बैठकर बच्चे को दूध पिलाना चाहिये। घुटना कुछ ऊपर उठाकर उस पर बांया हाथ टेक देना चाहिये। और उसी बायें हाथ से बच्चे का शिर पकड़ रखना चाहिये। दाहिने हाथ से छाती पकड़ रखनी चाहिये। और इस प्रकार पकड़नी चाहिये कि जिसमें अंगूठा उसके ऊपरी तल पर रहे। इस प्रकार अंगूठा रखने से छाती बच्चे के मुख से कुछ दूर रहती है। इस प्रकार बच्चे की नाक पर दबाव नहीं पड़ता बच्चा आनन्द पूर्वक श्वांस लेता हुआ दूध पी लेता है।

अधिक दूध पिलाना

जब जरा से रोने चिल्लाने पर बच्चे के मुख में छाती लगाई जाती है। उसका फल यह होता है कि बच्चों के उदर में पचा हुआ वह बिना पचा दोनों प्रकार का दुग्ध मिल जाता है। तथा दूध अधिक भी हो जाता है। अतः बच्चा फालतू दूध को कै करके बाहर निकालने का यत्न करता है आरम्भ के तीन चार मास तो यह बात देखने में नही आती—परन्तु जब वह पांच मास का हो जाता है, तो यह बात अक्सर देखने मे आती है माताये इस लक्षण पर ध्यान नहीं देती वल्कि बच्चे को उसी प्रकार दूध पिलाती जाती हैं। जिस कारण बच्चे को दस्त आने लगते हैं। इतने पर भी माता का ध्यान इधर नहीं जाता और वह उसी प्रकार उसे दूध पिलाते चली जाती है। इस प्रकार बच्चे की भूख कम हो जाती है। होता यह है। कि माता बच्चे को दूध पिलाना चाहती है, परन्तु बच्चा नहीं पीता। होता यह है, कि एक ओर भूख न लगने तथा दूसरी ओर कै और दस्त होने से बच्चा दिन प्रति दिन कमजोर होता जाता है।

इसी प्रकार जब बच्चे रात्रि को अपनी माता के पास सोते हैं। उन्हें रात्रि के समय में भी बार बार दूध पीने को मिल जाता हैं। इस प्रकार उनका पेट भी आवश्यकता से अधिक भर जाता है। इस प्रकार भी बच्चा रुग्ण रहने लगता है। ऐसे बच्चों को माता से अलग ही सुलाये तथा समयानुसार ही दूध दे। इस प्रकार दो चार रोज ही माता को कष्ट होगा। इस प्रकार बच्चे को आराम से सोने की तथा दूध पीने की आदत बन जाती है।

अधिक दूध पी जाने का इलाज

ज्यों ही यह देखने मे आवे कि दूध पिलाने के थोड़ी देर बाद ही बच्चा कै कर देता है अथवा बार बार दस्त आते है। तो माता को समझ

लेना चाहिये कि बच्चे को अधिक दूध पिला दिया गया है। ऐसी अवस्था में उबाल कर ठंडा किया हुआ पानी दो से चार छोटे चम्मच देना चाहिये तथा दिन में चार चार घन्टे बाद, रात में छः छः घन्टे बाद दूध पिलाना चाहिये मतलब यह है कि हमेशा बच्चे को नियमित समय पर दूध पिलाना चाहिये।

कम दूध पीने वाले बच्चों की पहचान

जिन बच्चों को छाती से पूरा दूध नहीं मिलता वह तौल में नही बढ़ता और यदि बढ़ता भी है, तो अपेक्षाकृत बहुत कम बढ़ता है, वह स्वस्थ बच्चों की तरह मोटा ताजा नही होता उसकी त्वचा के नीचे चरबी बहुत नही होती उसे दिन भर में अधिक से अधिक दो बार दस्त होता है, तथा उसका रंग भी जैसा होना चाहिये वैसा नहीं होता उसे मूत्र अपेक्षाकृत कम आता है, तथा कपड़े पर उसका धब्बा पड़ जाता है। ऐसे बच्चे इतने अशक्त जान पड़ते हैं, कि मानो ठीक समय से पहले ही उत्पन्न हुये हो वह हमेशा छाती से लगे रहते हैं। उनका पेट कभी नहीं भरता वह थोड़ी २ देर में दूध पीना चाहते हैं, जब दूध से हटाओ तो चिल्लाने लगता है।

बच्चे की माता का भोजन

बच्चे वाली स्त्री को विशेषकर उस अवस्था में जब की बच्चा दूध पीता हो अपने भोजन पर विशेष ध्यान देना चाहिये। उसे सदा ध्यान रखना चाहिये कि छातियों में से दूधके निकलने के साथ ही साथ दिन प्रति दिन शरीर क्षीण होता जाता है। और उस कमी को पूरा करने के लिये अच्छे पोषक की आवश्यकता है। भोजन हलका व पौष्टिक होना चाहिये उसमें तरल पदार्थ भी होने चाहिये टिमाटर, प्याज आलू, मटर, लोकिया, मूली, शलजम, के खाने से माता व बच्चे दोनों के पेट में वायुका विकार हो जाता है। अतः अगर यह खानी पड़े तो कभी २ व कम मात्रा में खानी चाहिये बहुत अधिक ममालेदार चीजे व अधिक मीठी चीज भी नही लेनी चाहिये। चाय भी लें तो बहुत कम।

माताओं का चिन्ता, शोक, दुख क्लेश, इत्यादि से भी दूर रहना चाहिये बच्चे के स्वास्थ्य पर इनका भी प्रभाव पड़ता है, सदा नियमित और अकृत्रिम जीवन व्यतीत करना, प्रसन्न रहना और सब प्रकार की मानसिक चिन्ता तथा बेचैनी से बचने में ही बच्चे का स्वास्थ्य निहित है।

बच्चे का दूध छुड़ाना

वैसे हमारे देश में लगभग एक वर्ष तक बच्चे को छाती का दूध पिलाया जाता है, परन्तु कई माताऐं तीन व साढ़े तीन वर्ष तक भी छाती का दूध पिलाती रहती है, परन्तु यह एक वर्ष के बाद दूध पिलाते रहना ठीक नही है। क्योंकि एक वर्ष के बच्चों को जिन पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। वह माता के दूध में नही होते, दूध छुड़ाते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखे, कि माता व बच्चे दोनों का ही स्वास्थ्य ठीक रहे। इसी कारण दूध अचानक व एक दम नही छुड़ाना चाहिये। यदि एक दम

छुड़ाया जावेगा तो इसका प्रभाव बच्चे व माता के स्वास्थ्य पर अवश्य पड़ेगा बच्चा एक दम अल्प भोजन लेने से रुग्ण हो जावेगा तथा माता के स्तनों की स्वाभाविक क्रिया अचानक बन्द हो जाने से अवश्य ही बहुत कष्ट होगा।

दूध छुड़ाने का समय

यदि माता का स्वास्थ्य ठीक न जान पड़े माता रुग्ण हो अथवा माता गर्भवती हो, बच्चा दूध पीते समय यदि माता की छातियों की घुण्डियो को अपने दान्तों से काटता हो अथवा नित्य समयानुसार दूध पिलाते रहने पर भी बच्चा तौल में न बढ़े तो ऐसी अवस्थाओं मे दूध पिलाना छुड़ा देना चाहिये।

इन अवस्थाओं में दूध न छुड़ावे

गर्मी के दिनों मे अथवा बच्चा किसी बीमारी से अच्छा हुआ हो इस कारण कमजोर हो अथवा बच्चे के दांत निकल रहे हो ऐसी अवस्था मे माता का दूध नहीं छुड़ाना चाहिये क्योंकि ऐसी अवस्थाओं मे ऊपरी दूध पिलाने से बच्चे के रुग्ण होने का भय रहता है।

दूध छुड़ाने का उपाय

दूध छुड़ाने से दस पन्द्रह दिन पहले से माता अपने दूध के साथ २ ऊपरी गाय, बकरी अथवा भैंस का दूध हलका करके देना शुरू करे। ऊपरी दूध मे सौंफ को जल मे उबाल कर थोड़ा वह सौंफ वाला जल मिला देने से अच्छा रहता है।

बच्चे का दूध छुड़ाने के लिये। माता को चाहिये वह अपनी छातियों मे रसौत इत्यादि कुछ कड़वी चीज लगावे। तथा ऐसा प्रयत्न करे जिससे छातियों मे और दुग्ध न आवे। इसके लिये उन्हे छातियों पर कस कर पट्टी बांध लेनी चाहिये। तथा मुलायम हाथों से दबाकर छाती का दुग्ध निकाल देना चाहिये। ऐसा करने से यह कष्ट व कठिनाई दो तीन दिन मे दुर हो जावेगी।

दूध छुड़ाने के बाद बच्चे का भोजन

दूध छुड़ाने के बाद बच्चे को गाय का दूध दे, परन्तु माता के व गाय के दूध मे काफी अन्तर है। माता के व गाय के दूध मे पानी समान ही होता है। चरबियां माता के दूध से गाय के दूध की अपेक्षा कुछ अधिक होती है। परन्तु गाय के दूध मे जो चरबिया होती हैं, वह कुछ भारी होती है। अतः गाय के दूध को बच्चे के लिये उपयोगी बनाने के लिये उसमें कुछ पानी मिलावे

प्रोटीन—यह गाय के दूध मे माता के दूध की अपेक्षा दुगनी है। अतः गाय के दूध मे इस कारण भी पानी मिलाना चाहिये, नही तो बच्चे इसे पचा नही सकते।

चीनी या मिठास—माता के दूध मे गाय के दूध की अपेक्षा यह तिहाई अधिक है। गाय के दूध को माता के दूध के समान बनाने के लिये उसमें कुछ चीनी मिलाने की आवश्यकता है।

नमक यह माता के दूध से गाय के दूध मे लगभग दुगना होता है। माता के दूधमे कीटाणु नहीं होते परन्तु गाय के दूध मे कीटाणु होते है, माता का दूध खारापन लिये होता। जब कि गाय का दूध खटास लिये होता है।

प्रोटोन से बच्चों के शरीर की गठन बनती है दूध की मिठास या चीनी से मांसपेशी पुष्ट होती है। तथा अच्छे प्रकार हिलने डुलने के योग्य होते हैं। चरबियों से शरीर में गर्मी व शक्ति प्राप्त होती है, तथा स्नायुओं और मस्तिष्क का विकास भी होता है।

गाय का कच्चा दूध कभी नहीं देना चाहिये। क्यों कि उसमें क्षय, मन्थर ज्वर या अन्य रोग जनक कीटाणु न हों, दूध को इतना गरम करे कि उसमें बुलबुले न उठें। क्यों कि अगर उसे अधिक गरम करेंगे तो उसके जीवनीय तत्वों में परिवर्तन हो जाता है। और वह बच्चे के पिलाने योग नहीं रहता।

दूध की रक्षा—

गरम करने के बाद दूध को ठंडे स्थान पर रखे। विशेष कर गर्मियों में तो किसी बर्तन में ठंडा पानी भर ऐसे स्थान पर दूध को रखे। जहां मक्खियां व धूल दूध में न गिरें इसी हेतु ऊपर से मोटे वस्त्र से दूध वाले बर्तन का मुख बांध दे।

जब बच्चे को दूध पिलाना हो तभी उसमें गरम किया हुआ पानी व चीनी मिलानी चाहिये पानी मिलाना बच्चे की अवस्था पर निर्भर है। बच्चे की आयु स्वास्थ्य व पाचक क्रिया को देखते हुये ही पानी मिलाना चाहिये।

गर्मी के दिनों में अगर बार्ली वाटर यानी जौ का पानी दूध में मिलाकर दें, तो वह अच्छा रहता है। क्यों कि इसके मेल से दूध जल्दी पच जाता है। परन्तु जौ का पानी दस बारह घन्टे का रक्खा हुआ न मिलावे क्यों कि वह ज्यादा देर का रक्खा हुआ खट्टा हो जाता है।

जौ का पानी तैयार करना—

पांच ग्राम साफ जौ को लगभग चौथाई लिटर जल में उबाले जब जल आधा रह जाय तो छानकर इसे प्रयोग में लावे।

ऊपरी दूध पिलाना

पहले मातायें सिपी की सहायता से बच्चों को दूध पिलाती थी। परन्तु अब या तो चम्मच अथवा बोतल से ही दूध पिलाया जाता है।

परन्तु बोतल और चम्मच की अपेक्षा सिपीसे दूध पिलाना बहुत ही अच्छा है, क्योंकि सिपी जरा से गर्म जल से धोने से ही स्वच्छ हो जाती है, तथा दूध के मेल से इसमें किसी प्रकार का रासायनिक तथा अन्य किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता जब कि चम्मच पर अगर कलई न हो तो ज्यादा देर तक दूध में पड़े रहने से दूध को दूषित कर देता है, इसी प्रकार बोतल में देर तक दूध रखने से बोतल भी दूषित हो जाती जब तक गर्म जल से बोतल अथवा उसकी रबर की घुंडी को (निपुल) को अच्छी तरह स्वच्छ न करा दुबारा उसमें दूध भरने से वह दूध भी दूषित हो जाता है, अतः माताओं को इस ओर दूध पिलाने से पहले विशेष ध्यान देना चाहिये।

बच्चों को फलों का रस देना

एक ताजा सन्तरा लेकर उसका छिलका छील कर दबा कर उसका रस निचोड़ लेना चाहिये जितना वह रस हो उससे दुगना उबला

हुआ पानी उसमें मिलाले, और साफ मल २ के कपड़े से छान कर उसमें थोड़ी सी शक्कर मिला ले। बस यह रस तैयार है, इसी प्रकार अंगूर आम नीम्बू इत्यादि का भी रस तैयार कर सकते हैं, यह रस ४-५ मास के बच्चों को देना शुरू करना चाहिये पहले पहल यह रस एक छोटा चम्मच देना चाहिये, धीरे २ इसकी मात्रा बढ़ानी चाहिये बच्चे को जब २ दूधपिलाना हो तब २ उससे लगभग आध घन्टे पहले यह रस पिलाना चाहिये, इस प्रकार रस देने से बच्चे में स्फूर्ति आती है। तथा पाचक सस्थानों को बल मिलता है।

दूध के साथ बच्चे को और भोजन देना

जब बच्चा छः या सात मास का हो जाता है। तो अधिकांश बच्चों में पहला दांत निकलता है, जो बच्चे के कई दांत निकल आवे तब यह समझ लेना चाहिये कि बच्चा दूध के साथ ही और प्रकार के भोजन पचाने के योग्य हो रहा है, अगर बच्चा दूध पी कर ही सन्तुष्ट रहे, तो माता को कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी चाहिये, और अगर बच्चा दूध से ही सन्तुष्ट नहीं हो उसका वजन ठीक तरह से बराबर न बढ़ता हो तो उसे और प्रकार का भोजन भी दे।

थोड़ा नमक व घी डाल कर बनाई रोटी का टुकड़ा दे, इसके कुतरने से बच्चे के मसूड़े व जबड़े मजबूत होंगे इसी प्रकार सन्तरे की फांक बीज निकाल कर अथवा सेब की फांक भी दे, इस प्रकार यह तो लगभग एक वर्ष तक के बच्चे के भोजन का नियम हुआ।

इससे अधिक अवस्था के बच्चों के भोजन में भी बड़ी संभाल की आवश्यकता है. पहले पांच वर्षों में बच्चे बहुत जल्दी २ बढ़ते हैं उसकी सुस्ती व चचलता भी उन्हीं दिनों में अधिक देखने को मिलती है, अतः इस समय उनके शरीर व मानसिक विकास के लिये उपयुक्त भोजन और अच्छे पोषणतत्वों की बहुत अधिक आवश्यकता रहती है। उन्हें ताजे फल हरी तरकारियां, दाल चावल, मक्खन घी, तथा मांसाहारियों को मांस मछली अडों की जरदी इत्यादि देना चाहिये दूसरे वर्ष में अधिक तर उबली तरकारी साबूदाना दलिया फलों का रस पतली सी दाल, केला, सेब, सन्तरा, आम इत्यादि फल देने चाहिये, दो वर्ष के बाद रोटी दाल सब्जी दूध दही घी मक्खन फल इत्यादि दे, इसी प्रकार बच्चा ज्यों२ बढ़ता जावे तो उसकी अवस्था के अनुसार भोजन देता रहे। बच्चे की पांच वर्ष तक की अवस्था ऐसी है, कि इन्हीं दिनों में उनकी आदतें भी बनती है, अतः ध्यान रखे बच्चों को अच्छी आदते डाली जावे खाने पीने के सम्बन्ध में उसे बुरी आदते न पड़ने पावे।

बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा

प्रायः यह देखा है। कि बच्चों को चालीस दिन का हो जाने के बाद ही प्रसूत गृह से बाहर निकालते हैं। परन्तु यह नियम शरद ऋतु में तो ठीक है। परन्तु गर्मियों में तो बच्चे को तीन सप्ताह के बाद ही मकान से बाहर लाना चाहिये क्योंकि स्वास्थ्य बनाये रखने के लिये साफ व

ताजी हवा की बहुत ही आवश्यकता होती है। प्राय. माताये शरद ऋतु मे बच्चा को इस लिये बाहर नहीं ले जाती कि कहीं उन्हें सरदी न लग जावे। परन्तु अगर बच्चा स्वस्थ और निरोग होगा, तो उस पर ताजी हवा का कोई बुरा प्रभाव नहीं पडेगा। बल्कि लाभ ही होगा। यदि बच्चा खूब साफ और ताजा हवा मे रहेगा। तो उससे न केवल फेफड़ों की ताकत मिलेगी बल्कि फेफड़ों को छोटी मोटी बीमारियां भी दूर होंगी, यह जरूर है, कि बच्चा को बाहर हवा मे रखने का समय धीरे २ बढ़ाया जाना चाहिये। पहले दिन बच्चे को दस पन्द्रह मिनट तक ही बाहर रखना चाहिये। और दूसरे दिन बीस मिनट तक इसी प्रकार बाहर रखने का समय धीरे २ बढ़ाना चाहिये। परन्तु शिशु को एक दम बाहर लाने से पहले यह अच्छा होगा कि कमरे की खिड़कियां आदि खोल कर उसे तापमान की भिन्नताओं का कुछ अभ्यास करा लिया जावे।

प्राय. मातायें बच्चे को मक्खियों आदि से बचाने के लिये। उसका मुख किसी कपड़े या रूमाल से ढक दिया करती हैं। परन्तु ऐसा करने से बच्चा की नाक व मुख तक ताजा हवा पहुँचने का मार्ग बन्द हो जाता है। जिन बच्चा को प्राय सरदी व खांसी आदि हुआ करता है। उन्हें इससे और भी हानि होती है। अतः बच्चे का मुख सदा विशेषतः जब कि वह सोया हो खुला रहना चाहिये। जिससे उसे सांस लेने के लिये ताजी व साफ हवा बराबर मिलती रहे।

बच्चा को आंधी व तेज हवा से बचाना चाहिये। यदि बच्चे को छींक या खांसी आती हो तो उसे लेकर बाहर नहीं निकालना चाहिये गरमी के दिनों मे बच्चों को सूर्य की किरणों के हानि कारक प्रभाव से बचाना चाहिये। कभीभी बच्चों की आंखों पर सूर्य की किरणें सीधी नही पड़नी देनी चाहिये। नहीं तो उनकी आंखों में लाली आ जावेगी, आंखे कमजोर होंगी तथा दुखने लगेंगी।

बच्चों का व्यायाम—

साधारणतः माता पिता यही समझते हैं, कि छोटे बच्चों को व्यायाम की कोई आवश्यकता नहीं होती, परन्तु यह धारणा गलत है। परन्तु छोटे बच्चा के शरीर के रग पट्ठों का विकास करने के लिये व्यायाम आवश्यक है। एक मास के बच्चे को तेल की मालिश कर दस से पन्द्रह मिनट तक लकड़ी के पटे पर लिटा देना चाचाहिये, फिर थोड़ी देर पेट के बल लिटाना चाहिये। दिन भर मे एक बार ऐसा अवश्य ही करें। इस प्रकार उसे पीठ के पुट्ठों को मजबूत करने का अवसर मिलेगा। यह व्यायाम छोटे बच्चों के लिये आवश्यक है। क्यों कि शरीर का बहुत कुछ विकास उसकी पीठ के पट्ठों के विकास पर ही निर्भर है।

इसी प्रकार बच्चों को हसाना, किलकारियां लगवाना भी बहुत ही लाभदायक है। इससे पेट व फेफड़ो का व्यायाम होता है। तथा फेफड़े मजबूत होते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा हो जावे तो उसे जमीन पर लिटाना चाहिये। ऐसा करने से वह रेंगना सीखेगा। तथा उसके सारे शरीर की कसरत होवेगी। अधिकतर माताय दूध पिलाने के बाद बच्चे को गोद मे लिये रहती है। परन्तु

यह ठीक नहीं, दूध पिलाने के बाद बच्चे को हमेशा लिटा दिया जाना चाहिये। इस प्रकार बच्चे लेट कर अपने हाथ पांव चलाकर दूध को शीघ्र पचा लेता है। जब बच्चा दो बरस का हो जावे तो उसे झूले पर झुलाना चाहिये—आगे पीछे होने से बच्चा प्रसन्न भी होता है। तथा उसके शरीर विशेष कर हाथों की कसरत भी हो जाती है।

बड़े बच्चों का व्यायाम

खेल कूद और मनोविनोद बच्चों के स्वास्थ्य के लिये मानो पौष्टिक औषधी के समान है।

बच्चों को नित्य नंगे पैर हल्की दौड़ लगवानी चाहिये, दौड़ धूप व उछल कूद से बच्चे प्रसन्न भी रहते हैं तथा उनका व्यायाम भी हो जाता है, अगर बच्चों को प्रातः तेल मल कर कुछ देर उछल कूद करने दें तो वह उसके शरीर के विकास में विशेष सहायक होता है; परन्तु व्यायाम ऐसा नहीं होना चाहिये, जिससे बच्चे बहुत थक जावें, किसी बच्चे का उससे बड़े अथवा बलवान बच्चे के साथ मुकाबला अथवा भिड़ने के लिये विवश नहीं करना चाहिये। क्योंकि ऐसा करने से बच्चे के शरीर पर आवश्यकता से अधिक जोर पड़ता है, जो हानिकारक है।

बच्चे के शरीर की सफाई

बच्चे का स्वास्थ्य बनाये रखने के लिये उसके शरीर की सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिये शरीर के ऊपर जो आवरण है। जिसे हम खाल कहते हैं। यह केवल शरीर का आवरण ही नहीं है, बल्कि यह सांस लेने का उतना हो अंग है जितना कि फेफड़े हैं। इसी मार्ग से शरीर की बहुत सी गन्दगी भी बाहर निकलती है, अगर वह गन्दगी अन्दर ही बन्द हो जावे, तो उससे आदमी बीमार पड़ सकता है अतः बच्चों की खाल की विशेष रूप से सफाई होनी चाहिये, उन्हें कभी गन्दे स्थान पर न सोने दें, न खेलने दें, नहीं गन्दे पानी से नहलावें तथा नहीं गन्दे कपड़े पहनावें अगर बच्चे के शरीर पर किसी कारण से कोई खरोंच लग जावे। अथवा सूजन हो जावे या फोड़ा फुन्सी आदि हो तो उनकी ओर माता को विशेष ध्यान रखना चाहिये, इन्हीं के कारण अनेक जहरीली चीजों और रोग कीटाणुओं को शरीर के अन्दर पहुँचने का मार्ग मिल जाता है। जिससे बच्चे अनेक रोगों से आक्रान्त हो जाता है।

अतः चोट खरोंच फोड़े फुन्सियों का शीघ्र उपचार करें। बच्चे को सब कपड़े निकाल कर खुली हवा में रखे जिससे उसकी त्वचा परिपक्व हो।

बच्चों का स्नान

बच्चे को स्नान कराने का पानी साफ होना चाहिये, गर्मी के दिनों में साधारण नल का अथवा किसी साफ कुंये से खींचा हुआ ताजा पानी ही बहुत अच्छा होता है, परन्तु जाड़े के दिनों में गर्म पानी का व्यवहार करना चाहिये, पानी अधिक गर्म नहीं होना चाहिये, पहले स्वयं हाथ डाल कर देख ले तभी बच्चे को स्नान करावे।

जब बच्चा अच्छी तरह नहलाया जाता है, तो उसे आनन्द आता है बच्चे को नित्य नहलाना आवश्यक है, परन्तु साथ ही इस बात का भी ध्यान रखे। कि बच्चे के स्वास्थ्य पर उसका कोई बुरा असर न पड़े, स्नान के बाद बच्चे के हाथ पैर ठंडे रहें, तो समझना चाहिये कि स्नान कराने से बच्चे की शक्ति घट रही है, और उसकी तबियत खराब होती है, ऐसी अवस्था मे शरीर की सफाई के लिये केवल स्पञ्ज का व्यवहार करना चाहिये।

नहलाते समय अधिक देर नहीं लगानी चाहिये. अगर तेज हवा चल रही हो तो उसे अन्दर कमरे मे स्नान करावे। धूप मे स्नान कराना बहुत अच्छा है, स्नान से पहले थोड़ी से बच्चे के शरीर को धूप लगने देना चाहिये फिर स्नान करावे. स्नान के बाद बच्चे का शरीर मोटे वस्त्र से पोछना चाहिये, सब से पहले शिर पोंछना चाहिये, फिर नीचे के अंग मोटे बच्चों के शरीर में अनेक स्थानों पर जोड़ा आदि पर जो शिकन होती है, वह भी अच्छी तरह साफ की जानी चाहिये। क्योंकि ऐसे ही स्थानों पर चमड़े की बीमारियां पैदा हो जाती है, अगर बहुत भुना सुहागा छिड़का जावे तो चमड़े की सूजन आदि का भय नहीं रहता।

नये जन्मे बच्चे को तब तक पूरा स्नान न करावे जब तक उसकी नाल न गिर जावे। तथा बच्चे को दूध पिलाने के उपरान्त तुरन्त ही स्नान नहीं कराना चाहिये।

बच्चा और वस्त्र—

बच्चों के वस्त्र ऋतुओं के अनुसार ही बनाने चाहिये। जैसे—गर्मी के दिनों में कपड़े हलके व पतले होने चाहिये। जाड़े के दिनों के गर्म होने चाहिये परन्तु ऐसे वस्त्र न हों कि शरीर को हवा ही न लग सके तथा शरीर की गन्दगी ही भाप के रूप मे बाहर न निकल सके। बच्चों का खाल बहुत ही कोमल होती है। अतः खुरदरे कपड़ों से उन्हें बहुत कष्ट होता है। इस लिये उनके कपड़े मुलायम व हलके होने चाहिये। जिससे के शरीर पर भार न पड़े। कपड़े तंग भी न हों जिससे बच्चों को हाथ पैर हुलाने में कोई कठिनाई न हो। क्यों कि उनके स्वास्थ्य के साथ बढ़ने फूलने के लिये उनके अंगों का स्वतन्त्रता पूर्वक हिलना डुलना बहुत आवश्यक है। कपड़े इतने लम्बे भी न हों जिसमें बालक अपने अंग उलझाले। बहुत सी मातायें इस कारण कि बच्चे को सरदी न लग जावे, बच्चे की छाती पर बहुत से वस्त्र लाद देते हैं. यह ठीक नहीं क्यों कि छाती पर दबाव पड़ने से उसका विकास नहीं होता है। कपड़े ऐसे भी नहीं होने चाहिये जिन्हें पहनने व उतारने मे कठिनाई हो। बहुत सी मातायें बच्चे के वस्त्रों मे बटनों की जगह पिन लगाती हैं। परन्तु यह ठीक नहीं है। पिन की जगह बटन या फीते ही लगावें। बटन पीछे की अपेक्षा आगे की ओर ही लगावें।

बच्चों के जूते भी बहुत समझ बूझकर पसन्द करना चाहिये। उनका पंजा चौड़ा होना चाहिये और एड़ियां नीची होनी चाहिये। परन्तु कई २ घन्टे बच्चे को जूता नहीं पहराना चाहिये। बल्कि बच्चों को नंगे पैर दौड़ाना चाहिये, इससे उसके पैरों का स्वाभाविक आकार बन जाता है।

रात के समय बच्चों को कपड़े उतार कर ही सुलाना चाहिये, अगर पहनाना ही हो तो हलका वस्त्र पहरावे। कई मातायें इस कारण बच्चे को बहुत से वस्त्र पहरा कर सुलाती हैं। कि बच्चे को सरदी न लग जावे परन्तु गलत विचार है। क्यों कि बच्चों को अधिक वस्त्रों से लाद देने से उन्हें अच्छी प्रकार नींद नहीं आती

बहुत सी मातायें सरदियों में बच्चे के शिर पर हो गरम व मोटे कपड़ों का वस्त्र पहनाती हैं परन्तु पैर नंगे रहते हैं। यह उल्टा नियम है। पैर विशेष रूप से गर्म रहने चाहिये। अत: उनके पैरों मे मोजे पहरावें और शिर को नगा रखें। अगर शिर ढकना ही हो तो ज्यादा तग व बोझल वस्त्र न ढकें।

बच्चों को नियमित रूप से मल मूत्र त्यागने की आदत डालना

जन्म लेने के बाद दो तीन दिन तक बच्चा दिन रात मे तीन या चार बार मल त्याग करता है। जन्म लेने से पहले ही बच्चे की आंतों मे जो मल जमा हो जाता है। वह इन दो तीन दिन मे निकलता है, यह मल गहरे भूरे रंग का होता है, परन्तु तीसरे या चौथे दिन मल का रंग पीला हो जाता है और केवल दिन मे दो बार मल त्याग करता है। मां का दूध पीने वाले बच्चों का मल का रग या तो नारंगी रग का होता है, या सुनहले पीले रंग का अगर मल बहुत पतला हरे रंग का जमा हुआ थक्के के रूप में हो तो माता को इस ओर ध्यान देना चाहिये, तथा अपने भोजन मे सुधार करना चाहिये।

माता को चाहिये कि वह नित्य ठीक समय पर बच्चे को मल त्यागने के लिये विवश करे। इस प्रकार नित्य करने से बच्चे की आदत बन जाती है, और वह समय पर मल त्यागने लगता है।

मूत्र के सम्बन्ध में ध्यान दें—

मल त्याग के समान ही मूत्र त्यागने की भी बच्चे को आदत डालनी चाहिये। सोने से पहले नित्य बच्चे को मूत्र करावे। इसी प्रकार अगर दिन में पांच छ: बार नित्य मूत्र करावे तो बच्चा समय पर ही मूत्र करने लगता है। माताएं अधिकतर बच्चों को लगोट बाध देती हैं। जिससे अन्य वस्त्र मूत्र से बचे रहें। अगर लगोट पर मूत्र का दाग पड़ जाता है, तो इधर ध्यान देना चाहिये। बच्चे के लगोट को थोड़ी २ देर बाद बदल देना चाहिये, क्योंकि अगर लगोट गीला हो गया हो। तो बच्चे को बहुत कष्ट होता है, बच्चे का चमड़ा बहुत नाजुक होता है. मूत्र या मल के लगने से उस जगह खुजली होने लगती है।

शय्या मूत्र

निर्बल कमजोर बच्चे प्राय. बिस्तर पर ही मूत्र कर दिया करते हैं, पर यदि बच्चों को छोटी अवस्था मे ही शिक्षा दी जाय तो फिर वे शायद ही कभी बिस्तर पर मूत्र करेंगे जो बच्चे सोये २ बिस्तर पर मूत्र कर देते हैं। उन्हें खुली हवा में कसरत करने की आवश्यकता होती है, तथा भोजन भी साधारण सादा देना चाहिये, ऐसा करने से उनकी आदत छूट जावेगी और उनका स्वास्थ्य भी सुधरेगा। कई मातायें ऐसे बच्चों को

मारती पीटती हैं, तथा डराती धमकाती परन्तु ऐसा कर वह गलती करती हैं, मारने डराने से बच्चा दुर्बल व डरपोक हो जाता है।

ऐसे बच्चों को थोड़ी मात्रा मे अगर कुछ दिन लौह भस्म सेवन कराया जावे तो बहुत अच्छा है।

बच्चे व नींद

बच्चे का जीवन गरमी भोजन व नींद पर ही निर्भर है, जन्म लेने पर दो या तीन दिनतक बच्चा आप हर समय सोते रहते हैं, और पहले सप्ताह मे चौबीस घन्टे मे लगभग बाइस घन्टे सोते रहते हैं, वह जभी उठते है जब वह भूखे तथा किसी पीड़ा से बेचैन हों, प्राय: बच्चे जभी जगते हैं, जब भूखे हों और दूध पीकर सोजाते आरम्भ के तीन महीनों में बच्चों को नित्य दिन रात में प्राय: २१ घन्टे सोना चाहिये। उसके आगे के तीन महीनों मे उन्नीस घन्टे नित्य और छ: महीने की अवस्था होने पर बच्चे को सोलह घन्टे नित्य सोना चाहिये, एक से दो वर्ष तक के बच्चे को दिन रात मे चौदह घन्टे नित्य सोना चाहिये। २ से ५ वर्ष तक के बच्चों का बारह घन्टे नित्य सोना चाहिये।

बच्चा जितना छोटा होगा उसे उतनी ही अधिक सोने की आवश्यकता होगी।

बच्चों को नींद न आना

बच्चे बहुत जल्दी और सहज सो जाते हैं। उन्हें अधिक आयु वाले आदमियों की तरह नींद की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती, जब बच्चे के साधरण जीवन क्रम मे किसी प्रकार का विघ्न पड़ता है। तभी उसे नींद न आने का रोग होता है।

नींद न आने के कारण

यदि बच्चे को समय पर दूध न दिया गया हो अथवा उसका पाचन ठीक न हुआ हो, मल मूत्र त्याग के बाद अगर उसकी सफाई न की गई हो। यदि सोने के स्थान पर बहुत गर्मी हो, या कमरे मे बहुत उजाला हो तब भी बच्चे को नींद नहीं आती। जिस कमरे मे बच्चा सोता है यदि उसमें बहुत से आदमी मिल कर बात चीत करे तब भी बालक को नींद नहीं आती-कुछ मातायें अपने काम के सुभीते के विचार से बालक को उनके ठीक समय पर सोने नहीं देतीं अपने सुभीते के अनुसार सुलाने की कोशिश करती है परन्तु ऐसा करने से बालक की नींद जाती रहती है, और बालक चिड़चिड़ा हो जाता है, कई बार बालक प्यासा होता है परन्तु मातायें उधर ध्यान ही नहीं देती इसी कारण बालक नहीं सोता।

बच्चों को सुलाने की कुछ बुरी आदतें

कुछ मातायें बालकों को सुलाने के लिये थोड़ी सी अफीम दे दिया करती हैं ऐसा वह इस लिये करती हैं, कि बालक उठ कर हमे कष्ट न दे, परन्तु वह यह नहीं सोचती कि इस प्रकार अफीम दे कर सुलाने से उनके बच्चे की कितनी हानी होती है, बहुत सी मातायें बालक को झूला झुला कर सुलाया करतीं हैं, परन्तु इस प्रकार बालक को झूले मे या पालने में सुलाने से बालक मे स्नायु सम्बन्धी दुर्बलता आती है,

इसी कारण बालक को पूरी सुख देने वाली नींद आती है, बालक के सोने में मक्खियां भी कष्ट देती है। इन से बचाने के लिये बालक को कोई हलका सा जाली का कपड़ा उढ़ाना चाहिये कई मातायें बालक को हौवा आया इत्यादि नाम लेकर डराकर सुलाती है परन्तु यह ठीक नहीं है, ऐसा करने से बालक सोता २ चौंकने लगता है, तथा डरपोक प्रकृति का बनता है।

बच्चों के दाँत निकलना

प्रायः जब बच्चा ६-७ मास का हो जाता है। तो मसूढ़ों मे संघर्षण आरम्भ होजाता है, इससे बच्चे को रोमांच होने लगता है, और वहां श्लेष्मा होने के कारण कण्डू, लालास्राव आदि होने लगता है, बच्चा मसूढ़ों मे पीड़ा होने के कारण माता के स्तनाग्रभाग को जोर से दबाता है, उस समय बच्चे को जो कुछ भी मिलता है, उसी को मुख में रखकर दबाता है, यह समय दांत निकलने का है। पहले अस्थाई रूप से जो दांत निकलते हैं, वे संख्या में बीस २० होते है, और दूध के दांत कहलाते हैं। ६ या ७ वष मे दूध के दांत टूटने लगते है और उनके स्थान पर स्थाई दांत निकलने लगते हैं, प्रायः दांत एक साथ दो दो ही निकलते है।

भिन्न-भिन्न दांत निकलने का समय

(१) नीचे के दो बीच वाले सामने के दांत ६ से ८ मास की आयु तक निकल आते है।

(२) ऊपर के चार बीच वाले सामने के दांत ८ से १० मास की अवस्था तक निकल आते हैं

(३) नीचे के दो आस-पास के दांत व चार अगली डाढ़े १२ से १५ मास की अवस्था तक निकल आते हैं।

(४) चार कुथलिया १८ से २४ मास की अवस्था तक निकल आते हैं।

(५) चार पिछली डाढ़े २४ से ३० साल की अवस्था तक निकल आती हैं।

प्रायः एक वष की अवस्था तक बच्चे में छः दांत निकलने चाहिये।

१॥ वर्ष की अवस्था तक १२ दांत निकलने चाहिये।

२ वष की अवस्था तक १६ दांत निकलने चाहिये।

२॥ वर्ष की अवस्था तक २० दांत निकलने चाहिये।

परन्तु कभी २ बच्चे की शारीरिक अवस्था के अनुसार इस क्रम से कुछ अन्तर भी पड़ जाता है।

दाँत निकलने में कष्ट

साधारणतया-जो बच्चे स्वस्थ होते हैं, उन्हें दांत निकलते समय विशेषकर कोई कष्ट नहीं होता परन्तु जो बच्चे कुछ दुर्बल होते हैं, उन्हें इस अवस्था मे कोई न कोई कष्ट होता ही रहता है। जैसे—ज्वर, हलकी खांसी, हरे पीले दस्त, आंख आना इत्यादि।

दांत निकलते समय बच्चों के मुख से प्रायः लार टपकती रहती है, ऐसी अवस्था मे बच्चे की छाती पर कपड़े की गद्दी बांध दें जिससे उसके अन्य कपड़े न भीगें।

दांत निकलने के कारण मसूढ़ों में जो दर्द होता है, अगर उसके कारण बच्चा दूध न पी

सके तो छातियों से दूध निकाल कर चम्मच अथवा सीप की सहायता से पिला दे।

दाँत निकलने की व्याधियों का उपचार

चौकिया सुहागा की खील को शहद में मिला कर बच्चों के मसूढ़ों पर मलने से दांत अतिशीघ्र निकल आते हैं।

मुलहठी के चूर्ण को भी इसी प्रकार मसूढ़ों पर मलें। अगर इस अवस्था में बुखार हो तो निम्न योग दें।

सुहागायुक्त अतिविषा चूर्ण, नागरमोथाचूर्ण काकड़ासिंगी चूर्ण सब सम भाग मात्रा १ से २ र० तक मधु या माता के दूध से दिन में ३-४ बार दें।

अतिसार—शंखभस्म, प्रवाल भस्म, वंशलोचन, जायफल, जवाहर मोहरा भस्म, सब सम भाग। मात्रा—आधी से एक र० तक दिन में ३-४ बार मधु या दूध से दें।

वमन—अर्क गुलाब, अर्क सौंफ, अर्क इलायची, अर्क पोदीना सब सम भाग मिलाकर रखे मात्रा—१ से ५ बूंद तक पानी में मिलाकर बार बार दे जब तक वमन बन्द न हो जावे।

कॉस—मुलहठी चूर्ण बड़ी हरड़ चूर्ण, काकड़ासिंगी, सेंधा नमक, भुना सुहागा समभाग ले चूर्ण करे। मात्रा—१ से २ र० तक, माता का दूध या मधु से दिन में ३ बार दे।

कोष्ठबद्धता—बच्चे की अवस्थानुसार रेंडी का तेल मधु मिला कर अथवा माता का दूध मिला कर दें।

अफ्मान—रेंडी के तेल को पेट पर लगा कर टकोर करे।

बच्चों का विकास

नया जन्मा बच्चा प्रायः २० इञ्च लम्बा होता है, और पहले वर्ष प्रति मास प्रायः ३/४ इञ्च बढता है, इस प्रकार जब बच्चा एक साल का हो जाता है, तो वह लगभग २६ इञ्च का हो जाता है। दूसरे साल ४ इञ्च, तीसरे साल प्रायः ३॥ इञ्च बढ़ता है, और चौथे साल ३ इञ्च लम्बाई में बढ़ता है, पांचवें साल से लेकर लड़कियों में ११ वें साल तक और लड़कों में १३ साल तक प्रति साल २ इञ्च लम्बाई बढ़ती है इसके बाद दोनों की युवा अवस्था आरम्भ होती है। इस अवस्था में बालिकायें जल्दी बढ़ती हैं, अगर माता पिता लम्बे होते हैं, तो उनकी सन्तान भी लम्बी होती है। अगर वह नाटे होते हैं तो सन्तान भी नाटी होती है। और अगर बालक को पोषक भोजन न मिले तो उसकी बढ़ोती भी कम होती है।

जन्म के समय प्रायः बच्चों का वजन ७ पौंड के लगभग होता है, जो दो बच्चे एक साथ पैदा होते हैं वह तोल में प्रायः बहुत कम होते हैं अथवा जो बच्चे समय से पहले ही पैदा हो जाते हैं वह भी तोल में प्रायः बहुत ही कम होते हैं, यह भी एक नियम है, कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियां तोल में कम होती हैं। अगर जन्म के समय बच्चे का तोल ६ पौंड से कम हो तो माता पिता को बहुत सावधानता पूर्वक उसका पालन पोषण करना चाहिये, जन्म लेने के कुछ दिन के अन्दर बच्चे तोल में कुछ घट जाते हैं। परन्तु यह कमी दसवें दिन तक पूरी हो जाती है और फिर बच्चे धीरे २ तोल में बढ़ने लगते हैं,

अत: पांचवें महीने के अन्त तक बच्चे का तौल जन्म समय के तौल से दूना हो जाना चाहिये, इसी प्रकार बारहवें महीने में तौल से तिगुना और दो साल की आयु में जन्म की तौल से चौगुना हो जाता है।

बच्चे की तौल में विकास जानने के लिये प्रति सप्ताह तौलना चाहिये तीन मास बाद महीने में दो बार अगर उसका विकास सन्तोष-जनक हो तो फिर महीने में केवल एक बार तौलना चाहिये।

बच्चे के शरीर के अन्य अङ्गों का माप

शिर का घेरा—साधारणत: जन्म के समय शिर घेरा १३ इञ्च होना चाहिये नाप ठीक मस्तक की सतह से ही लेना चाहिये। अगर बच्चे के शिर का घेरा १३ इञ्च से कम हो तो ऐसे बच्चे मानसिक दृष्टि से बहुत दुर्बल होते हैं और अगर जन्म के समय पर घेरा बड़ा हो तो यह भी रोग का लक्षण है। इसकी उपेक्षा न करके किसी योग्य चिकित्सक को दिखाना चाहिये, एक साल की अवस्था में शिर का घेरा प्राय: १८ इञ्च हो जाता है और तीसरे साल के अन्त में प्राय: १९ इञ्च होता है।

छाती का नाप

यह सब बच्चों में प्राय: एक सी नहीं होती, छातियों की घुंडियों की सतह से छाती नापनी चाहिये।

लगभग शिर, छाती और पेट का घेरा समान ही होता है, परन्तु दूसरे साल के अन्तसे छाती की नाप शिर व पेट की नाप से बढ़नी शुरू हो जाती है, और पन्द्रह साल की अवस्था तक प्रति साल १ इञ्च छाती बढ़नी चाहिये।

बच्चे की दृष्टि

जन्म के समय से ही बच्चा अन्धकार व प्रकाश में अन्तर समझ लेता है, वह बहुत चम-कीले प्रकाश से बचना चाहता है, क्यों कि इससे उसे कष्ट होता है, इसी लिये जिस कमरे में बच्चा रक्खा जावे इसमें बहुत अधिक प्रकाश नहीं होना चाहिये। न ही बच्चे को बहुत चमकीली रोशनी में ले जाना चाहिये, उसकी आंखों पर भी सूर्य की किरणें नहीं पड़नी चाहिये।

जन्म से छठवें दिन बच्चा दिये पर निगाह जमा सकता है और जिस ओर दिया ले जाओ उधर ही देखता है। चौथे मास में बच्चा अपने माता पिता या परिचारक को देख कर पहचान लेता है, परन्तु अनभिज्ञ को देखकर डर सा जाता है।

बच्चे को सुनने की शक्ति

जन्म के बाद पहले कुछ दिनों तक बच्चे के सुनने की शक्ति बहुत ही कम होती है। परन्तु धीरे २ वह शक्ति बढ़ने लगती है। और कुछ महीनों में उसे यह शक्ति बहुत ही कुछ प्राप्त हो जाती है। अगर कुछ साधारण सा भी शोर गुल होता है, तो उसकी नींद खुल जाती है। तीसरे महीने में तो यह शक्ति इतनी हो जाती है कि जिस ओर से आवाज आती है। उस ओर अपना शिर घुमा देता है। परन्तु जहां बहुत शोरगुल होता है जन्म के बाद कुछ महीने वहां बच्चे को रखना बहुत हानि कारक है।

क्योंकि बच्चे के मस्तिष्क पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है इसी कारण बच्चे के मन में डर समा जाता है। अतः इस ओर माताओं को विशेष ध्यान रखना चाहिये।

स्पर्श की शक्ति

नये जन्मे बच्चे में होठों और जिह्वा में स्तन से दूध पीने के लिये तो स्पर्श की शक्ति बहुत होती है, परन्तु और अङ्ग में इसकी यह शक्ति बहुत ही कम होती है परन्तु लगभग तीन महीने का होने के बाद उसमें यह शक्ति पूर्ण रूप से तथा सारे शरीर में आ जाती है।

रसना शक्ति

बच्चे में यह शक्ति बहुत विकसित होती है, जन्म के समय से ही वह समझ सकता है, कि यह चीज मीठा कड़वी या खट्टा है मीठी चीज को बड़े मजे से चूसता है, परन्तु अगर कोई कड़वी चीज लगाई जावे तो वह मुंह बना लेता है।

गन्ध लेने की शक्ति

जन्म के समय थोड़ी गन्ध लेने की शक्ति तो होती है, परन्तु अन्य शक्ति के विकसित होने के बाद यह भी पूर्ण रूप से विकसित हो जाती है।

बोलने की शक्ति

कुछ बच्चों में तो यह शक्ति बहुत जल्दी आ जाती है, परन्तु कुछ में बहुत देर से आती है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियां प्रायः ३-४ महीने पहले बोलने लगती है, पहले वर्ष के अन्त में बच्चा मामा, दादा, ताता, चाचा आदि शब्दों का उच्चारण करने लगते हैं, तथा दूसरे वर्ष के अन्त तक दो तीन शब्दों को जोड़ कर वाक्य बनाकर बोलने लगता है, और इसके बाद उसके बोलने की शक्ति बहुत जल्दी बढ़ने लगती है, यदि बच्चा बीमार रहा हो और कमजोर हो तो उसके बोलना सीखने में भी देर लगती है, बोलने का सम्बन्ध तो वास्तव में ध्यान देने में है, यदि बच्चा ठीक प्रकार से ध्यान देने योग्य होगा तो वह बोलना भी जल्दी सीख जावेगा, वही बच्चे देर में बोलते हैं, जिनका मस्तिष्क कुछ कमजोर होता है। कई बार बच्चे के कान ठीक नहीं होते और इसी कारण बच्चा नहीं बोल सकता, बहुत सी मातायें यह कहती हैं, कि बच्चे की जिह्वा के नीचे की झिल्ली अधिक सटी हुई है, इसी कारण बच्चा नहीं बोलता परन्तु यह ठीक नहीं है क्योंकि वह बोलने में बाधक नहीं होता हां यह हो सकता है, कि कुछ विशिष्ट शब्दों का उच्चारण नहीं कर सकता, बल्कि इससे बच्चे के दूध पीने में अवश्य कुछ बाधा होती है।

बच्चे के अङ्गों का विकास

आरम्भ में केवल बच्चे में हाथ पैर पटकने व एड़ियां रगड़ने की ही गतियां होती है, परन्तु वह जसे २ बड़ा होता है, अन्य अङ्गों का भी संचालन करने लगता है। जसे—शिर उठाना, चीजों को हाथों से पकड़ना, बैठना, खड़े होना, जमीन पर रेंगना इत्यादि।

पहले वर्ष में बच्चे का विकास

पहले मास में बच्चा ही कच्चा रोशनी या तेज प्रकाश को देखकर घबराता है, उसे तेज रोशनी

अच्छी नहीं लगती आरम्भ में कुछ दिनों में ही उसमें सुनने की शक्ति आ जाती है, इसी कारण थोड़ा शोर होने पर भी वह जाग उठता है।

दूसरे मास में बच्चा बोलने पर यानी उसके साथ बात करने पर मुस्कराने लगता है। यानी प्रसन्नता प्रकट करता है, तीसरे मास के अन्त में वह उस ओर शिर घुमाता है, जिस ओर से आवाज आती है चौथे मास में वह विना किसी सहारे के शिर उठा सकता है, अपने वह न माता पिता को पहचाने लगता है, तथा किसी अजीब चीज को देख कर रोने लगता है; पांचवें मास में जो भी चीज उसे दी जाती है उसे मुख में डालने लगता है। खिलोनो को लेकर प्रसन्न होता है, छटवें मास मे बच्चा बैठने की कोशिश करने लगता है। छटवे व सातवें मास के बीच मे बच्चों के दांत निकलने, पहले नीचे के बीच वाले दो दांत निकलते है, परन्तु कईयों को पहले ऊपर के भी निकल आते हैं। परन्तु अधिकतर आठवें मास मे ऊपर के बीच वाले दांत निकलते हैं नौवें मास मे चारपाई को पकड़कर खड़े होने का प्रयत्न करना है, दसवें मास मे अधिकतर लड़कियां बोलना सीखती हैं परन्तु लड़के कुछ देर से बोलना सीखते हैं। ग्यारहवें मास में बच्चा बिना सहारे के खड़ा होने लगता है। तथा कुछ चलने भी लगता है, बारहवें मास के अन्त तक बच्चे के छ दांत निकल आते हैं चार ऊपर के २ नीचे के इसी अवस्था मे वह कुछ कठिन चीज खाने की इच्छा करता है। क्योंकि कठिन चीज़ खाने से मसूड़ों पर दवाब पड़ता है तथा बच्चे को कुछ सुख सा लगता है।

बच्चे का वजन

बच्चों को मास में एक बार अवश्य ही तोलना चाहिये, उसका तौल एक कागज पर लिख लेना चाहिये और प्रत्येक मास मे बच्चा उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। क्योंकि स्वस्थ बच्चा जो कि माता का दूध पीता है। हर महीने ८-१० आउन्स बढ़ जाता है, बच्चा जन्म के समय तौल मे जितना होता है। ५-६ मास मे वह उससे दुगना हो जाता है, और १ साल के लगभग होने पर तिगुने वजन का हो जाता है। अगर इस दृष्टि से बच्चे का वजन न बढ़े तो उस कारण का पता लगाना चाहिये, बच्चों के दांत निकलने के समय में भी बच्चे कुछ रुग्ण हो जाते है, इसी कारण तौल मे कुछ कम हो जाते है, परन्तु इससे चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह कमी स्थायी नहीं होती बल्कि रुग्णता हटते ही वह पुनः अपना वजन पूर्ण कर लेता है। जो मातायें दूध मे अथवा किसी प्रकार भी बच्चें को चीनी अधिक सेवन कराती है, वह बच्चे वजन मे तो बहुत बढ़ जाते है, परन्तु उनकी यह वृद्धि भ्रम मे डालने वाली होती है, वह जितने पुष्ट नजर आते हैं, वास्तविक शक्ति उसमे उतनी नही होती, और ऐसे बच्चे सक्रामक रोगों के जल्दी शिकार हो जाते हैं।

बच्चों के कुछ रोग व उनका उपचार

खसरा (लघु मसूरिका)

छोटे बच्चों को होने वाला यह एक बहुत ही

छूत वाला रोग है इस रोग का असर रोगी को नासिक से निकलने वाले स्राव तथा खांसी के बाद आने वाले थूक से होता है. इस रोग का सक्रमण होने के कुछ घन्टे पश्चात ही कुछ ठन्डी भी लगती है त्वचा में कुछ शोथ तथा नेत्रों से लाली हो जाती है, रोगी के नाक व नेत्रों से पानी बहने लगता है, छींके आती है, तथा गले मे खराश होता है, बुखार हो जाता है जिन बच्चों को इसका तीव्र आक्रमण होता है, उसे पहले दिन ही १-२ से १-३ डिग्री बुखार हो जाता है बुखार होने के चौथे अथवा पांचवे दिन इसके दाने दिखाई पड़ने लगते हैं, पहले वह दाने कान के नीचे और चेहरे पर निकलते हैं और फिर धीरे २ सारे शरीर मे फैल जाते है, पीड़िका निकलने के बाद २-३ दिन बड़े ही कष्ट कारक होते हैं क्योंकि इस समय गल गड मे भी शोथ हो जाती है, इसी कारण खांसी भी बहुत तग करती है ऐसी अवस्था मे सावधानी न बरती जावे तो न्यूमोनिया होने का भय रहता है, इसमे वात श्लेष्मिक ज्वर होना भयानक है, उपचार—रोगी को बहुत सी साफ व ताजी हवा मिलनी चाहिये परन्तु यह ध्यान रखे कि रोगी को हवा के तेज और ठन्डे झोके न लगने पावे। यदि रोगी का ज्वरहो तो उसका शरीर दिन मे एक दो बार गीली तोलिया से पोछवा दे। ऐसा करने से रोगी की बेचैनी कम हो जाती है। नेत्रों को सोभाग्य जल से धोना चाहिये।

सौभाग्य जल बनाने की विधि

१ माम के लगभग भुना सुहागा लेकर उसे एक पाव जल में घोल ले इसी से नेत्रों को धोवे औषधी—प्रवाल भस्म १ र०, मृत्युञ्जय आधी र०, सुहागा भुना आधा र०, यह एक मात्रा है। ऐसी दिन में तीन मात्रायें मधु या दूध से दें, कभी २ सौंफ व अर्क गाजवा थोड़ा २ पिला दिया करें।

रोगी का भोजन सदा तरल व द्रव रूप में ही दे, कोई कठोर व गरिष्ट चीज खाने को न दें,

बच्चे की सफाई का विशेष ध्यान रखे, इन दिनों अगर बच्चा माता का दूध पीता हो तो उसे भी पथ्य से रहना चाहिये।

कुकर कास

विशेष कर बच्चों मे पाये जाने वाला वातज कास के रूप में यह भी एक संक्रामक रोग है, अगर यह रोग किसी बच्चे को हो जावे तो उस घर के सभी बच्चे कुकर कास से पीड़ित हो जाते हैं इसके रोगाणु खांसते समय श्वास नली की वाष्प के साथ बाहर आकर समीप रहने वाले बच्चों मे श्वसन क्रिया द्वारा तत्काल सक्रमण करते हैं, यह रोग साधारण प्रतिश्याय, ज्वर व कास के साथ आरम्भ होता है परन्तु एक सप्ताह में ज्वर व प्रतिश्याय तो शान्त हो जाता है, परन्तु खांसी उग्र रूप धारण करता जाती है, पहले तो मामूली शुष्क कास के रूप मे ही प्रगट होती है, परन्तु कुछ दिन के बाद इसके वेग आने लगते हैं, बच्चा खासते २ हूँ हूँ शब्द करता है, मुख खोलता है, उसका मुख लाल हो जाता है, हाथ की मुट्ठिया बाध लेता है, खाया हुआ अन्न इत्यादि वमन होकर बाहर हो जाता है, ऐसा दिन मे बार २ होता है, इस प्रकार खाया

हुआ अन्न हजम न होने से बच्चे की दुर्बलता आहार की कमी से दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है, वैसे ६ सप्ताह तक यह रोग बच्चे को तंग करता है, उसके बाद शान्त होने लगता है।

रोग के उपद्रव—खांसी के तीव्र वेग के कारण ऊर्ध्व गामी रक्तपित्त भी हो जाता है। कई बार तीव्र कास वेग के कारण कान का पर्दा भी फट जाता है, इसी कारण कान से रक्त निकला करता है पाचन क्रिया बिगड़ने से पहले दस्त भी आने लगते हैं।

बढ़ते २ कई बार फुफ्फुस प्रदाह (न्यूमोनिया) भी हो जाता है

चिकित्सा—

सफेद फिटकरी को लोहे की कढ़ाही मे डाल केले के पौधे का रस डाल पकावे रस फिटकरी से चौगुना होना चाहिये, जब फिटकरी भुनकर सूख जावे, तो अग्नि से उतार कर बारीक पीस कर रखे। मात्रा—१ से ३ र० तक बच्चे की अवस्थानुसार मधु या दूध में मिलाकर दे।

बच्चे की छाती पर रेंढी का तेल मलें।

खांसी के वेग के बाद अगर बच्चे को थोड़ा शहद चटावे तो उनमे क्षीणता नहीं आती अगर बच्चे को ज्वर न हो तो सरसों के तेल को गरम कर उसमे थोड़ा नमक मिला सारे शरीर पर मले तथा थोड़ी देर धूप मे बैठाकर गरम जल से स्नान करा दे अगर अन्य उपद्रव हो तो उनका उपचार आयुर्वेदानुसार करे, बच्चे को जल्द हजम होने वाली चीजें पथ्य मे दे।

आन्त्रिक ज्वर (मोतीझरा)

यह भी एक संक्रामक रोग है, पेय जल के दूषित होने अथवा रोगी के मल मूत्र पर मक्खियों के बैठने से इसके प्रसारण मे सहायता मिलती है, यह ज्वर ३ से ४ सप्ताह तक चालू रहता है, प्रथम सप्ताह मे ज्वर धीरे २ बढ़ता है, प्रात: काल की अपेक्षा साय ज्वर प्रति दिन अधिक होता है, और सप्ताह के बाद दूसरे व तीसरे सप्ताह मे अहोरात्र में ज्वर तापक्रम मे बहुत कम अन्तर रहता है, दोष पक्व होने पर अर्थात् तीसरे चौथे सप्ताह में ज्वर धीरे २ उतरता है।

प्रथम सप्ताह के लक्षण—

ज्वर धीरे २ बढ़ते जाना प्रातः काल की अपेक्षा साय ज्वर अधिक रहना, शिर शूल, दौर्बल्यता, अरुचि, आध्मान उदरशूल अथवा उदर मे गुड़गुड़ाहट अतिसारवत द्रव मल प्रवृति होना, नासागत रक्तस्राव होना, जिह्वा श्वेत वर्ण की शुष्क मल से लिप्त रहती है परन्तु इसकी किनारी लाल होती है।

द्वितीय सप्ताह के लक्षण

ज्वर वेग अधिक होता है। ज्वर १०३ से १०५ डिग्री तक हो जाता है। ज्वर मान मे अहो रात्रि मे विशेष परिवर्तन नही होता सात दिन मे से बारह दिन के अन्दर शरीर पर गुलाबी वर्ण की पिडका उत्पन्नहोती है, यह शेष मध्य शरीर पर ही होती है, मुख पर तो कदाचित ही होती है, यह पिडिका मोती के दाने के समान होती है इसी कारण इसे मोतीझरा कहते हैं।

तीसरे सप्ताह के लक्षण

ज्वर का वेग तीव्र होता है, प्यास की अधिकता होती है, चणक यूष जसा पतले मल की प्रकृति होती है।

मूत्र मे श्वेतता निकलती है । रोगी प्रलाप करने लगता है। अथवा चुप पड़ा रहता है। रोगी कुछ भ्रम शील भी होता है अरुचि इतनी हो जाती है, कि छोटे बच्चे भी माता को छाती का दूध भी नही पीते। कईवार बच्चा एसा प्रतीत होता है, जैसे मूर्च्छित हुआ हो।

चौथे सप्ताह के लक्षण

ज्वर धीरे२ कम होता जाता है, रुचि उत्पन्न होती है। नींद ठीक प्रकार आती है । शरीर मे लघुता उत्पन्न होती है, इस सप्ताह में वैसे तो रोग मुक्त होने के सब लक्षण होते है परन्तु कभी २ मल के साथ रक्त स्राव होने लगता है, जो कि इस रोग के लिये एक बहुत हा गम्भीर लक्षण है।

५ से १० वर्ष के बच्चों में लाभ होने की सम्भावना अधिक है, परन्तु ६० वर्ष के बाद यह रोग अधिक कष्ट साध्य है।

चिकित्सा

इस रोग मे चिकित्सा की बहुत सावधानी से चलने की आवश्यकता है । ज्वर को यथा समय स्वयं ही दोष परिपाक काल मे उतार देना चाहिये परन्तु बीच मे उतारने की चेष्टा करना भयकर गलती कर उपद्रवों को निमन्त्रण देना है, यह सन्निपातिक रोग है ! अतः चिकित्सक को ऋतु काल रोगी का बलाबल देख कर ही चिकित्सा करनी चाहिये।

औषधी—गौदन्ती भस्म, प्रवाल भस्म, व सर्जीवनी वटी तीनों को समभाग ले बारीक घोट ले, मात्रा १ से २ रत्ती बच्चे की अवस्थानुसार दिन में तीन बार मधु से दे, वैसे तो यदि यह योग ज्वर के प्रारम्भ से ही देने से रोगी को शीघ्र लाभ होता है तथा अतिसार आदि कोई उपद्रव भी नहीं होते, उनका उपाय करे, इस रोग मे पतले दस्त आने से भी एक भयानक लक्षण है इससे शरीर की गर्मी बाहर निकल जाती है। तथा रोगी शीत ग्रस्त हो जाता है। जो कि इस राग मे नितान्त ही भयानक है, इसमें सजीवनी वटी सिद्ध प्राणेश्वर रस दोनों १–१ रत्ती अनीस चूर्ण ४ रत्ती तीनों को बारीक पीस कर तीन पुड़िया बनाले अगर अतिसार अधिक हो तो २–२ घन्टे बाद अन्यथा ४–४ घन्टे बाद मधु से चटावे। अगर हिक्का हो तो मयूर पुच्छ भस्म, प्रवाल भस्म, पिप्पली चूर्ण सम भाग लेकर बारीक पीस कर एक से २ रत्ती की मात्रा मे अवस्थानुसार दे। हल्दी जला कर उसका धुआ सुघाने से भी हिक्का बन्द हो जाती है।

वमन प्यास की अधिकता—बड़ी इलायची के छिलके १०–१२ इलायचियों को लेकर आधा सेर जल मे उबाल ले जब वह आधा रहे तो ठंडा कर ले। यह जल बार २ थोड़ा २ पिलाने से वमन व प्यास नष्ट हो जाती है।

पीने का पानी—तीन माशे खूबकला को १ सेर पानी मे उबाल ले जब आधा रह जावे तो छान कर रखे, यह पानी रोगी को पीने को दे।

पथ्यापथ्य—जब तक ज्वर रहे किसीप्रकार का अन्न नहीं दे, रोगीकी अवस्थानुसार मुसम्मी का रस सेब को जल में उबाल कर उसका व मुनक्का को जल में उबाल कर वह जल दे, गाय का दूध हलका कर दे यदि अतिसार भी हो तो अदरक का रस दे, अथवा दूध को फाड़ कर उसका पानी दे।

कुछ आवश्यक सूचना—रोगी की चारपाई के पास गूगल आदि सुगन्धित धूप जलावे। रोगी के कमरे में सदा साफ व ताजी हवा आने देना चाहिये हर समय कमरे को चारों ओर से बन्द रखना हानि कारक है।

बच्चे की सफाई पर विशेष ध्यान दे उसके कपड़ों को नित्य बदले तथा गर्म पानी से धोवे बच्चे का सब चीजों को नित्य साफ करे। मल मूत्र त्यागने के बाद सफाई पर बहुत अधिक ध्यान देना चाहिये यह भी ध्यान रखे, कि बच्चा एक ही करवट न लेटा रहे, उसको करवट बदलते रहना चाहिये। बच्चे को कभी भी अधिक दवाये न दे क्योंकि अतः हम इन ज्वर में कोई भी दवा न दे। केवल बच्चे को पथ्य से रखे। तो ज्वर समय पर बिना कोई उपद्रव किये उतर जाता है। इसके विपरीत कभी २ इनको उग्र दवायें दे दी जाती है जो कि लाभ की जगह घातक ही सिद्ध होती है। जब ज्वर चढ़ने लगता है तब जोरो की भूख लगती है। और बच्चा ऐसी चीजें खाने को मांगता है जो उसे सहज मे पच नहीं सकती-ऐसी अवस्था में माता को बहुत सावधान रहना चाहिये, बच्चे को कोई ऐसी चीज खाने को न दे। जो कि जाकर पाचन संस्थान पर दबाव डाले, नहीं तो यह रोग पुनः उग्र रूप से आक्रमण करता है। ज्वर उतरने के एक डेढ़ सप्ताह बाद से धीरे २ बच्चे को अन्न से बनी हलकी चीजे फलों का रस सूजी से बने बिस्कुट इत्यादि खाने को दें, परन्तु यह चीजे भी थोड़ा २ मात्रा में दो या तीन घन्टे के अन्तर से दे, ऐसा करने से आप अपने बच्चे के स्वास्थ्य को पहले से भी अच्छा पायेंगे।

बाल कण्ठ रोहिणी (डिफ्थीरिया)

बालरोगो में यह एक भयानक व अति संक्रामक रोग है। आयुर्वेदानुसार यह पांच प्रकार का है। जैसे वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, व रक्तज, यह रोग अधिक तर शरद ऋतु के प्रारम्भ व अन्त मे संक्रामक रूप से फैलता है। अधिकतर एक वर्ष के बच्चे से लेकर सात वर्ष तक के बच्चों मे अधिक होता है, परन्तु कभी २ इससे अधिक अवस्था के बच्चों में भी पाया जाता है। इस रोग का प्रादुर्भाव कभी तो बाहर हलका होता है। और कभी बड़ा सांघातिक होता है इस रोग का आरम्भ हलके जुकाम गले मे दर्द तथा थोड़ी खांसी से आरम्भ होता है। कभी थोड़ा व कभी तीव्र ज्वर भी हो जाता है गले की लसीका ग्रंथियों मे शोथ हो जाता है। ग्रीवा जकड़ी रहती है। गले में एक सफेद रंग की झिल्ली बनती है, जो कि स्वर यन्त्र व नासा मे फैल कर श्वासावरोध करती है, इस रोग के आरम्भ में गले में चारों ओर लालिमा मालूम पड़ती है, तथा तालू के मूल में सफेद पर्त सी जमी मालूम होती है, २

दिन मे ही वह सफेद पत झिल्ली बन जाती है, गले में दोषानुसार दाह व पीड़ा होने लगती है, शोथ और भी अधिक बढ़ जाता है, कोई पदार्थ खाने व बोलने में भी पीड़ा होती है। धीरे ज्वर भी बढ़ने लगता है, जो कि १०४ डिग्री तक पहुँच जाता है। श्वास लेने मे भी कष्ट होता है, इसके विष का प्रभाव हृदय फुफ्फुस वृक्क व वात संस्थानों पर भी प्रतीत होने लगता है। रोगी के मुख का वर्ण लाल हो जाता है, तृषा बढ़ जाती है। तीसरी अवस्था मे गला बन्द हो जाता है, ग्रीवा अकड़जाती है, तथा कान मे भी दर्द होने लग जाता है। चौथी अवस्था मे गल नासिका स्वर यन्त्र अन्ननलिका तक शोथ फैल जाता है, शरीर नीला पड़जाता है तथा रोगी के बचने की बहुत कम सम्भावना रहती है।

चिकित्सा—लाल भस्म, सुहागा मधु से सेवन करावे प्राण वल्लभ रस (योग रसेन्द्र चि०) मधु से सेवन करावे श्वेत पुनर्नवा मूल स्वरस अथवा क्वाथ कर २ पिलावे रीठे व अम्लतास के क्वाथ में गरारे करावे दन्ती मूल वायविडंग, अपामार्ग तथा अम्लतास के गूदे के साथ सिद्ध किये हुये तेल से कुल्ले करावे सत्व लोबान, रीठे का छिलका पिसा हुआ व सुहागा भुना हुआ सब समभाग शहद में मिला कर फुरहरी से बार २ गले में लगावे गले के बाहर रेवन्द या ऐरंडी के तेल मे पीस कर लगावे।

एक योग—जायफल, जावित्री, शुद्धसुहागा, लौंग, केशर, अकरकरा, जला हुआ रीठे का छिलका मकरध्वज सबको समभाग ले दो रोज पान के रस में खरल कर ज्वार जैसी गोली बनाले, मात्रा अनुपान १-१ गोली ४-४ घन्टे बाद मधु से दे प्यास लगने पर अमलतास क्वाथ थोड़ा २ पिलावे, रोगी को सांद्र वस्तुओं से बचावे।

कण्ठ-शालूक और उसकी चिकित्सा

बच्चों मे पाया जाने वाला यह एक प्रसिद्ध रोग है। लग भग १० वर्ष की आयु होने के बाद यह नही होता क्यों कि युवावस्था आने पर साधारण ग्रन्थियां क्षीण होकर मिट जाती हैं, यह रोग अस्वस्थ जनक परिस्थिति शुद्ध जल वायु के अभाव तथा हर समय बने रहने वाले प्रतिश्याय के कारण अथवा कर्ण रोग रोहिणी रोमान्तिका, आमवात, वृक्क शोथ के कारण अथवा पौष्टिक आहार के अभाव में तथा अन्त्र व मुख के संक्रामक रोगों के कारण नासा के पीछे गले की छत की लसीका ग्रन्थियां शोथयुक्त हो जाती हैं, इसी कारण गले में बेर की गुठली के समान शूल सहित खुरदरी ग्रन्थि हो जाती है जिसके कारण रोगी नाक से श्वास नहीं ले सकता बल्कि मुख से श्वास लेता है।

सोते समय बच्चा खर्राटे भरता है, रात को सोते समय श्वासावरोध के कारण कई बार उठ बैठता है, तथा बड़ी अवस्था का होने पर भी शैय्या मूत्र कर देता है, मुख के द्वारा श्वास लेने मे ही सुख का अनुभव करता है बच्चे के जोर से खासने से कई बार कफ के साथ रक्त भी आ जाता है, इस रोग के कारण ही बच्चों में अन्य कई रोग भी हो जाते हैं। जैसे—कर्णशूल बाधिर्य, नेत्राभिष्यन्द कृमि दन्त, अग्निमांद्य, आदि गले मे नासारन्ध्र के ऊपर ही यह ग्रंथि

होती है। जो कि मुख में उंगली डालकर नासारन्ध्र को छूने से पता लग जाता है।

चिकित्सा—

टंकण शुद्ध, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, वंशलोचन, सब १-१ तोले, छोटी पीपल ६ मा०, मिश्री ५ तो० सबको बारीक पीस रखें।

मात्रा—दिन में ३ बार २ से ४ र० प्रति बार शहद से दें।

नमक को जल में मिलाकर गरारे करावे, यह लवण जल ही नाक में २-२ बूंद डाले।

भुना नमक, भुनी फिटकरी, भुना सुहागा व ... समभाग ले शहद में मिला रुई के फाहे से तालुकी पर लगावे, इस उपचार से रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

रोगी को भोजन पौष्टिक व सुपाच्य दें।

बाल पक्षाघात (पोलियो)

यह रोग विशेषत: अकस्मात ही उपस्थित हो जाता है, वैसे भी यह रोग संसार व्यापी है, ... एक वर्ष से पांच वर्ष तक के शिशुओं को ही संक्रमण हुआ करता है, प्रथम इसका आक्रमण सुषुम्ना कांड के अग्र श्रृंग पर होता है, जिससे सूक्ष्म नाड़ियां और मांसपेशियां व्याघात पाती हैं। प्रथम थोड़ा ज्वर होता है, फिर शिर शूल, कंठ, हाथ पैर, पीठ विशेषकर मेरुदण्ड में पीड़ा, वमन, अतिसार, मांसपेशियों में ऐंठन होती है।

ज्वर प्राय: १०३ डिग्री तक होता है, दूसरे अथवा तीसरे दिन मांसपेशियों का आक्षेप होता है, आक्षेप के बाद बच्चे के हाथ अथवा पैरों की क्रिया शीलता नष्ट हो जाती है, कई बार ऐसा भी देखा गया है कि एक ओर का हाथ तथा दूसरी ओर का पैर क्रिया हीन हो जाता है, कुछ दिन के बाद आक्रान्त स्थान की मांसपेशियां और तन्तु विधानों का अपचय होने लगता है मानों वह सूखकर लकड़ी के समान हो जाते हैं, इस दशा में रुग्ण को उस स्थान पर कोई पीड़ा भांति नहीं होती।

चिकित्सा—

यह रोग आमवातज है, अत: पहले आमका पाचन करे, ज्वर को नष्ट करने के लिये मृत्युञ्जय अथवा त्रिभुवनकीर्ति रस बच्चे की अवस्थानुसार दिन में ३-४ बार मधु से सेवन करावे। ऊपर से सोंठ व अमलतास का क्वाथ पिलावे, जब ज्वर उतर जावे, तो मयूर पुच्छ भस्म २ र०, शुद्ध कुचला आधा र०, अभ्रक भस्म १ र० इसकी तीन पुड़ियां बनावें सुबह, दो पहर व रात को १-१ पुड़िया मधु से चटावे। इस औषधी से वात नाड़ियां मस्तिष्क व यकृत को बल मिलता है। कभी २ एक एक चावल लोह भस्म मिला देने से बालक की अशक्ति भी शीघ्र नष्ट हो जाती है।

तैल—एक पाव तिल तैल में १ तो० कुचला डालकर जला ले इस तैल को छान कर शीशी में रखे, रुग्णांगों पर इसकी मालिश करें। मालिश के बाद बेसन मले। रुग्णावयवों को मालिश के बाद बार-बार हिलावे ऐसा करने से उनका व्यायाम होगा स्नान कुछ उष्ण जल से ही करावे। रुग्ण को भोजन सुपाच्य ही दे, रुग्ण

अगर माता का दूध पीता हो तो माता को भी पथ्य से रहना चाहिये ।

बाल कर्णशूल व कर्ण स्राव

कान के अन्दर शोथ, पिडिका विद्रधि होना किसी जन्तु का कान में घुस जाना, अथवा अपने कारणों से कुपित वायु दोषों द्वारा आवृत होने पर इस दोष युक्त लक्षणों द्वारा कर्ण में कष्ट साध्य शूल को उत्पन्न करता है ।

बच्चों की कर्णशूल परीक्षा—कर्ण छूने पर बच्चा रोवे शिर को इधर उधर पटके बार-बार अपने हाथ को कान के समीप ले जावे तो समझना चाहिये कि बच्चे के कान में पीड़ा है ।

हींग १ तो०, अदरख स्वरस २ तो०, लहसुन स्वरस २ तो०, अर्क पत्र स्वरस २ तो०, सेंधा नमक १ तो० सबको १६ तो० सरसों के तेल में पकाकर तेल छानकर रखे, इसको थोड़ा गरम कर कान में डालने से सब प्रकार के कर्ण शूल नष्ट होते हैं ।

कर्ण स्राव

किसी भी कारण से कान में जल भर जावे, शिर में चोट लग जाने के कारण तथा कान की पिड़िका के फटने के कारण वायु कुपित होकर कान में से पीब या पानी जैसा स्राव बहता है, उसे कर्णस्राव कहते हैं ।

कर्णस्राव नाशक तेल—

सफेद फिटकरी १ तो०, मैनशिल १ तो०, धतूरे के फल २ तो०, मूली के पत्तों का रस १ छ०, सबको मूली के रस में पीसकर १ पाव तिल तेल में डालकर पकावे जब रस जल जावे तो अग्नि से उतार कर रखे । इस तेल के डालने तथा नीम के पानी से धोने से किसी भी कारण से हुआ कर्ण स्राव नष्ट हो जाता है ।

कर्ण कृमि

कई बार मातायें ध्यान नहीं देती तथा कर्ण स्राव की कोई औषधि नहीं करतीं, इसी कारण कान में मक्खी आदि घुस जाती है, तथा अण्डे आदि दे देती हैं, इसी कारण कान में से बहुत दुर्गन्ध आती है तथा कृमि पड़ जाते हैं ।

एक छटांक सरसों के तेल में १ तो० तारपीन का तेल व १ तो० कपूर डालकर रखे कान को साफ कर दिन में २–३ बार इस तेल को डाले । इससे कृमि व दुर्गन्ध शीघ्र नष्ट हो जाती है ।

कुकूणक

इस रोग में बच्चों के नेत्रों के वर्त्म में प्रदाह होकर नेत्र वर्त्म में कण्डू होने लगता है, जिसके कारण नेत्रों में बार २ जलस्राव होता है, नेत्रों को खोलने और बन्द करने में कष्ट का अनुभव करता है । थोड़े से प्रकाश से भी पीड़ा बढ़ती है, बच्चा ललाट, नेत्र व नासिका को अपने हाथों से बार २ रगड़ता है, जलापा हरड़ को थोड़ा सा घिसकर गरम कर पिलावे इससे एक–दो दस्त हो जाते हैं, जिससे नेत्रों पर प्रभाव पड़ता है ।

नेत्र बिन्दु—शुद्ध रसौत १ मा०, शहद १ मा०, फिटकरी सफेद १ मा०, गुलाबजल २ तो० सबको चौबीस घण्टे पड़ा रहने दे फिर छानकर रखे यह दिन में २–२ बूंद तीन बार डाले इसके डालने से कुकूणक से उत्पन्न सब विकार नष्ट हो जाते हैं ।

बाल-गुदपाक व गुदभ्रंश

गुद पाक विशेष कर पित्तज अतिसार अथवा सन्निपातज अतिसार की तीव्र अवस्था में होता है, अथवा मल त्याग के बाद माता द्वारा प्रक्षालन प्रोञ्छन की उपेक्षा के कारण गुदा क्षीण हो जाती है, अथवा माता गरम मसाले युक्त चरपरे तेल से तले पदार्थ नित्य खाती रहे जो विष दूषित होकर दूध को दूषित कर देता है ऐसे दूध में द्रवत्व तीक्ष्णता तथा उष्णता अधिक होता है, ऐसे दूध से निर्मित मल के गुदा में लगे रहने के कारण गुदा का चर्म लाल रंग का हो जाता है, पिडिकायें हो जाती हैं, व्रण हो हो जाता है, कण्डु हो जाता है, तथा गुद पाक हो जाता है, बच्चे को अधिक मीठा खिलाने से बच्चे के पेट में छोटे २ कृमि हो जाते है, वे कृमि मल के साथ आकर गुद वलि में एकत्रित हो जाते हैं, इन कृमियों को चुने कहते हैं, ये कृमि गुदा की आभ्यन्तरिक त्वचा को काटते हैं, इसी कारण गुदा लाल हो जाती है, तथा गुदा में कण्डू भी होता है, तथा गुदा पाक भी हो जाता है।

यदि गुदा पाक अतिसार के कारण से हो तो अतिसार की चिकित्सा करने से गुद पाक नष्ट हो जाती है, यदि माता के दूषित दूध के कारण गुद पाक हो तो मां की परीक्षा कर उसकी चिकित्सा करे।

यदि कृमि जन्य गुद पाक हो तो जिस औषधी का प्रयोग करे, कबीला वायविडंग, हल्दी चूर्ण व भुनी सफेद फिटकरी चारों चीजें समभाग ले बारीक चूर्ण बनाले, मात्रा-अवस्थानुसार १ से ४ रत्ती तक मधु अथवा दूध से दिन में तीन बार दे कभी २ एरण्ड का थोड़ा तेल मधु मिला कर दे दिया करें।

लगाने की औषधि

कबीला ले बारीक पीस कर घृत में मिला गुदा में लगावें। रसोत को पानी में पीस कर लगावे। जात्यादि घृत लगावें।

गुद भ्रंश

बलात मल विसर्जन अधिक मल विसर्जन व दौर्बल्य जनित गुद भ्रंश—मुख्यता यही तीन कारण गुद भ्रंश के है। वातज अतिसार में मल आसानी से नहीं गिरता बार २ कूंथना पड़ता है, इससे गुद वलि पर जोर पड़ता है और गुद भ्रंश होने लगता है, जबर दस्ती कूंथ बार मल निकलने से भी ऐसा ही होता है, जो बच्चे कमजोर दुबले पतले होते है, उनकी गुद वलि मे साधारण क्रिया शिथिल हो जाता है, इसी कारण गुद भ्रंश हो जाता है।

चिकित्सा—गुदभ्रंश होने का जोभी कारण हो उसे दूर करे, अगर बच्चे की दुर्बलता हो इसका कारण हो तो उसे पोषक आहार दे। ताजे फल दूध घी इत्यादि सेवन करावे, अगर अतिसार के कारण मल ठीक विसर्जन न होता हो तो अम्लतास के क्वाथ को २-१ बार पिलावे इससे मल निकल जाता है, तथा गुदा पर दबाव कम हो जाता है, जब गुदा बाहर आजावे तो तुरन्त गुदा को अपने स्थान पर बैठावे, गुदा को गर्म जल से धोकर अंगुलियों से ऊपर को चढ़ाने से गुदा अपने स्थान पर बैठ जाती है,

अगर गुदा पूरी बाहर आजाती है तो पुराने चमड़े को जला कर उसकी काली राख बनाले इस राख को बारीक पीस कर घृत मिला रखे मल त्यागने के बाद बच्चे की गुदा में इसे लगा गुदा को ऊपर चढ़ा कर लगोट कस कर बांध दे। ऐसा करने से कुछ दिन में गुद भ्रंश नष्ट हो जावेगा।

शिशु उपदंश

यह रोग माता पिता के द्वारा ही बच्चे को मिलता है बच्चा उत्पन्नहोने के १ १॥ मास बाद अथवा कभी २ इससे भी अधिक दिन बाद इस रोग के लक्षण प्रकट होते हैं जैसे ओंठकेकिनारों मल द्वार व नाक के अन्दर घाव-घाव के कारण नाक बन्द रहती है, इसी कारण स्तन का दूध पीते समय भी श्वास लेने में पीड़ा मालूम होती है शरीर पर ताम्बे के समान रंग के चकते हो जाते है हाथ पैरों में सफेद चकते निकलते है मुँह जीभ तालू व गले मे घाव हो जाते है। आंखों में नाना प्रकार का प्रदाह होता है, ऐसे शिशुकी लम्बाई स्वाभाविक बच्चोंसे कम होती हैं उनका मुख मण्डल परिशुष्क हो जाता है। त्वचा में झुरियां पड़ जाती है, बच्चा बहुत ही दुर्बल व कृश दिखाई देता है, उसके शरीर पर विस्फोट सपूय अथवा पूय रहित हो जाते हैं। शिर पाक शिरास्थी का पिछला भाग पतला व पीत पना सा भासता है, दोनों भौंहों के ऊपर की अस्थी कुछ धंसी हुई सी दिखाई देती है, बच्चे के दांत निकलने पर सामने के चार दांत छेद युक्त हो जाते हैं वृक्क भी दूषित हो जाते हैं ऐसे बच्चों में यकृत और प्लीहा वृद्धि भी देखी जाती है कर्ण पाक हर समय ही होता रहता है, मुख पाक कभी ठीक हो जाता तथा कभी फिर हो जाता है, ऐसा ही चलता रहता है इसके अतिरिक्त अन्य भी कई उपद्रव अवस्थानुसार होते रहते हैं, कई बार ऐसा भी होता है कि उपदंश के सब लक्षण नष्ट हो जाते हैं, परन्तु कुछ समय के बाद पुनः सब लक्षण उत्पन्न हो जाते है।

बच्चे को त्रिफला क्वाथ अथवा नीम के पत्तों के क्वाथ से स्नान करावे, उपदंश के व्रणों पर शिर के व्रणों पर निम्न मलहम लगावे, कबीले को बारीक पीस थोड़ा सरसों तेल डालता जावे, तथा पीसता जावे। इस प्रकार जितना कबीला हो उतना ही तेल लगभग डाल दे फिर थोड़ा पानी डाल कर घोटे तथा पानी को निकालता जावे, इस प्रकार यह मलहम तैयार कर लगावे कर्ण पाव में भी रुई की वर्त्ती बना उसी से यह मलहम अन्दर तक लगावे।

उपदंश मुख पाक—भुना हुआ तूतिया, भुना सुहागा १-१ तोले छोटी इलायची बीज, कत्था दोनों २-२ तोले सबको बारीक पीस कर शु० घी में मिलाले यह दिन में १-२ बार बच्चों के मुख में लगा कर बच्चे के मुख को नीचे को कर दे।

उपदंश ग्रस्त बच्चों को खाने वाली औषधी

शुद्ध पारद १ तोला, शु० गन्धक १ तो० दोनों को बारीक पीस करेले के रस की सात भावना दे ज्वार के समान गोली बनाले, यह गोली दिन में दो अथवा तीन बार दूध अथवा

पानी में घिसकर पिलावे; अगर माता उपदंश से ग्रसित हो तो बच्चे को उसका दूध न दे, इस औषधि के साथ २ बच्चे को कुछ दिन लौह, प्रवालभस्म को भी अवस्थानुसार थोड़ी मात्रा में सेवन करावे, जिससे उसके यकृत, प्लीहा, वृक्क व अस्थि आदि पुष्ट हो तथा रोग ग्रस्त न हो, बच्चे के दांत, मुख, आंख इत्यादि की सफाई का विशेष ध्यान रखे।

आंखों में रसौत व सुहागा भुने को गुलाब जल में घोल कर नित्य आंखों में डाले।

बच्चों को सुपाच्य पौष्टिक भोजन दे। परन्तु मांस, अंडा, मछली इत्यादि न खावें।

बच्चों की यकृत वृद्धि

माता के दूषित दूध पान के कारण अथवा माता को अम्लपित्त अथवा उदर विकार हो अथवा बच्चे को शीत ज्वर आया हो, अपथ्य कर भोजन अथवा मिट्टी खाने के कारण यकृत वृद्धि हो जाती है, अधिकतर मध्य रात्री को नित्य बच्चे को ज्वर हो जाता है, अथवा प्रातः काल ज्वर नहीं होता परन्तु धीरे २ ज्वर हर समय रहने लगता है, यकृत वाले स्थान को दबाने से बालक रोता है. यकृत स्थान पर शूल होता है, मल बकरी की मेंगनी के समान कड़ा होता है, मल का रंग राख के समान अथवा मिट्टी के समान होता है, अधिकतर कब्ज रहती है, रोग की वृद्धि होने पर बालक में रक्त की कमी हो जाती है. नेत्र, मुख, मूत्र, त्वचा पीले हो जाते है, आगे रोग वृद्धि होने पर शोथ के कारण हाथ-पैर फूल जाते हैं. यकृत की अधिक वृद्धि होने पर शोथ के साथ उदर में पानी भी इकट्ठा हो जाता है, परन्तु यह लक्षण उत्पन्न होने पर रोगी असाध्य अवस्था को प्राप्त हो जाता है।

औषधी चिकित्सा—जिन कारणों से यह रोग उत्पन्न हुआ हो प्रथम उनको नष्ट करे।

लौह भस्म १तोला, नौसादर २ तो०, कलमी शोरा २ तो०, रेवन्द चीनी १ तोला सबको पीस कर रखे यह औषधी १ से २ रत्ती दिन में २-३ वार सेवन करावे अर्क सौंफ अथवा क्वाथ सौंफ के साथ।

शोथ युक्त यकृत वृद्धि मे पुनर्नवा मण्डूर थोड़े त्रिफला क्वाथ से सेवन करावे, छोटी पीपल १ र०, नौशादर १ र०, दोनों को बारीक पीस कर १ माशा मिश्री मिला कर घोटे इसकी छः खुराक बनाले दिन में यह ३ खुराक अर्क सौंफ अर्क मकोय अथवा पानी से सेवन करावे, यह औषधि वैसे सूक्ष्म है, परन्तु बहुत मूल्यवान व बड़े २ नुस्खों से बड़ा अच्छा कार्य करती है।

बालक को सुपाच्य व हलका भोजन दे अगर हाथ पैरों पर शोथ हो तो बालक को नमक वाली चीज न दे यवों का पानी दूध में मिला कर दे साबूदाना उबाल कर उसको छान ले, उसमे थोड़ा जल मिला कर दे। मीठे स्वादु फलों का रस सेवन करावे।

शीर्षाम्बु की चिकित्सा

यह रोग उत्पन्न होने पर यदि बालक का भाग्य प्रबल हो तथा योग्य चिकित्सक प्रथम मे ही इसे समझ ले तो ही शिशु स्वस्थ होता है।

पहले एक तरफ से मस्तक (शिर) कुछ बड़ा भासता है, परन्तु ९–१ रोज में ही सारा शिर बहुत बड़ा हो जाता है।

होता यह है कि मस्तिष्कावरण झिल्ली में एक तरह की छोटी २ गोटिया होती है। यही शोथ युक्त हो जाती है, तथा मस्तिष्क में जल सञ्चय हो जाता है यह रोग १ वर्ष से ३–४ वर्ष तक के शिशुओं को ही होता है।

कारण—शिशु के शिर में चोट लगना शिरोस्थी में व्रण होना उपदंश जनित अस्थिक्षत साम्निपातिक ज्वर में अपथ्य से दूषित वातादि दोषों के कारण उदर कृमि फुफ्फुस प्रदाह रोमान्तिका इत्यादि में ठीक प्रकार देख भाल न करना बालक के दांत निकलते समय भी शिशु की ठीक रख रखाव न करने से भी यह रोग हो जाता है।

प्रथम शीतज्वर होता है, परन्तु कई बार बिना शीत के भी ज्वर हो जाता है, ज्वर १०३–१०४ डिग्री तक बढ़ जाता है। शिर शूल इतना तीव्र होता है कि शिशु इसी के कारण चिल्ला २ कर रोता है, रोशनी व आवाज भी सहन नहीं होती—इसी से प्रतीत होता है कि रुग्ण के नेत्र ज्योति व श्रवण शक्ति भी क्षीण हो जाती है, रुग्ण के नेत्र लाल हो जाते हैं। तथा मन्थरज्वर के समान प्रलाप होता है।

मुँह व गर्दन की मांस पेशियों में खिचांव होता है, कुछ बिना खाये पिये भी वमन होने को होती है, मल शुष्क व काला हो जाता है, शिशु बिस्तर पर पड़ा अध मुंदी आँखों से शिर को इधर–उधर पटकता है, दांतों को कटकटाता है, श्वास प्रश्वास अनियमित हो जाता है, अन्त में शिशु का मल मूत्र रुक जाता है, गर्दन की पेशियों में और भी खिचाव होता है, सारे शरीर में ठन्डा पसीना हो जाता है, इसी अवस्था में ही पक्षाघात का आक्रमण होता है।

उपचार—प्रथम रोगी के शिर के बाल मुड़वा दें, सिरस की हरी छाल को चन्दन के समान घिस कर शिर पर लेप कर दो, तथा ऊपर से कपड़ा लपेट दो।

औषधी—शु० रस कपूर १ तो०, लौंग चूर्ण १ तो०, इन्द्रायण मूल चूर्ण १ तो०, छोटी इलायचों का चूर्ण सबको खरल में डाल बारीक पीसे फिर इन्द्रायण फल के रस की तीन भावना दे इसी प्रकार अमलतास फल क्वाथ की तीन भावना देकर १–१ र० की गोली बनाओ दिन में ३ बार १–१ गोली पीस शहद से चटाये।

वंशलोचन १ मो०, केशर अच्छी १ मा०, दोनों को बारीक पीस रखे यह १–१ र० शहद से ४–४ घन्टे बाद दे अगर रोगी को कब्ज हो तो ग्लेसरीन की वती लगा कर मल लाने की कोशिश करे अगर ग्लेसरीन वत्ती न मिले तो सनलाइट साबुन को काट कर गोल बत्ती के समान बना उसपर कोई स्नेह (घी) लगा कर मल द्वार (गुदा) में रखने से मल आ जाता है, रोगी को आराम से लिटाये रखे। रोगी के स्थान पर तेज रोशनी न करे तथा शोर गुल भी न दे उसके वस्त्र साफ सुथरे हो कमरे में सुगन्धि धूप जलावे।

पथ्य—अंगूर संतरे मुसम्मी का रस कच्चे नारियल का पानी पानी में ग्लूकोज मिला कर देता रहे।

बाल फुफ्फुस शोथ-प्रदाह

(बाल न्यूमोनिया)

प्रथम बालक को कम्प अथवा शीत लग कर ज्वर होता है। शुष्क खांसी आती है, वक्ष मे तीव्र वेदना होती है, बालक को निद्रा नही आती तथा भूख भी नही लगती श्वास जल्दी २ चलती है, गले में घर २ की आवाज होती है, दिन की अपेक्षा रात में बच्चा अधिक बेचैन रहता है, क्योंकि रात्री मे रोग के लक्षण कुछ बढ़ जाते है, मूत्र गर्म व कम मात्रा मे करता है, खांसते २ नेत्र लाल हो जाते है कभी २ वमन भी होजाती है वमन में बलगम निकलने से बच्चा कुछ चेन अनुभव करता है!

उपचार व चिकित्सा

त्रिभुवनकीर्ति रस, श्रृंग भस्म व शु०-सुहागा तीनों को समभाग लेकर खरल कर बच्चों की अवस्थानुसार १ से २ र० तक ४-४ घन्टे बाद अदरक व मधु से दें बच्चा हृदय शूल अथवा निबलता अनुभव करे तो कस्तूरी भस्म चौथाई र० बीच मे १-२ बार दे।

रीठे की काली गुठली की गिरि १ से २ र० तक मधु से चटाने से न्यूमोनिया में लाभ होता है तारपीन के तेल मे थोड़ा कपूर मिला कर शिशु की छाती पर मले, अथवा तिल के तेल मे थोड़ा नमक पका कर मले इससे शूल का शमन होगा तथा कफ का निःसारण एलवा व हींग भुनी दोनों समभाग ले उष्ण जल से १ रत्ती बालक को देने से मल मूत्र ठीक हो जाता है, वात कफ का अनुलोमन होता है।

वक्ष को गर्म रखे जिससे शोथ न बढ़े अतः छाती को हमेशा फलालेन या रुई से ढक कर रखे पानी में थोड़ी सोंठ डाल कर उबाले वही कुछ गुण गुणा पानी बच्चे को पीने को दे, यदि बच्चा माता का दूध पीता हो तो माता को भी पथ्य से रहना चाहिये, पिप्पली डाल उबाला दूध अथवा पांच मुनक्का को डाल कर उबाला हुआ जल ही बच्चों को दे, सर्दी व शरद हवा से बच्चे को बचा कर रखे।

बाल मुख-पाक

बच्चों को यह रोग बहुत अधिकता से होता है

यह रोग दोषानुसार तीन, चार अथवा पांच प्रकार का प्राचीन आचार्य मानते है।

कारण—दूध पीने के पात्रों का ठीक साफ न होना रुग्ण माता अथवा गाय का दूध पीना दांत निकलते समय उदर विकार के कारण मुख पाक का होना।

वायु के कारण होने वाले मुख पाक में सुई चुभाने के समान पीड़ा होती है।

पित्त के कारण मुखपाक लाल रंग का होता है, जिसे लाल मुखपाक कहते हैं, इसमें जलन अधिक होती है। कफ के कारण उत्पन्न मुखपाक मे अधिक पीड़ा नहीं होती इसका पाक सफेद रंग का होता है इसके छालों मे खारिश हुआ करती है।

मुख पाक मे मुख की भीतरी झिल्ली और मसूढ़ों मे शोथ हो जाता है। जिह्वा, तालु, गाल सब स्थान पर छाले हो जाते हैं, लाल स्राव बहुत अधिक हो जाता है बच्चा स्तन पान नहीं कर सकता।

यदि इसका कारण कोष्ठबद्धता हो तो बालक को थोड़ा सा एरण्ड तेल मधु मिला कर दें ।

पीपल की सूखी छाल का चूर्ण सुहागा भुना दोनों को बारीक पीस मधु मिलाकर मुख के छालों पर लगावे ।

एक र० भुना तोला थोथा बारीक पीस एक तो० शुद्ध घी मे मिलाकर छालों पर लगावे ।

बड़ी इलायची बीज, सुपारी दोनों को भून कर बारीक पीस ले जितना यह हो उतना ही कत्था मिला छालों पर छिड़के, त्रिफले के क्वाथ से कुल्ल करावे ।

रसौत, गेरू, भुनी फिटकरी, भुना सुहागा सम भाग ले मधु मे मिलाकर छालों पर लेप करे ।

अगर मुखपाक के साथ अतिसार भी हो तो शंखभस्म १ र०, सोडा बाईकाब १ र०, ऐसी दिन मे ३–४ पुड़िया खिलावे। अगर बालक बहुत ही कृश हो तथा उसका यकृत भी ठीक न हो तो १ र० लोह भस्म, एक मा० सोडा बाई-कार्ब दोनों को बारीक पीसकर ८ पुड़ियां बनाले १–१ पुड़िया सुबह शाम पानी अथवा दूध से दें

जिस कारण से मुख पाक हुआ हो उस कारण को दूर करने की कोशिश करे। बालक के मुख को दिन मे कई बार स्वच्छ करे ।

बाल धनुर्वात (टिटेनस)

नवजात शिशु के नाभि नाल काटते समय असावधानी से यह रोग हो जाता है, आघात के दस दिन के अन्दर ग्रीवा व पृष्ठ वंश की मांस पेशियों में खिचाव होता है तथा अनम्यता के कारण ही शरीर धनुष के समान अन्दर की ओर अथवा बाहर की ओर खिच जाता है। अर्थात् इस रोग मे स्नायु सम्पूर्ण रूप से खिच जाते हैं, रोग बढ़ने पर बच्चा न तो दूध इत्यादि पी सकता है और न ही रो सकता है, इस रोग में ताप प्राकृत ही रहता है, कभी २ थोड़ा ताप बढ़ भी जाता है, पसीना आता है तृषा अधिक होती है, मुख बार २ सूखता है । स्नायु के तनाव के कारण मांस पेशियों के तनाव से श्वास नलियों पर भी दबाव पड़ता है, तथा श्वास रुक जाता है और रोगी की मृत्यु हो जाती है ।

चिकित्सा—

महा नारायण तेल थोड़ा सा गरम जल में मिला पिचकारी से गुदाके द्वारा चढ़ावे । अथवा इसी प्रकार एरण्ड तेल चढ़ावे ।

वृहत बालचितमणि, अभ्रक भस्म तथा ताम्र भस्म, जटामांसी के क्वाथ से दे, अथवा मृगमदा-सव थोड़ा २ दे । सर्प गन्धा चूर्ण थोड़े से मधु से चटावे । इससे शिशु को कुछ निद्रा आजाती है, बालक के सारे शरीर मे महा नारायण तेल अथवा तिल तेल गर्म कर सारे शरीर पर मले तेल की पिचकारी देने से बालक को १–२ दस्त खुल कर हो जाते है, इससे मांस पेशियों के तनाव मे कमी होती है, बालक को बार २ थोड़ा गर्म जल पिलाते रहे बालक को ऐसे कमरे में रखे जिसमे अधिक शोर न हो अधिक प्रकाश न हो सीधी वायु रोगी की शय्या पर न लगे ।

बाल नेत्र रोगों पर योग

सफेद फिटकरी पांच ग्राम, रसोत १० ग्रा०, कलमी शोरा ५ ग्रा०, नौसादर टिकरी का ५ ग्रा०

सबको बारीक पीस एक बोतल अर्क गुलाब में डाल कर एक सप्ताह पड़ा रहने दे । फिर छान कर बोतल मे रखे, बच्चों के नेत्र विकारों के लिये यह लोशन बहुत ही उत्तम है, नेत्रों का आना लाल होना पानी आते रहना पानी आंखों का चिपचिपा रहना नेत्रोंका शोथ होना इत्यादि रोगों में यह बच्चों को दिन मे तीन चार बार डाले ।

नेत्रों का काजल

हल्दी साबित, हरड़ बड़ी, बहेड़ा आमला सब साबित ले, आग मे जलावे इस प्रकार जलावे कि उनकी सफेद राख न बने बल्कि काला कोयला बने चारों के समभाग कोयले ले बारीक पीस कपड़छन करे, यह कपड़ छन किया हुआ द्रव्य ४ तोले ले इसे कांसे की थाली में डाल कर २-२ ४-४ बूंद सरसों का पका हुआ तेल डाल कर कांसे की कटोरी से रगड़े इसमे १ तोला बारीक पिसी हुई छोटी इलायची के बीज व ३ मासे देशी कपूर डाल थोड़ा २ तेल डाल कई दिन रगड़ाई करे तोबहुत सुन्दर काजल तैयार हो, यह काजल बालकों के नेत्रों मे नित्य नही तो ३-४ दिन मे अवश्य लगावें इसके प्रयोग से बच्चों की आंखों मे कोई विकार नहीं रहता तथा नेत्र सुन्दर होते हैं। इसका प्रयोग बड़े भी कर सकते हैं।

बचो के दाँतों के लिये मंजन

शरीर के समान ही बच्चों के दांत भी कोमल होते है । उन पर कोई ऐसी चीज नही मलनी चाहिये जिससे दांतों की ऊपर की परत नष्ट हो क्योंकि उसके नष्ट होने से दांतों की आभा नष्ट हो जाती है ।

सेंधा नमक १ छटांक, सफेद फिटकरी भुनी १ छटाक, पीपल वृक्ष की छाल की राख सफेद आध पाव तीनों को बारीक पीस कर रखे यह बालकों के दांतों पर अपनी अंगुलियों से मले, इनसे दांत स्वच्छ चमकदार तथा सुन्दर रहते है, कभी २ थोड़ा सरसों का कच्चा तेल लेकर बच्चों के मसूढ़ों व दांतों पर मले ऐसा करने से बालक के मसूढ़े मजबूत होते हैं तथा दांत भी मजबूत व सुन्दर रहते है ।

बालकों के कान में डालने के लिये तेल—तिल तेल १ पाव सरसों का तेल १ पाव परसकी का तेल १ पाव तीनों को मिला कर लोहे की कढ़ाई मे पकावे पकते २ इसी में १ तोला रतन जोत डाल दे ।

इस तेल को छान कर रखे इसे कभी २ बालको के कान में डालते रहने से बालक को कर्ण विकार नही होता जो कुछ होता भी है, वह इसके डालने से नष्ट हो जाता है ।

कनफेड (कर्ण मूलक ज्वर) यह भी एक संक्रामक रोग है, लाल स्राव नलिकाओं के अवरोध के कारण कर्ण मूलिका ग्रंथियों में प्रदाह व शोथ हो जाती हैं, यह शोथ जैसे २ बढ़ती है । ज्वर भी होता है जो कि १०२ ढाई डिग्री तक हो होता है । वैसे ३-४ दिन के बाद शोथ हटने लगता है तथा ज्वर भी हट जाता है । परन्तु कई बार एक ओर से हट कर शोथ दूसरे पार्श्व मे हो जाती है, इस प्रकार रोग हटने मे लगभग एक सप्ताह लग जाता है,

चिकित्सा रोगी का एकांत में रखे शुद्ध टंकण लक्ष्मी बिलास मृत्युजय इत्यादि मधु से दे, आंवला व हल्दी दोनों को बारीक पीस शोथ पर लेप कर दे, रुग्ण बालक को अन्य बच्चों के सम्पर्क मे न आने दे । दूध चाय साबूदाना आदि पथ्य दे, पीने के लिये भी उष्ण जल ही दे।

बच्चों के कुछ पेय

जब बालक कुछ खाने पीने लगे तो उसे निम्न पेय सेवन करावे । थोड़े साबूदाने को पानी में उबाल कपड़े से छान उस पानी मे थोड़ी चीनी या शकर डाल थोडा २ करके पिलाये, इसी प्रकार ८-४ मुनक्के पानी मे उबाल इन्हे हाथ से मसल छान कर थोड़ा २ पिलावे, इसी प्रकार सेव को उबाल कर मसल छान थोडा चीनी मिला थोड़ा कर पिलाये इसी प्रकार अगर नमकीन देना हो तो थोड़े से चने उबाल कर पानी छान जरासा नमक मिला पिलावे, इसी प्रकार आलू मटर,सलजम इत्यादि सब्जियों को उबाल छान नमक मिला पिलावें, इसी प्रकार अदल बदल कर यह पेय देते रहने से बच्चे के स्वास्थ्य मे काफी तबदीली होती है, यह पेय ज्यादा देर मे रखे हुये नही देना चाहिये यदि ताजा ही बना कर दे तो बहुत अच्छा है, नही तो चार घन्टे से पहले ही उसका उपयोग करना चाहिये-इससे ज्यादा देर के रखे पेय बालकों को नही पिलाने चाहिये-।

गृह-चिकित्सा

"बालानां रोदनं बलम्"

आदरणीय बहन डा० श्रीमती इन्दिरादेवी जी शास्त्रिणी, आयुर्वेदमणि, वैद्या वाचस्पति संचालिका—नारी आरोग्य मन्दिर मुरलीधरबाग हैदराबाद (आं० प्र०)

आप भारत की गण्य मान्य वैद्याओं मे से हैं, हमारे परिवार पर आपका विशेष स्नेह है, आपने इस अक के लिये 'बालाना रोदन बलम्' तथा 'हल्दी' पर लेख भेज कर जो आशीर्वाद दियाहै आशा है माला के पाठक इससे लाभ उठावेंगे।
—वि० स० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

एक पुरानी कहावत है; 'बालानां रोदन बलम्" बच्चों का रोना ही उनका सबसे बड़ा बल है। शिशु परमहंस होता है। अबोध होता है। वह अपने कष्टों को कह सकने में असमर्थ होता है, जब उसे कोई शारीरिक या मानसिक कष्ट होता है, तो वह रो पड़ता है। अपने आंसुओं द्वारा ही वह अपने कष्टों की कहानी कहता है। चतुर माताए तथा धात्री शिशु के रोने से ही उसके कष्टों का अनुमान करती है और उसे दूर करने का तुरन्त प्रयत्न करती हैं। जो माताएं आलस्य के कारण शिशुओं के रोने की उपेक्षा करती हैं वे भारी भूल करती हैं और अपने सबसे बड़े कर्तव्य की अवहेलना करती हैं कारण, माता ही शिशुओं के जीवन का सबसे बड़ा आधार है, सहारा है। माता पर ही शिशु के लालन पालन और सुरक्षा का भार है। बच्चों को जब कोई शारीरिक कष्ट होता है तो वे बोलने मे असमर्थ होने के कारण उस विशेष अंग का स्पर्श करके ही अपने कष्ट की सूचना देते हैं पेट में कष्ट होने पर बालक वार २ पेट को छूकर रोता है। उसके इस सकेत द्वारा समझ लेना चाहिये कि शिशु के पेट में कष्ट है, पीड़ा है। यों तो शिशुओं के सभी रोग कष्टप्रद हैं, किन्तु उनमें पेट का रोग सबसे अधिक दुःख देने वाला होता है।

निदान

माताओं के खान-पान, रहन-सहन और चाल व्यवहार का बहुत अधिक प्रभाव शिशुओं के स्वास्थ पर पड़ता है। शिशुओं को एक निश्चित समय पर ही दूध पिलाना या कुछ खिलाना चाहिये। जो माता प्यार के कारण थोड़ी थोड़ी देर मे बच्चों को दूध पिलाती रहती हैं या कुछ न कुछ खिलाती रहती है, उनके बच्चों की पाचन शक्ति खराब हो जाती है। शिशुके समान और अपान वायु मे विकार पैदा हो जाता है। मल सूख जाता है, शौच साफ नही होता है। शौच साफ न होने के कारण शिशु का पेट फूलने लगता है, उसके पेट और शिर में दर्द पैदा हो जाता है। प्यास बढ़ जाती है। शरीर में भारीपन आ जाता है। शिशु को वमन आने लगता है। वह इन सब कष्टों के कारण कई बार रोते २ वेहोश हो जाता है।

चिकित्सा

यानी दूध पीने वाले शिशु का पेट फूलता है या वह दूध फेकता है तो सब से पहले माता के आहार में परिवर्तन करना चाहिये, माता के भोजन में दूध फल, चावल गेहूँ की रोटी तथा मूंग या तुवर (अरहर) आदि की दाल सुपाच्य एवं सात्विक भोजन की अत्यन्त आवश्यकता है। माता के सात्विक आहार विहार का शिशु के स्वास्थ्य पर चमत्कारी प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त बच्चा के पेट फूलने कब्ज होने और दूध फेकने पर निम्न औषधी का प्रयोग लाभ कारी है।

प्रयोग नं० १—बड़ी हरड़ का चूर्ण ३ मा०, बीज निकाले मुनक्का ६ मा०, जल के योग से दोनों चीजों को सिल पर बारीक पीस कर ५ तोला गाय के दूध मे और ५ तोला जल मे भली भांति मन्द आच से पकावे। जब पानी जल जाय केवल दूध शेष रह जाय तो इसे कपड़े से छान लेना इसे २-२ घन्टों के बाद एक छोटे चम्मच से २ चम्मच तक अर्थात् ३ से ६ माशा तक इस दुग्ध के पिलाने से बच्चों का शौच साफ होता है। और पेट फूलना बन्द हो जाता है।

प्रयोग न० २—६ मा० गुलकन्द को २ तो० गरम जल मे घोलकर छान लेना चाहिये। २-२ घन्टों बाद ३ से ६ मा० तक इस औषधि को शिशु को पिलाने से शौच साफ होकर बच्चे का पेट फूलना या आनाह का कष्ट दूर हो जाता है।

प्रयोग न० ३—छोटी इलायची के दाने, भारंगी, सोंठ घी में भुनी हुई हींग, सेंधा नमक सब समान भाग १-१ तो० का बारीक चूर्ण खरल मे डालकर भली भाति घोटना और साफ शीशी मे भर कर रख लेना चाहिये। १ से २ र० तक इस चूर्ण को छोटे चम्मच भर गुनगुने जल मे घोल कर २-२ घन्टे बाद शिशु को पिलाने से शिशु के पेट का फूलना, पेट का दर्द तथा अपचन का कष्ट दूर होता है।

प्रयोग न० ४—१ चावल भर भुनी हुई हींग को छोटे चम्मच भर गुनगुने पानी में घोलकर शिशु को प्रातः सायं केवल दिन में दो बार पिलाने से वायु विकार दूर होकर शिशु के पेट फूलने का कष्ट दूर होता है।

प्रयोग नं० ५—काकड़ासिगी, केसर, वंशलोचन, नागकेसर, मुलहठी, जायफल, सब समान भाग १-१ तो० का सूक्ष्म चूर्ण खरल में डालकर भली भांति घोटना और साफ शीशी में भर कर रखना, १ से २ र० तक इस चूर्ण को माता का दूध या गोदूध मे मिलाकर पिलावे अथवा ४ से ८ र० तक शुद्ध शहद मे मिलाकर चटाने से शिशु का अपचन, मन्दाग्नि, पेट का फूलना तथा पेट का दर्द आदि सभी प्रकार के उदर विकार दूर होते है।

निद्रा और स्वास्थ्य

ले०—डा० इन्द्रादेवी शास्त्रिणी

शरीर को निरोग रखनेके लिए नींद कितनी आवश्यक है, इस पर दो राये नहीं हो सकती, बालकों को अपने शरीर के निर्माण की आवश्यकता बहुत अधिक है सच तो यह है कि जिस किसी को भी अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति को अधिक से अधिक बढ़ाने और बनाये रखने की इच्छा हो, उसे तो अच्छी, गहरी और लम्बी नींद मिलनी ही चाहिए । हमारे यहाँ इस बात पर अधिक जोर दिया गया है । भोजन और नींद इन दोनों स्वाभाविक क्रियाओं की उपेक्षा कर के शरीरकी रक्षा नहीं की जा सकती है । शरीर अपना काम तभी पूरा कर सकता है, जब वह इस योग्य बना रहे शरीर का स्वस्थ और बलिष्ठ बनाये रखने के लिये जहां समुचित भोजन, आराम और परिश्रम की आवश्यकता है, वहीं उसके लिये गहरी और पूरी नींद की बड़ी आवश्यकता है ।

आज कल अकसर नींद की कमी के कारण हम स्नायविक शक्तियों का ह्रास करने को मजबूर हो जाते हैं । नींद स्नायु-सेलो को बलशाली टूटे सेलों की मरम्मत और नए सेलों का निर्माण करती है; कम सो कर लोग अपने स्नायुओं को थका डालते हे और कमजोर बनाते है । प्रकृति ने रात का समय सोने तथा दिन का समय जागने और काम करने के लिये बनाया है । कभी २ इस नियम मे बाधा पड़ जाय, तो कोई हर्ज नही, परन्तु यदि कोई व्यक्ति रात्रि मे जागना अपने स्वभाव का हिस्सा बना ले, तो वह मूर्ख प्रमाणित होगा । उसका स्वास्थ्य धीरे २ गिरता जायगा, उसका शरीर कमजोर और क्षीण हो जायगा, एसे व्यक्ति आरंभ मे भले ही अपनी इस बुरी आदत पर ध्यान न दें, किन्तु आगे चल कर उन्हें उसका बुरा फल भोगना पड़ेगा । अधिक जागने वाले व्यक्तियों की स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है । वे अल्पायु भी हो जाते हे । उनके जीवन मे आनद और उल्लास की मात्रा कम होती जाती है। स्वास्थ्य जैसा होगा, आनन्द के अनुभव करने की क्षमता भी तो वैसी ही हो जायगी ।

यदि आज कल अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों को यह नही समझा पाते कि क्यों उन्हे जल्दी सोना चाहिये । जल्दी सोओ और जल्दी उठो, कि पुरानी शिक्षा कितनी अच्छी थी । जो बालक अपने शरीर के विकास को कायम रखना चाहते है, उन्हे गहरी और अच्छी नींद लेनी चाहिये, ऐसा करने से उनका शरीर स्वस्थ रहता है, दिमाग के स्नायु बलवान बनते है और स्मरण-शक्ति बढ़ती हे । गहरी और लम्बी नींद न लेने से हिस्टेरिया, मृगी और पागलपन आदि अनेक दिमागी बीमारियां पैदा ही होती है । बालकों के लिये कम से कम ८ घंटा और जवानों के लिये ६ घंटा सोना जरूरी है । अच्छे स्वास्थ्य और चिर जीवन के लिये गहरी नींद की बड़ी आवश्यकता है ।

वनस्पति जगत की रानी—हल्दी

ले० डा० इन्दिरादेवी शास्त्रिणी आयुर्वेदमणि

आज मैं आपको हल्दी की उपयोगिता के विषय मे कुछ दिग्दर्शन कराना चाहती हूँ। हल्दी का प्रयोग देवपूजा से लेकर स्वास्थ्यरक्षा तक मे किया जाता है।

प्रतिश्याय (जुकाम)

यदि आपको प्रतिश्याय (जुकाम) हो गया है। नाक से पानी गिर रहा है तो आप हल्दी की गाठ को सुई मे चुभोकर जलाइये और उसके धुआं को नाक से सूंघिये। दिन मे ३-४ बार यही क्रिया कीजिये। आपका प्रतिश्याय शीघ्र दूर हो जायगा।

अथवा

रात्रि मे सोते समय एक स्वच्छ पात्र अग्नि पर चढ़ाइये उसमे १ तो० गोघृत डालिये। जब घृत थोड़ा गरम हो जाय तो उसमे आवश्यकतानुसार ३ मा० से ६ मा० तक पिसी हुई हल्दी डालिये, हल्दी के कुछ लाल हो जाने पर उसमे १५ से २० तो० तक इच्छानुसार दूध डालिये। उसे पकाकर हल्दी की स्वर्णवर्णा (सुनहली) चाय बनाइये। इस चाय को पी कर चुपचाप सो जाइये। आपका प्रतिश्याय, अंगमर्द आदि सभी विकारों के साथ दूर हो जायगा। इस चाय मे अपनी रुचि के अनुसार गुड़, शक्कर या मिश्री डालना न भूलिए। इस स्वादिष्ट तथा गुणकारी चाय को प्रातः साय तथा रात्रि मे ३ बार पीजिए। प्रतिश्याय तथा रक्तविकृति आदि सभी दूर होंगे।

अथवा

हरिद्रा (हल्दी)	६ मा०
अजवायन	६ मा०
गुले बनप्सा	६ मा०
जटामासी	६ मा०
काली मिर्च	१ मा०

यह एक मात्रा है।

विधि—सभी द्रव्यों को मोटा कूटकर २० तो० जल में १२ घन्टा भिगोइए। अनन्तर अग्नि पर चढ़ाकर १ तो० क्वाथ सिद्ध कीजिये। इस क्वाथ मे २ तो० मधु (शहद) मिलाकर प्रातः साय सेवन करने से प्रतिश्याय शीघ्र दूर होता है।

मसूरिका (शीतला)

पिसी हुई हल्दी	५ तो०
निम्बफल की गिरी	५ तो०
बहेड़े की गिरी	५ तो०

विधि—सभी द्रव्यों के चूर्ण को जल से भली भाति खरल कीजिये और ४-४ र० की गोलियां बनाकर छाया मे सुखवा लीजिये। ६-६ घण्टे के बाद १-१ गोली दिन मे चार बार दीजिये। मसूरिका का कष्ट दूर होगा। छाले पकेंगे नहीं, शीघ्र सूख जाएँगे।

विशेष—यदि उपर्युक्त योग में ५ तो० मुक्ता शुक्ति की भस्म मिला लीजिए तो योग और भी अधिक गुणकारी हो जायगा।

चोट लगना

यदि आप कहीं ऊंचे से गिर पड़े हैं या अन्य किसी कारणवश शरीर में चोट लगी है। रक्त नहीं बहा है ! समस्त शरीर में पीड़ा होती है तो १ मासा से ३ माशा तक हल्दी का चूर्ण फांक कर ऊपर से शकर या शहद मिला कर १ पाव गर्म दूध पीजिये शरीर पीड़ा दूर हो जायगी। प्रातः तथा रात्रि में सोते समय इस योग का उपयोग कीजिये। लाभ होगा।

नारियों का सोम रोग

१—पिसी हुई हल्दी	५ तोला
२—आंवले का चूर्ण	१० „
३—अशोक की छाल का चूर्ण	२० „
४—गुलकन्द	४० „

विधिः—सायंकाल के समय किसी मिट्टी के पात्र में इच्छानुसार १५ या २० तोला पानी डालिये और उस पानी में २ तोला पूर्वोक्त औषध के मिश्रण को डाल कर १२ घन्टे भिगाइये। प्रातःकाल औषध को मल कर मोटे कपड़े से छानिये। इस हरिद्रादि हिम में २॥ तोला गुलकन्द मिला कर सुबह शाम २ बार सेवन कीजिये सोमरोग के कष्ट दूर होंगे।

अब मैं अपनी आत्मकथा की सीमा में २ घृतों का उल्लेख करती हूँ। इससे आप जान सकेंगे कि लोक-कल्याण तथा जनता के कष्टों को दूर करने में कितनी प्रभाव शालिनी हूँ।

त्रिफला घृत

१—हल्दी	२ तोला
२—दारु हल्दी	२ „
३—हरड़ की बकली	२ „
४—बहेड़े की बकली	२ „
५—आंवले की बकली	२ „
६—गिलोय (गुच)	२ „
७—पीली कटेरी की जड़	२ „
८—सफेद कटेरी की जड़	२ „
९—पुनर्नवा की जड़	२ „
१०—सोना पाठा की छाल	२ „
११—रास्ना	२ „
१२—शतावरी	४ „
१३—गोघृत	१ सेर
१४—गोदुग्ध	४ सेर

विधि.—पूर्वोक्त काष्ठादि औषधों को कूट, पीस तथा कपड़े से छान कर सूक्ष्मचूर्ण बनाना, इस चूर्ण में आवश्यकतानुसार गोदुग्ध मिला कर तथा जलसे कल्क बनाना। अनन्तर किसी स्वच्छ कलई किये हुये पात्र में गोघृत, गोदुग्ध और कल्क डाल कर अग्नि पर चढ़ाना तथा घृतपाक विधि से घृत सिद्ध करना। इसे त्रिफला घृत कहते हैं।

मात्र १ तोला से लेकर [illegible] तोला तक।

अनुपान—मिश्री या मधु (शहद) मिला हुआ गोदुग्ध।

समय—सुबह शाम या रात्रि में सोते समय,

रोग—नारियों का ऋतुदोष, रजोविकार, योनिरोग तथा गर्भधारण की अक्षमता। पुरुषों की नेत्र ज्योति की कमी, भ्रम, विस्मृति एवं दुर्बलता आदि।

फल घृत

१—हल्दी	१ तोला
२—दारु हल्दी	१ ,,
३—मजीठ	१ ,,
४—मुलहठी	१ ,,
५—कुष्ठ (कूठ)	१ ,,
६—हरड़ का बक्कल	१ ,,
७—बहेड़ा की बकली	१ ,,
८—आंवला की बकली	१ ,,
९—वरियारा की जड़	१ ,,
१०—शतावर	१ ,,
११—दुधिया बच	१ ,,
१२—अजमोद	१ ,,
१३—प्रियंगु	१ ,,
१४—कुटकी	१ ,,
१५—कमल के फूल	१ ,,
१६—मुनक्का	१ ,,
१७—कुमुद के फूल	१ ,,
१८—सफेद चन्दन	१ ,,
१९—लाल चन्दन	१ ,,
२०—मिश्री	१ ,,
२१—असगन्ध	१ ,,
२२—शतावरी का क्वाथ	४ सेर
२३—गोघृत	१ सेर
२४—गोदुग्ध	५ सेर

विधि—समस्त काष्ठादि औषधों को कूट, पीस तथा कपड़े से छान कर सूक्ष्म चूर्ण बनाना। इस चूर्ण को १२ घन्टे ४० तोला गोदुग्ध में भिगोकर उक्त क्वाथ से कल्क तयार करना।

शतावरी क्वाथ

४० तोला शतावरी के मोटे चूर्ण को ८ सेर पानी में १२ घन्टे भिगाकर अग्नि पर पात्र को चढ़ाना तथा ४ सेर जल शेष रहने पर पात्र को अग्नि से उतारना एवं मोटे कपड़े से छान लेना। इसी शतावरी क्वाथ को 'फलघृत' के निर्माण के लिये उपयोग में लेना।

किसी स्वच्छ पात्र में गोघृत १ सेर ४ सेर, शतावरी क्वाथ ४ सेर तथा पूर्व सिद्ध कल्क को डाल कर पात्र को अग्नि पर चढ़ाना तथा घृत पाक विधि से घृत को सिद्ध करना। यही फल घृत' है। इसे किसी कांच के चौड़े मुख वाले पात्र में सुरक्षित रखना और शुभ मुहूर्त देख-कर उपयोग में लेना।

१—मात्रा-६ माशा से १ तोला तक।

२—अनुपान-कवोष्ण (थोड़ा गर्म) गोदुग्ध।

३—समय-सुबह शाम अथवा रात में सोने के समय।

४—रोग-नारियों का ऋतुदोष; सभीप्रकार के योनिरोग, गर्भ समय क्षयदोष मृतवत्सादोष कन्यासन्तानजनन बिकार तथा बन्ध्यत्व आदि उपताप दूर होते हैं। पुरुषों के सभी प्रकार के वीर्यदोष दूर होते हैं और पुरुषत्व शक्ति की वृद्धि होती है।

उपसंहार

मैंने लोक कल्याण के लिये अत्यन्त संक्षेप से अपनी यह आत्मकथा लिखी है। आशा है, आप सब लोग इससे लाभ उठाएंगे।

सर्व रोग निरोधक उपाय

आदरणीय बहन श्री विटोली देवी शुक्ला वैद्या
ग्राम कोरिगावाँ पो० अब्दुल्लानगर जि० हरदोई

आपने सर्व रोग निरोधक उपाय नामक एक छोटा सा योग भेज कर इस अक के लिये जो सहयोग दिया है, उसके लिये धन्यवाद।

वि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

आर्य ग्रन्थों की यत्र तत्र बिखरी हुई पांडु लिपियों से उद्भूत प्रयोग जनता जनार्दन की सेवा में प्रेषित है। कहते हैं महाभारत की समरांगण भूमि मे महर्षि द्रोणाचार्य जी का अनेक घावों से व्याप्त शरीर पड़ा हुआ था उनका एक शिष्य उनके समीप आकर प्रणाम करता हुआ बोला। आचार्य! आपने मुझे युद्ध की शिक्षा न देकर आयुर्वेद ही क्यों पढ़ाया था और अब आप उन दोनों प्रयोगों को क्या ब्रह्मधाम ले जाना चाहते हैं। आचार्य ने सर झुकाया कहा कौन गुरुदेव का प्रपौत्र। हां—आपका एकाकी शिष्य शुक्लांगो। गुरुदेव! आचार्य ने कहा सरों से विदीर्ण यह काया कुछ क्षणों के लिये और था। पर—लो यह दोनों गुप्त प्रयोग कह कर असार संसार छोड़ प्रस्थान कर गये। शिष्य ने कण्ठस्थ कर लिया।

सर्व रोग निरोधक विधि—एवं मृत्योपरान्त स्थूल शरीर का विकृत रूप न होना और यही नहीं पुनः प्राणी नूतन संसार का सुख प्राप्त करे। शुक्लांग ने सोचा गुरु प्रदत्त प्रयोगों की परीक्षा इस काल से अच्छा अवसर और कौन मिलेगा समर भूमि मे अनेक अनेक मृत्यु को प्राप्त प्राणी हैं। और युद्ध काल के बाद सर्व रोग निरोध विधि तो किसी काल मे प्रयोग कर देखूंगा युद्ध भूमि का प्रयोग सफल हुआ अब कामना सर्व रोग निरोधक का परीक्षण करना था। मातायें प्रसव के बाद हम सब के नाल (नार) दाई से कटवाती हैं वह पैसा लेकर चल देती है, यही अवसर है। जब: बसरा मोती २-५ दाने १ चावल कस्तूरी, १ चावल गोलोचन १ चावल केसर नाल मे भरवा देवेंगे। तो आजीवन चेचक मोतीझाला, टिटनस ही नहीं समस्त रोगों से बालक छुटकारा पा जाते हैं। ये वस्तुयें यों ही नाभि के मूल में जाकर आजीवन रखी रहती हैं समस्त वैद्यों एवं बहनों से निवेदन है प्रयोग कर लाभ उठावें।

बाल रोगों पर

आदरणीय बहन पंडिता जड़ावबाई वैद्या

चेयरमैन पंचायत समिति अटरू

श्री कल्याण आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषध० बडोरा, कोटा (राज०)

आपने बाल रोगों पर लेख भेजकर इस अंक के लिये जो सहयोग दिया है। आशा है ऐसा ही सहयोग आप आगे भी देती रहेंगी।

—वि० स० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

श्रीमती वैद्या पंडिता जड़ाव बाई पंचायत समिति अटरू जिला कोटा समाज सेवा चेयरमैन श्री कल्याण आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय मु० पो० बडोरा जिला कोटा राजस्थान में करीबन ~५ वर्ष से निशुल्क सेवा कर रही हूँ, मेरा अनुभव सफल चिकित्सा का नुकसा सूक्ष्म परिचय दे रही हूँ। अपना कुछ परिचय दे रही हूँ कि मेरा जन्म ग्राम रानी बडोद त० किशनगंज जिला कोटा में श्री लक्ष्मी नारायण जी ब्राह्मण के घर मेरा जन्म हुआ हमारे घर पर गाये भैसे ज्यादा थी इस कारण विद्या कम पढ़ सकी मेरा विवाह जब कि १३-१४ वर्ष की आयु थी हो गया। भाग्य से श्री गोपालजी जी के साथ देई ग्राम जिला बूंदी में हो गया ईश्वरी कृपा से एक बच्चा प्रभु जी की कृपा से जन्म हुआ। इस का उम्र ७ मास में छोड़ पति बियाग कर चुके, इसके उपरान्त में अपने भाई के श्री लक्ष्मीनारायण जी के घर मेरा बड़ा भाई बजरंगलाल जी शर्मा ले आये मेरे २ बहन और दो भाई थे पिता माता दोनों भाई का स्नेह बहुत ही था [illegible] परन्तु मेरी भावज कुछ मुझसे नाराज रहती थी थोड़े दिन के बाद मेरी बहन श्री आनन्दीबाई आई और वह मुझको अपने ससुराल लेगई बच्चा और मैं और मेरी बहन के ससुराल गई वहा पर आयुर्वेद चिकित्सालय का काम चल रहा था मैं भी रोजाना उस काम दवाई आगरा बांटने, वटी बनाने का काम करने लग गई रात्री को पढ़ाई का काम चालू रखा मैं धीरे २ पढ़ाई में कुछ किताबे पढ़ने लगगई बाद को साहित्य सम्मेलन प्रयाग की उप वैद्या की परीक्षा दी ईश्वर गायत्री माता की कृपा से मैं उत्तीर्ण हुई कुछ श्रद्धा और ज्यादा होगई महिलाओं का और बच्चियों का इलाज हाथ में देदिया मैं दिल खोल कर इलाज करने लग गई आज आपके पुण्य प्रताप से एवं श्री कवि सा० श्रीकृष्ण जी त्रिवेदी भारतीय जन स्वास्थ्य रक्षक संघ के अध्यक्ष जी द्वारा आज मुझे श्री कल्याण आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय मु० पो० बडोरा द्वारा तुच्छ लेख आपकी सेवा में बालरोगाक के निमित्त भेज रही हूँ जो मेरे अनुभव किये हुए है। इसका सौभाग्य प्राप्त हुआ यह योग जड़ी बूटियों द्वारा मैंने कई बालकों पर और महिलाओं पर अनुभव करी हुई सबके लिये प्रकाशित कर रही हूँ। इन जड़ी बूटियों

के प्रताप से ग्राम पंचायत में सदस्य बनी और चेयरमेन-पंचायन-समिति में बनी यह सब गायत्री माता और जड़ियों बूटियों की देन है मैने निशुल्क श्री कल्याण आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय भारतीय जन स्वास्थ्य रक्षक संघ दिल्ली कल्याण कारी आरोग्य जीवनदान योजना केम्प मे बडो २ जगह खोला वही जाकर निशुल्क सेवा की कई महिलाओं के बालकों का इलाज मुफ्त किया जिसमें बाल भारतीय बच्चों पर मेरा पूरा ध्यान रहा और इलाज भी जड़ी बूटियों द्वारा करती रही हूँ कर रही हूँ । सर्व प्रथम सूखा रोग बालकों के पूर्ण घातक है । इसका इलाज आपकी सेवा मे, मेरी उम्र ४० वर्ष की है २५ वर्ष का अनुभव सूखा रोग का निदान एवं चिकित्सा लिखने से पूर्व मैं यह बतला देना चाहती हूँ कि यह कोई पृथक रोग नहीं है। अधिकांश पाठकों को यह पढ़ कर आश्चर्य होगा किन्तु बात अक्षरशः सत्य एवं अनुभव सिद्ध है, आगे विवेचन पढ़ कर अनुभव सिद्ध बाद आप इसे स्वीकार कर लेगे ।

(१) बालक के सूखने या कमजोर होने के अधिक तर निम्न लिखित कारण हुआ करते हैं यह आपके आयुर्वेद से कम पता लगता है। चिरकाल अतिसार या प्रवाहिका होना ।

(२) कृमी रोग पटारा केचवा ज्यादा होना छोटी २ सफेद कृमी (चुनिया) ।

(३) जीर्ण ज्वर ।

(४) राजयक्ष्मा ।

(५) खाद्याभाव या खाद्य मे पोषक तत्वों का अभाव ।

उपयुक्त कारणों में जो भी कारण पाया जावे उनकी ठीक २ चिकित्सा करना बालकों का सूखना निश्चत रूप से बन्द हो जाता है ।

(१) रोग होने के लक्षण अत्यधिक आहार—बहुत से मां बाप अपने बच्चों को अधिक प्यार करते है कि एक मिनट भी बच्चों का रोना बर्दास्त नहीं कर सकते और बच्चों को चुप रखने का उनके पास एक तरीका रहता हैं, दूध पिलाना ।

बच्चा किसी कारण से रोता हो, उसे भूख हो या न हो यहां तक कि उसके पेट की अन्तड़ियां फूल रही है। अशिक्षित मातायें उसे दूध पिला कर ही चुप करना अपना कर्तव्य समझती हैं। बहुत सी माताए बच्चे को स्तन से लगाकर ही सोती है, जिससे बच्चा रातभर दूध पीता रहता है, इस प्रकार अत्यधिक आहार देने से कुछ काल तक तो कोई स्पष्ट गड़बड़ी नहीं दिखाई देती, बच्चा हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ दीखता है, परन्तु छठे महीने के आस पास से अतिसार होने लगता है यदि चिकित्सा की भी गई तो कुछ काल तक बन्द रह कर आहार मे सुधार न होने के कारण बार २ अतिसार के आक्रमण होते हैं, मल हमेशा (अतिसार शांत रहनेपर भी) अपाचित या अधपाचित (फटा छिछड़ेदार लसदार अति दुर्गन्धित) ही निकलता है, और बालक कमजोर होता जाता है । बच्चे को निश्चित काल के अन्तर से दूध पिलाना चाहिये और दूध पि- पिलाने के पूर्व प्रत्येक बार यह निर्णय कर लेना चाहिये कि वह वास्तव मे भूखा है या नहीं । रात को सोने के पूर्व प्रत्येक बार देख-भाल बच्चे

को दूध पिलाना चाहिये, इसके बाद रात भर दूध कतई नहीं पिलाना चाहिये। अगर रात को बच्चा रोवे तो थोड़ा उबाला हुआ पानी पिलाकर थपकी देकर सुला देना चाहिये यदि बच्चा अधिक भूखा होवे और दूध दिये बिना किसी प्रकार काम नहीं चल सकता तो माता को बैठ कर केवल एक स्तनका कुछदूध पिलाना चाहिये, एक वक्त से अधिक दूध नहीं पिलाना, माता को लेटे लेटे दूध कभी नहीं पिलाना चाहिये। हर बार दूध पिलाती समय गायत्री अपने इष्टदेव का स्मरण करना चाहिये जिससे दूध में काफी पुष्टी मिले और ताकत वर रोग हीन दुध बच्चा को मिले।

भूख के अतिरिक्त रोने के बहुत से कारण होते हैं। जैसे—अजीर्ण, ज्वर, उदर शूल, कर्ण शूल, ज्वर, जुकाम या न्यूमोनियांके कारण होने वाला श्वास, कृमि रोग, विशेषतः चुरू, कृमि, अर्थात् चुनचुने (Pinworm) दान निकलने का कष्ट, गर्मी लगना कपड़े अधिक कसे हुये होना एक समय काफी देर तक पड़े रहना, घूमने की इच्छा होना, खटमल, मच्छर, चीटियों द्वारा काटे जाना, हसली कन्धे की हड्डी खिसक जाना अमौरी खाज-खुजली आदि कारणों से बच्चा अधिक नहीं रो रहा है। बच्चे के अधिक रोने से पहिले पूर्ण ध्यान से विचार करना और अधिक दूध न पिलाने के बदले यह विचार करना चाहिये, अधिक जांच पड़ताल करना, जिससे पूर्ण ज्ञान प्राप्त होजायगा। यह भी स्मरण रखना चाहिये कि ४ माह की आयु तक बच्चे अधिक रोते हैं। उनका यह रोना एक प्रकार का व्यायाम है। यदि उसे उपयुक्त कष्टों में से कोई कष्ट न हो तो उसके रोने की उपेक्षा करना या घुमा फिराकर चुप करना ही उचितहै। बच्चा सामान्य तौर से रोता है यदि किसी दिन उसकी अपेक्षा बहुत रोवे तो समझना चाहिये उसे कोई न कोई कष्ट जरूर है। इस प्रकार के कष्ट का पता लगाने के वास्ते किसी अनुभवी वैद्य को कष्ट निवारण करने में समर्थ करे, कि बच्चा वास्तव में भूखा है यह निर्णय होजाने पर ही दूध पिलाना चाहिये। यदि बच्चा अन्य किसी कारण से रोता है तो उसका उचित उपचार करना अत्यावश्यक है। ऐसी दशा में बच्चे को दूध पिलाने से उसकी पाचन क्रिया बिगड़ कर वह सूखा रोग का शिकार हो जाता है।

गरिष्ट आहार स्त्रियों को प्रारम्भ में (प्रसव के बाद) सब से अधिक दूध निकलता है और फिर क्रम से कम होता २ बन्द हो जाता है। उसके विपरीत बालक छोटा प्रारम्भ में रहता है इससे उसके लिए थोड़े दूध की आवश्यकता होती है। फिर वह ज्यों २ बड़ा होता है त्यों २ अधिक दूध की आवश्यकता होती है। इस विपरीतता के कारण आरम्भ में जरूर स्त्री दूध की अधिकता से परेशान रहती है, वहां बाद को वह दूध की कमी से परेशान रहती है। अधिकाश माताओं को आठवें मास के आस पास ऊपरी दूध या अन्न का सहारा लेना पड़ता है। कुछ स्त्रियों को प्रारम्भ से दूध की कमी रहती है उनको प्रारम्भ से ही ऊपरी दूध का सहारा लेना पड़ता है।

ऊपरी दूध पिलाने या अन्न देनेमें अधिकांश स्त्रिया गलती करती हैं, जिससे पाचन क्रिया बिगड़ कर दुखदायी होती है। अधिकांश स्त्रियां दूध को खूब औटाकर पिलाती हैं, और कुछ स्त्रियां कच्चा या कुछ गरम करके जब चाहे तब पिलाती हैं। समय एवं भूख का भी ध्यान नही रखती अन्न भी चाहे जब चाहे जैसा और चाहे जितना दिया जाता है। अधिक स्त्रियां मिठाई नमकीन खिलाती हैं। अधिकतर अशिक्षित स्त्रियां अधिक से अधिक खिलानेकी आवश्यकता करती है इन गलतियों से बच्चों को अतिसार होता है और बच्चे सूखते हैं।

ऊपरी दूध का यह ध्यान रखना चाहिये कि दूध ताजा और मिलावट का न होना चाहिये जहां तक हो सके दुहा दूध होना चाहिये अच्छा दूध सुलभ नही होवे तो डब्बा का दूध पिलाया जा सकता है, किन्तु वही ले जो खास तौर पर से बच्चों के लिये आता है। अन्य कामों के लिये मिलने वाले दूध के द्रव्यों का प्रयोग कदापि न करे।

गाय भैंस या बकरी जिसका भी दूध सुलभ हो काम मे ले सकते है, वैसे तो गाय का दूध सर्वोत्तम है। सुबह का दूध दूहा दिन भर के लिये और शाम का दुहा रात के लिये उपयोग मे लेना अनिवार्य है। उपयुक्त पशुओं मे से किसी का दूध हलका इतना नही होता है कि शिशु उसे ज्यों का त्यों पचा सके अतएव पानी मिलाना आवश्यक होता है, पानी मिलाने एवं ऊपरी दूध को मा के दूध के समान बनाने के अनेक योग भिन्न २ विद्वानों ने निर्दिष्ट किये है, जिन्हें आप अन्यत्र पढ़ चुके होंगे। वे तरीके विशेष पढ़ी लिखी एव सुसंस्कृत गृहणियों के भले ही साध्य हो किन्तु साधारण के लिये व्यवहार्य नहीं, मै अपने रोगियों पर नित्य प्रयुक्त करती आ रही हूँ। और वह शत प्रतिशत लाभकारी पाया है वह मे अपने अनुभव द्वारा सत्य से पूर्ण लाभकारी लिख रही हूँ ३ माह से कम बालक के लिये अथवा अधिक उम्र के अत्यन्त कमजोर एवं अतिसार युक्त बालक के लिये १ भाग दूध ३ भाग यानी तिगुना पानी देती हूँ।

३ माह से १ साल तक के बालक के लिये अथवा इससे अधिक उम्र के कमजोर बालक के लिये १ भाग दूध और १ भाग पानी यानी बराबर देती हूँ। उपयुक्त दूध मे पानी नाप मिलाना अनिवार्य है। अन्दाज से कभी नही मिलाना चाहिये फिर आवश्यकतानुसार शक्कर मिलाना और तेज आंच से जल्दी २ उबाल लेकर उतार कर ठन्डा होने दे।

धीमी आंच पर पकाना यह गलत तरीका है। क्योंकि इससे जल का कई भाग उड़ जाता है, दूध के पोष्टिक तत्व नष्ट हो जाते हैं। और दूध की सुपाच्यता कम हो जाती है सुबह का तैयार किया हुआ दूध शाम तक काम मे लेना चाहिये और शाम का दूध तैयार कर रात भर काम मे ले सकते है, दिन मे जितना दूध पीता है उसको रात को कम देना चाहिये, बचा हुआ दूध बच्चे को नहीं देना चाहिये अन्य काम मे ले सकते है, बच्चों को हरगिज नही पिलावे। शक्कर से कोई हानी नही होती हैं। और शक्कर

से बराबर हजम होती है। फिर भी शकर के अलावा ग्लूकोज दिया जावे क्योंकि दूध ठन्डा होने पर ग्लूकोज मिलाया जाये तो बहुत ही श्रेष्ठ है।

दूध मे इतना अधिक पानी मिलाने की बात पर बहुतो को विस्मय होगा किन्तु हाथ कंकन को आरसी क्या, करके देखिये और लाभ उठाइयेगा। इसमे आपका कुछ खर्च होने वाला नहीं है। बल्कि बहुत आवश्यक खर्च बचने लगता है मेरी कथन पर जरा सन्देह न करते हुये पूर्ण आत्मविश्वास के साथ माताओ को इस प्रकार का दूध पिलाने का परामर्श दीजिये। आप देखिये कि जिन बालकों को अतिसार था आप काफी परिश्रम करके भी ठीक न कर सकने के कारण असाध्य मान बठे थे वे भी जल्दी २ रोग मुक्त होते हैं।

जैसे एक सूरजबाई के लड़का उम्र १० मास का है उसका इलाज अतिसार का कोटा इन्दोर, गुना, झालावाड, उज्जैन कराया गया चार मास के रुग्णों को मेरे पास लाया गया बच्चे का नाम रमेश था यह बच्चा प्रथम था बडा प्यारा-लाड़ला था उपरोक्त बाते साबित हुई कि बच्चे के अतिसार होने का कारण गरिष्ठ दूध का उपयोग द्वारा गले में ४४ तावीज थे पूछा तो डाकिन है। डाक्टरों के इलाज केपशूल देते रहे दस्त बन्द दो दिन बाद फिर चालू। इस तरह बच्चे का शरीर कृश कमजोर हो रहा था सूरजबाई हमारे भारतीय जन स्वास्थ्य रक्षक संघ कल्याणकारी आरोग्य जीवनदान केम्प में आई केम्प के प्रधान पूजन भजन कर रहे थे मन्त्री स्नान और उप वैद्य रामकिशन ने भी मैंने निदान किया कि उसको ज्यादा दूध पिलाने से अतिसार रोग सूखा हुआ मेने दूध गाय का और आधा-पानी मिला कर कुछ उबाल ठन्डा कराके गुलूकोज मिला कर पिलाया जाय १२ दस्त होते थे, ५ दस्त रात दिन मे हुये दूसरे दिन यह क्रिया शाम सुबह दस्त होने लगगये यही इलाज ५ दिन में अतिसार का होना कतई नष्ट हो गया।

बच्चा ६ रोज मे स्वतन्त्र स्वस्थ हो गया जो उसके ४० तावीज बधे थे मेरे देखते २ चाकू से काट कर फेक दिये गये और कहा बहन जी मैं अध्यापिका होते हुये भी काफी गलती की, इस छोटे से बच्चे का सारा शरीर छिदवा डाला, सारी तनख्वाह बरबाद करदी। यह भूल मेरी नियम से दूध नही पिलाया। आज ६ दिन से मेरे बच्चे का स्वास्थ ठीक है। बहन जी आपको मैं क्या द सकती हूँ। परन्तु इस दुग्ध-चिकित्सा कल्प से मेरा नव जीवन बाल भारती बच्चे का कल्याणकारी आरोग्य जीवन दान केम्प ने ही दिया। जय हो।

विशिष्ट मामलो मे जल की मात्रा अधिक बढ़ाई जा सकती है। विशेषतः १ मात्रा-जल का रग सफेद हो।

२—जब उचित चिकित्सा से भी अतिसार मे लाभ न हो।

३—जब अतिसार बार २ हो। अधिक जल मिलाने से हानि कदापि नही, लाभ हो सकता है, जब कि अतिसार अत्यन्त उग्र रूप से मल दूषित हो उस समय दूध को कतई बन्द करके

उबाला हुआ पानी देना चाहिये, सत्वर लाभ होता है।

अध्यापिका—सूरज बाई
केथन जि० कोटा

कस्तूरी बाई उम्र ३० वर्ष। बच्चा का नाम कौशल्या उम्र ७ मास, इसको तीव्र अतिसार था मल में इतनी दुर्गन्ध थी कि पास नहीं ठहरा जाता था। ऐसे रुग्ण को दूध न देकर २४ घन्टे उबले हुये पानी पर रक्खा यानी लंघन कराया इससे लाभ हुआ। ग्लूकोज मिलाकर जल अधिक मात्रा में दिया गया बच्ची पूर्ण स्वस्थ हो गई ग्लूकोज देने से बच्चे के माता-पिता को शान्ति रही कि बच्ची को कुछ आहार दिया जा रहा है। बच्ची का अतिसार शान्त होकर स्वस्थ है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वैद्य जी को आयुर्वेद में सफलता मिले।

कस्तूरीबाई महावरा
कोटा (राज०)

छठे मास में बालक की अनाज की तरफ रुचि उत्पन्न होती है। अधिकांश माता पिता इसी समय अनाज देना प्रारम्भ कर देते हैं। अधिकांश बच्चे इस उम्रमें अन्न पचाने के योग्य नहीं होते, अतएव अतिसार होकर सूखा रोग के लक्षण पैदा हो जाते हैं। अथवा यकृत वृद्ध हो जाती है। वैसे यदि बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा हो और पाचन क्रिया तीव्र हो तो इस उम्र में अन्न देना बुरा नहीं। तथापि अन्न प्रारम्भ करने की सब से अच्छी उम्र १। वर्ष की है। ६ माह की उम्र में अन्न के लिये छटपटाने लगता है। उस समय यदि अन्न से वंचित रखा जाय तो क्रमशः वह झपटना बन्द कर देता है, फिर १ साल पर झपटना शुरू कर देता है, यही समय अन्न शुरू करने का श्रेष्ठ है। क्योंकि इस समय तक काफी दांत निकल चुकते हैं और काफी शरीर का विकास भी हो चुकता है।

अनाज प्रारम्भ करते समय आहार की सुपाच्यता मात्रा और समय का बड़ा विचार रखना चाहिये। आहार परिवर्तन क्रमशः करना चाहिये। यदि एक दम से किया जायेगा तो हानी निश्चित है। अधिकांश लोग इसका ध्यान नहीं रखते और हानी उठाते हैं। अशिक्षित माताये पुरुष इस अवस्था में बच्चों को मिठाइयां बेसन मैदा के नमकीन पकवान तथा बिस्कुट आदि खिलाते है मात्रा और समय का विचार नहीं रखते जिसके फलरूप पाचन क्रिया बिगड़ कर अतिसार और तत्पश्चात सूखा रोग उत्पत्ति होती है।

प्रारम्भ में बच्चों को देने योग्य सुपाच्य पदार्थ ये है। दलिया, खिचड़ी गीला पका हुआ चावल लपसी दूध में गलाई हुई रोटी, धान की लाई तथा विदेशों से आने वाले अनेक प्रकार के बेबी फुडतब तक उसे मैं। और बेसन के पदार्थ तथा तली हुई चीजे कदापि नहीं देनी चाहिये।

प्रारम्भ में उपयुक्त पदार्थों का सेवन थोड़ी मात्रा में दिन में केवल २ बार करना चाहिये, और उसी अनुपात से दूध की मात्रा घटाते जाना चाहिये। यदि पाचन क्रिया में कोई गड़बड़ नहीं होती, मात्रा क्रमशः बढ़ाते हुये पेट भर ले सकते है। पेटभर खिलाने का कारण यह है कि बच्चा अपनी रुची पूर्ण उड़ान जावे तब

तक खिलावे ; ज्यों ही यह अरुची प्रगट करे खिलाना बन्द करदे, बचे हुये पदार्थ का मोह न करे बहुत सी मातायें जब तब १–२ ग्रास अधिक खिला देती है यह बहुत बड़ी मूर्खता है जब पेट भर अनाज देने लगें तब यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अनाज देने लगे तब से २ घन्टे पहिले दूध न दिया गया हो, और बाद को ३ घन्टे बाद तक न दिया जाये, जब तक बच्चे को उपयुक्त पदार्थ पचने का भली भांति अभ्यास हो जाये तब अन्य पदार्थ धीरे २ देना आरम्भ करे, । सामान्यत: अन्न खाने वाले बच्चों को ४ बार भोजन देना आवश्यक होता है, २ बार दूध और २ बार अन्न से प्रारम्भ करके आगे भी यही चालू रख सकें । तो उत्तम है। फिर कुछ काल बाद तीन बार अन्न १ बार दूध देना बच्चों के हित मे अच्छा है।

बच्चों को प्रति ४ घन्टे पर भोजन (अन्न या दूध) देना नितान्त आवश्यक है यहां कुछ लोग जल्दी २ पिलाने की भूल करते है, यहां कुछ लोग ऐसे मिलते है जो खिलाने में अधिक देर करते हैं, भूख लगने पर भी भोजन नहीं देते है वह बच्चे के साथ अन्याय करते है इससे स्वास्थ्य तो नष्ट होता ही है। फिर अधिक खाने की आदत पड़ जाती है, यह आगे चिकित्सा को अत्यन्त दुष्कर बना देती है।

मेरे पास एक अध्यापका श्री मती कृष्णा कुमारी आई बच्चा का नाम राजेन्द्र था उम्र ५।. साल अतिसार से चिरकाल से पीड़ित था चिकित्सा में लाया गया था जिसको २४ घन्टे में एक बार अन्न देने को डा० साहब ने आहार देने को कहा। अन्य समय में दूध वगैरा कुछ नहीं दिया जाता था। कई माह से यह क्रम चालू था, आश्चर्य की बात तो यह है कि उस बच्चे के माता पिता शिक्षित थे, और कहा कि बहन जी बच्चे की यह दशा है दिनोदिन शारीरिक क्षीणता होती जाती है, मैंने विश्वास दिला कर कहा कि आप एक बार आहार के चार हिस्से करके ४ बार देना शुरू करने का निर्देश दिया। चिकित्सा आरम्भ करदी सामान्य चिकित्सा से अल्प काल में ही वह बच्चा पूर्ण स्वस्थ हो गया बाद को बच्चे को लेकर धन्यवाद दिया।

अतिसार की उपेक्षा श्री नन्दूबाई जात की कोलरि उम्र ४० साल, एक बच्चे को लेकर आयी उम्र १४ मास उस बालक के अतिसार रोग था नन्दूबाई के पेट मे बच्चा बच्ची का हमल था करीबन ७ मास के करीबन उसका निदान किया तो उसके ७ बच्चो ३ बच्चे इसी रोग से मरे। ११ बच्चा मोजूद १० बच्चा बच्ची पेट मे है, नन्दबाई ने कहा कि बच्चा के मरते ही मेरे हमल रह जाता है जब बच्चा बच्ची २ महीने का होता है मर जाता है। मै तुम्हरी और लाला बाबांजी की तारीफ सुनकर आयी हूँ, यह सुन कर कहा कि बहन जी इस रोग मे शुद्ध दूध पीने को देना होगा और तुम अपना दूध मत देना साथ में मन्तरा अनार का रस भी देना होगा। कभी २ नीबू का रस शहद मे मिला कर चटवाना और बालक को खुली हवा मे नंगे शरीर पर नीले रंग की सूर्य तप्त का तेल मालिश करना,

यह तेल हम देंगे, इस बालक को बकरी का दूध पिलाना, तुम शराब पिलाती हो छुड़वाना होगा, और रोज पेडू पर मिट्टी की पट्टी बांधना होगी हलकी पट्टी रखना होगी इतने कार्य करने से तुमारे भूत पलित लगा बताते है वह सब भग जायेंगे और इस बच्चे की जान बच जायगी इसका पहिला कारण तो यह है कि इन तकलीफ जो बालक पेट मे है मां का दूध पिलाती है, जब भयकर रूप रोग धारण करता है तब इलाज छू मंत्र देवी जो बकरे चढ़ाना मुर्गे चढ़ाना छोड़ते हैं। इसी प्रकार का अन्धविश्वास स्त्रियां के सम्बन्ध में प्रचिलित करने की गर्भिणी को होने वाले समस्त रोग गर्भ के कारण होते है और कहते है कि मूडा का दूध पीने से बालक मरते है, यदि ये अन्ध विश्वास उठा दिया जाये इन दशाओं मे होने वाले कष्टों का उपचार सदा की भांति करा जावे तो बच्चों की मृत्यों की संख्या से बच जायेंगे निश्चत है।

दूसरा महान कारण, जबयह अन्ध विश्वास बच्चों के दन्तोद्भवके वक्त अतिसार होना स्वाभिविक है और इस अतिसार की चिकित्सा की कोइ आवश्यकता नही है वस्तुत: यह अन्ध विश्वास ही सूखा रोग का जन्म दाता है। तथा लाखो बच्चों की मृत्यु का कारण है देखो नन्दूबाई के एक बच्चा और १ बच्ची जिसका उपरोक्त इलाज मोजूदा है अन्ध विश्वास छोड़ने से १२ के बाद यह समय हुआ है।

मैं आज कहता हूँ कि जो लोग इस रोग को न समझ कर भूतादि के चक्कर मे फसकर दस बच्चों का प्राणान्त कराया और काफो धन लुटाया और बच्चों की रक्षा के निमित्त जीवन नष्ट कराया। ऐसी घटनायें देहात में अधिक होती हैं। मै भी जिन्द जी को देखती थी, अपनी पेटपूजा होने के बाद मै जिन्द जी के पुजारी के पास गई और कहा कि आपके जिन्दजी ने कुछ न किया मैं तो श्रीमती प० जड़ाव बाई वैद्या कल्याण आयु० धर्मार्थ औष० बढ़ौरा गई वहां पर न तो दवा दी मोठी सन्तरा, नीबू बगैरा पिलाने से आराम हो गया। बच्चे की आयु ४ और बच्चा की २॥ वर्ष है। १॥ वषसे ज्यादा कोई बच्चा नहीं जावित रहा। इस लिये क्यों न पहले चिकित्सक से चिकित्सा कराई जावे जिससे बच्चे का जीवन सुखमय बने। मन्त्रों से लाभ अवश्य होता है, परन्तु उनका जानने वाला बिरला ही होता है।

देखो मन्त्रों का चमत्कार

श्री प० चतुर्भुज जी के दो लड़के जिनका नाम बाबू और रमेश था, उम्र ६ वर्ष की थी। हमारे यहां पारवती नदी का दह बड़ा गहरा है, वहां आसोज शुक्ला टट्टी गया तो अचानक पानी के पास एक आदमी बैठा देखा। उसने रमेश से पूछा कि तू किसका लड़का है, लड़के ने कहा ब्राह्मण का हूँ। तब वह बड़ा लम्बा होकर कहने लगा जनेऊ दिखा, नहीं तो तुझे खा जाऊंगा। लड़का वहां से घर आकर जबान निकाल कर बेहोश हो गया। करीब १० घन्टे बाद होश मे आने पर पूछा तो उपरोक्त जवाब देता रहा। हजारों रुपये खर्च कर दिये परन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्त मे वैद्य लाल बाबा शास्त्री जी को लेने बड़ोरा गये, चार दिन बाद बाबा जी अपने खर्च से प० जड़ाव बाई की बहन के मास होकर

से आये। उन्होंने गायत्री यज्ञ द्वारा उस बच्चे के शरीर से भूत आया जो ग्राम के लोग मांगते थे वह ऊंचा हाथ करके जो मांगता वही चीजें देता था। हीकड़ के पटेल जो ने शराब की बोतल मांगी, ऊंचा हाथ करते ही केसर, कस्तूरी शराब की बोतल आ गई, पटेल ने इस्तेमाल में ली। बच्चा के शरीर मे बाबा जी मन्त्रोक्त कार्य करने लगे रोता चिल्लाता निकल गया मसाणो में गढ़ गया करीबन ५० आदमी थे। एक पेड़ कोहड का एक दम से टूट गया और कह गया कि एक साल बाद पटेल को जरूर खाऊंगा, पटेल जी भी मर गये, बच्चे को जीवन दान दिया गया। यह श्री लाल बाबा जी की करामात और सच्चे मन्त्रों का वास्तविक ज्ञान है। अवास्तविक ज्ञान का ढोंग बुनने वाले देहातों मे हजारों हैं। जनता को उनसे सतर्क रहना चाहिये।

श्री स्वामी लाल बाबा शास्त्री ने कई भूतोन्मादकों का सत्य काम कियाहै। यह दीपावली नवरात्रि मे यज्ञ हवन द्वारा बीसा यन्त्र तैयार करते हैं। बच्चों की बीमारी, विस्फोटक, सर्व व्याधि विनाशन यन्त्र देते हैं। जत्र द्वारा ही बवासीर को नष्ट कर देते हैं। भाग्य जगाने का यन्त्र दीपावली नवरात्री में तयार किया जाता है कई व्यक्तियों ने धारण कर लाभ उठाया, सोते हुये भाग्य को जगाने के लिये सिद्ध है यदि किसी कन्या के जन्मपत्र मे मंगल विधवा योग करता है तो इस यन्त्र के धारण करने से मंगलकृत विधवा दोष दूर होकर सौभाग्य की प्राप्ति होती है। यदि किसी के ऊपर कर्ज अधिक हो तो उसे धारण, पूजन और मंगलके व्रत करने से अवश्य कर्जा दूर हो जाता है। हिस्टीरिया, मृगी का यंत्र धारण करने से समूल बीमारी नष्ट हो जाती है। जिस स्त्री के पुत्र न होकर कन्या ही होती हों, अथवा मृतवत्सा हो, इस यन्त्र को धारण करने से पुत्र जन्म अवश्य होता है।

अञ्जन डाकिनी का

इस अञ्जन के आंख मे लगाते ही भूत, प्रेत, पिशाच, जिन्द, डाकिनी, शाकिनी, चुड़ैल, देह बाधा दूर हो जाती है। अगर किसी को ज्योतिष द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों का हाल ज्ञात करना हो तो पत्रोत्तर के लिये जवाबी पत्र दे।

बगला मुखी कवच धारण करने से मुकदमे में सफलता मिलतीहै और शत्रु का मुख स्तम्भन होता है। हाकिम सब जनता मानव स्त्री सहित प्रसन्न रहते हैं। यह हर मानव बहिन को धारण करना चाहिये। यह कार्यालय मु० पो० बड़ौरा जि० कोटा (राज०) दलितवर्ग संघ जादूगर अनुष्ठानी श्री स्वामी लाल बाबा शास्त्री से पत्र व्यवहार करें। उत्तर के लिये टिकट या जवाबी कार्ड भेजे।

सूखा रोग

भारत भर में प्रति वर्ष लाखों बच्चे इस रोग के शिकार हो जाते हैं। यह रोग दो साल के बच्चों मे पाया जाता है। सूखा होने के कारण प्रमुख रोग निम्न लिखित हैं—

(१) आयुर्वेदानुसार इसका प्रधान कारण वायु दोष की विकृति है, जिसके कारण भर पेट खाने पर बच्चा सूखता जाता है।

(२) बच्चे के खान-पान का असतुलन होना भी इसका मुख्य कारण है। खाने पीने से बड़ी गड़बड़ी होने के कारण है, अधिक खाने से बद हजमी हो जाती है, दस्त होने लगते हैं, जिसके कारण दूध डालने लगते हैं और बच्चा धीरे २ सूखने लगता है।

(३) माता के दूध की कमी के कारण या मां के दूध मे अति गर्मी अथवा ताप युक्त होने से भी यह रोग प्रायः हो जाता है।

(४) यह भी सूखा रोग का प्रमुख कारण है. इसमे आंत श्लेष्म का क्षय हो जाने के कारण पचे हुये अन्न का शोषण नहीं होता है, फलतः रक्त नहीं बनता है बच्चा सूखने लगता है।

(५) लीवर (जिगर) की खराबी से अधिक दिन कब्ज रहने से भी सूखा रोग हो जाता है।

(६) अधिक दिनों तक बच्चा यदि ज्वर खांसी आदि से पीडित रहे, तब भयंकर वमन अतिसार के बाद भी सूखा रोग हो जाता है।

(७) बच्चों के दांत निकलते समय यदि ध्यान न दिया जाय तो पाचन संस्थान विकृत हो जाता है और वमन, अतिसार, दस्त होने लगते हैं, इससे भी सूखा हो जाजा है।

सूखा रोग में प्रधानता

कैल्शियम व विटामिन डी० बी० ए० की शरीर में कमी हो जाती है। वैद्य रामकिशन शर्मा का कथन है कि इस कमी के कारण बच्चों की हड्डियां देर से बढ़ती है, दांत देर से निकलते है। बच्चों का तालू प्रायः १८ महीने तक बन्द हो जाता है। वह भी देर से बन्द हो जाता है। बच्चों के स्वास्थ्य मे दिनों दिन कमजोरी होती जाता है। परों से खड़ा नहीं हो सकता, बढ़ोतरी रुक जाती है। मांस और रक्त आदि धातुयें सूखने लगती हैं, मस्तिष्क का विकास रुक जाता है।

सूखा रोग के प्रारम्भिक लक्षण

सूखा रोग शुरू होने के पहिले निम्नलिखित लक्षण मिलते हैं। नीचे के लक्षण मिलने लगे तो समझना चाहिये कि सूखा रोग होने वाला है।

(१) भर भूख खाने पर भी बच्चा यदि बच्चा सूखता जावे तो समझना चाहिये कि सूखा होने वाला है।

(२) काफी दिन तक बच्चे को हरे पीले दस्त फटे २ या बदरंग हों, दूध डालता हो, उबकाई आती हो।

(३) बच्चा दिन भर रोता हो, मिजाज चिड़ चिड़ा रहता हो, जमीन पर लेटने की इच्छा अधिक होता हो न प्रसन्न निरुत्साह सुस्त दीखता हो, न खेलता हो, अधिक रोता हो, कम सोता हो तो समझना चाहिये सूखा वायु रोग होने वाला है।

(४) बराबर हलका सा बुखार रहता हो, खासकर माथा, तालू अधिक गरम रहते हों तो सूखा रोग के प्रारम्भिक लक्षण समझें।

(५) निरन्तर खांसी रहती हो, बराबर भूख को रोता हो, अति प्यास लगती हो, पेट बाहर निकल रहा हो आदि।

नोट—यदि उपरोक्त लक्षणों में से कोई लक्षण मिले और उसके साथ २ बच्चा धीरे २

कमजोर हो रहा हो तो समझो सूखा रोग होने वाला है।

सूखा रोग के लक्षण

रोग हो जाने के बाद सारे शरीर से खून मांस की कमी हो जाती है, भरपूर खाने पर बच्चा दिन प्रति दिन सूखता चला जाता है, शरीर पीला पड़ जाता है, खास कर हाथ, पैर, गर्दन पतली शिर मोटा हो जाता है। मुख और गले पर सिकुड़न चहरा बुढ़ापे का हो जाता है और चूतड़ की खाल पर सिलवटे पड़ जाती है, उत्साह हीन हो जाता है। बच्चा अति कमजोर जीर्ण शीर्ण हड्डियों का ढाचा मात्र रह जाता है, बच्चा का अति कष्ट दायक पेट आगे निकल जाता है। निरन्तर हलका ज्वर रहता है और पेशाब पीला आता है। माथा तालू अधिक गर्म रहता हैं, हरे पीले भद्दे रंग के फटे दस्त होते है। बच्चा बराबर रोता है जरा सी शर्दी लग जाने से बच्चों को खांसी ज्वर निमोनिया आदि हो जाते हैं खांसी बराबर बनी रहती है।

यह जान कर प्रारम्भ अवस्था मे ही मां बाप को सावधान हो जाना चाहिये इस अवस्था मे।

(१) केवल आनन्द कर कल्याण कारी आरोग्य जीवनदान बाल पौष्टिक दना चाहिये जो निम्न लिखा जाता है।

(२) आनन्द कर कल्याण कारी आरोग्य जीवन दान तेल बाल रक्षक की ०-३ शीशी प्रयोग करने से बच्चा शीघ्र पूर्ण स्वस्थ्य हो जाता है। और सूखा रोग का डर नही रहता है और राम रक्षा कवच बच्चों के धारण करना चाहिये जिससे घाट में बाट में पंथ में घोर उपद्रव जगह पर श्री राम रक्षा राज का तेज में रक्षा करे डकनी सकनी का मार मुटका करे जागते सोते खेलता मिलता उठते बेठते सन का शीश पर हाथ दे रहे, गुप्त से गुप्त रोग को नाश करे रक्ष २ महाबल धाकाले नमरण तस्व नच सर्पण दृश्यते अग्नि वायोराभय नास्ति राम रक्षा कवच धारण से करे। माता चैचकयक्त यह कवच धारण करके कइ बच्चों का जीवन दान मिला है जिसमे चेचक के बिगड़े बच्चे जिनकी आशा छूट चुकी थी वह जीवन दान पाये है। सूखा वायु की सफल चिकित्सा–सूखा रोग की रोग की औषधी के रूप मे बाल पौष्टिक कल्याण कारी आनन्दकर आरोग्य जीवनदान का पौष्टिक प्रयोग करीबन ५० साल से बराबर होता आ रहा है, यह अपने अद्भुत गुण बच्चों के सर्व प्रिये टानिक के रूप मे आज देश में घर २ प्रसिद्ध है अभी तक लाखों मरणासन्न सूखा ग्रसित बच्चों को इसने जीवनदान दिया है !

सूखा के लिये उच्चकोट की दवा खोज निकाली है और निकालने के निरन्तर नये प्रयोग व खोज के बाद तीन अन्य सूखा वायु की दवा निर्माण किया जिनका प्रयोग आनन्द कल्याण कारी आरोग्य जीवनदान बाल पौष्टिक टानिक के साथ २ करने से उत्तम फल मिलता है। भयंकर से भयकर सूखा रोग की अवस्था जिनमे बचने की आशा न रही हो, ऐसी हालत मे इन चारो औषधियों का सामूहिक प्रयोग शीघ्र ही अपने अद्भुत गुण दिखा कर नया जीवन प्रदान करता है।

(१) बालकों के सूखा बाल शोष पर— रस सिंदूर ३ मा०, जहर मोहरा पिष्टी १ मा०, यशद भस्म १॥ मा०, प्रबाल पिष्टी १ मा०, मुक्ता की या मुक्ता शुक्ति पिष्टी ६ मा०, गोदन्ती भस्म १ तो०, कच्छप भस्म १ मा०, गोरोचन १॥ मा० ।

विधि—एकत्र कर पीस कर रखे ।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक ।

अनुपान मधु से चटा कर ऊपर से दूध से देवे ।

(२) अर विन्दासव यह सूखा रोग की बच्चो के लिये दूसरी औषधी है इसका निर्माण कमल से किया जाता कल्याण कारी आनन्द जीवन दान केम्प योजना भारतीय जन स्वा० रक्षक संघ दिल्ली द्वारा निर्माण करता है । पीने को दिया जाता है ३ मासा बराबर जल मे मिला कर ३ बार पिलाना चाहिये ।

शुष्क आयु द्व। कई बहु मूल्य भस्मो का निर्माण किया जाता यह बच्चों के गृह दोष भूत बाधा से छुटकारा दिलाती है प्यास कम करती है सदेव रहने वाले ज्वर नष्ट करती है और लीवर हड्डिया को शीघ्र बढ़ाता आंतों की क्रिया ठीक कर शोषण शक्ति बढ़ाता दस्तो को बन्द करता है आत्रक्षय को दूर करता हैं सूखा में अति लाभकारी है ।

(३) अनुभूत चिकित्सा—मुर्गी के अडे को फोड़कर उसका तरल पदार्थ कम्बल पर डाल दे उसी पर रोगी को नग्न करके बैठा दे । यदि वह तरल पदार्थ गुदा मार्ग से भीतर चला जावे तो निश्चित रोगी स्वस्थ हो जायगा । किंतु यह प्रयोग दो चार बार और दो तीन दिन के बादही करे, रोजाना नहीं जब तक कि बालकठीक न हो जाय । इस रोग की सफलता शीघ्र पाने के लिये यह प्रयोग अवश्य कर लेना अनिवार्य है ।

(४) सूखा रोग की सामान्य चिकित्सा— एक बोतल साफ पानी मे २॥ तो० पत्थर का सूखा चूना डालकर हिलादे । इस प्रकार ६ घन्टे तक रख छोड़ें । चूना तल मे बैठ जायगा, ऊपर का पानी निथार कर अलग शीशी मे रखले । मात्रा—६ मा० दूध के साथ मिला कर दिन में तीन वार सेवन करने से अमृत के समान गुण-कारी होता है । बच्चे की पाचन क्रिया ठीक रहती है और कुछ समय के बाद बचा स्वास्थ हृष्ट पुष्ट हो जायगा । इससे बच्चे की हड्डी मज-बूत हो जाती है और दांत शीघ्र निकल आते हैं साथ २ यन्त्र भी धारण करवाती हूँ ।

(५) इस रोग का सर्व प्रथम माता के दूध पर ध्यान देना आवश्यक है । दूध मे जब रोग आदि कारणों से विकृति हो जाती है तव वह सन्तान का जीवन का पोषण के बदले शोषण करता है । इसलिये दूध दोष रहित हो तो अन्य चिकित्सा पर ध्यान दे ।

(६) सूखा रोग के लिये—सर्वांग काली गाय का मूत्र सूर्योदय से प्रथम का १ सेर अ-सली काश्मीरी केशर १ तोला लेकर गोमूत्र के साथ पीस लुगदी बना ले फिर इस केशर की लुगदी को शेष गोमूत्र में मिलाकर एक शुद्धकांच की बोतल मे भर कार्क लगा बोतल का मुख बंद कर दे । बस दवा बन गई । मात्रा—६ माह के

बच्चों को ४ बूंद दवा ४ बूंद माता के दूधके साथ दें। ६ माह से अधिक आयु वालों को ८ बूंद दवा ८ बूंद मां के दूध के साथ पिलावे। लाभ दो तीन दिन में ही दीखने लगता है, ७ दिन तक दवा पिलानी चाहिये। हिफाजत से रखने पर दवा ३-४ साल तक काम देतीहै। माता का दूध चाहे जैसा खराब, सूखा रोग करता हो फौरन आराम होता है।

(७) सूखे बच्चे जिनका मास सूखकर चूतड़ों की खाल भी सिकुड़ गई हो, रीढ़ की हड्डी धनुषाकार हो गई हो, सारा शरीर हड्डियो का ढांचा प्रतीत होता हो, ज्वर अतिसार हो, प्यास अधिक हो, शिर को इधर उधर पटकता हो। इस प्रकार के बच्चे के लिये अद्भुत प्रयोग जो निरन्तर २० साल से सफल अनुभूत कर रही हूं। यह दवा आपके बालभारतीय बच्चों के लिये अमृत है।

कच्छपास्थि भस्म, मूत्रकला रस १ तोला, आवजवां स्वरस १ तो०, घी कुमारी के गूदे की रस की भावना देकर भस्म करे। प्रवाल भस्म, शंख भस्म, मुक्ताशुक्ति, गेरू, गिलोय का सत्व प्रत्येक १-१ तो० मिला पीसकर अवस्था प्रमाण १ से ४ रत्ती तक घृत, मधु विषम मात्रामें मिला दिन में ३ बार देना।

माता खटाइ, तेल वगैरा न खावे फौरन आराम अनुभूत है।

लेख ज्यादा बढ़ जाने से मैं प्रधान सम्पादक अनुभूत योगमाला का अहृप धन्यवाद है।

जब से संसार बिना मृत्यु चक्र शीघ्रता से चल रहा है। यद्यपि सब चीजें इससे बचने के लिये अपनी-अपनी रक्षा करते चले आये हैं। परन्तु तमाम कोशिश करने पर भी उन्हें मृत्यु के चगुल मे फंसना ही पड़ता है। क्यों इसलिये, कि यह प्राकृतिक नियम है। जो प्रत्येक देहधारी जीव को भोगना ही पड़ता है। मगर इस संसार के रचयिता ने सृष्टिचक्र चलाने के लिये और इस हरी भरी वाटिका को हरा भरा रखने के लिये उत्पत्ति का कार्यक्रम भी चला रखा है। ताकि जो जीव इस क्षणभंगुर संसार में आये वह अपना जीवन पूरा करने के बाद अपना कोई प्रतिनिधि छोड़जाये, यही कारण है कि इतनी अधिक मृत्यु होनेपर भीसंसार की रौनक स्थिर ही रहती है। बल्कि इसमे दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। चूंकि संसारको स्थिर रखने का कारण औलाद है। अतः बच्चा पैदा करने की इच्छा हर प्राणी मे पाई जाती है।

शिशु संसार

आदरणीय बन्धु श्री शंकरलाल जी वेशभूषण साढौली, मगलौर (शेरपुर) सहारनपुर (उ० प्र०)

आपने माला के इस विशेषांक के लिये "शिशु संसार" नाम लेख भेज कर जो सहयोग दिया है, उसके लिये धन्यवाद।

वि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

औलाद का प्रेम

पशु पक्षियों के बच्चे जन्मते ही या कुछ दिन के पश्चात् माता पिता की देख भाल से अलग हो जाते हैं। जैसे—मेंढ़क, मछली आप ही तैरने लग जाते हैं। घोड़ी, गाय, कुतिया इत्यादि के बच्चे दूध पीने तक माँ की देख-रेख में रहते हैं इस लिये उनमें पैतृक प्रेम अस्थायी रहता है।

परन्तु सब प्राणियों में एक मनुष्य का बच्चा ऐसा है। जिसका पालन पोषण दीर्घ काल तक किया जाता है, और मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव भी उसको मजबूर करता है, कि पारिवारिक जीवन व्यतीत करे अतः उसको औलाद का प्रेम स्थिर होता है, बच्चों से घर में रौनक रहती है, उनकी भोली भाली सूरतों और प्यारी २ बातों से स्वर्ग जैसा आनन्द प्राप्त होता है। ये ही बच्चे बड़े होकर माता पिता की बुढ़ापे में सेवा करके उनकी मनोकामनाओं को पूरा करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

सांसारिक कामकाज में सहायता करते हैं, और कुटुम्ब का नाम संसार में विख्यात करते हैं, वह लोग धन्य हैं, जिनके घर मे नन्हें नन्हे देवता इधर उधर खेलते दिखाई देते हैं।

माता पिता का हृदय कमल खिलता इसी से है।
परलोक मे भी स्वर्ग सुख मिलता इसी से है॥

जिस स्त्री की गोद में कोई बच्चा नहीं, जिस पुरुष के गले मे किसी बच्चे ने नन्हीं २ बाहे न डाली हों जिस को पिता २ कह कर पुकारने वाला न हो, वह अपने आप को भाग्य हीन समझता है। क्यों कि वे औलाद लोग संसार में आते हैं, और मृत्यु के पश्चात् अपना और अपने घराने का नाम व निशान मिटा जाते हैं। किसी उर्दू कवि ने क्या ही अच्छा कहा है—

बेकार है वह घर जिसमें पिसर नहीं ।
बेकार है शजर जिस पर समर नहो ॥

हर मनुष्य की यह अत्यधिक इच्छा है कि वह संसार मे कोई ऐसी स्मृति छोड़ जावे जिससें उसका नाम व निशान हमेशा कायम रहे कुछ लोग इसके लिये नगर व ग्राम बसाते हैं। कुछ मन्दिर व मस्जिद, बाग तथा कुआं बनवाते हैं, जिनसे उन्हें लोग याद करते रहे, परन्तु इन सबसे सच्ची और स्थिर स्मृति सन्तान है क्यों कि इससे मरने वालों का व कुटुम्ब का निशान हमेशा कायम रहता है। राज्य हो नाम हो धन हो, सुन्दर स्त्री हो यहां तक कि संसार की सब भोग सामिग्री प्राप्त हो परन्तु एक बच्चा न हो नो सब हेच मालूम होता है। मुख पर सच्चा आनन्द नहीं दिखाई देता. संसार की किसी भाग सामग्री से सच्चा आनन्द प्राप्त नहीं होता, रात को दुनियां चैन से सोती है, परन्तु सन्तान हीन जोड़ा करवट बदल २ कर दिन निकाल देताहै । आपने सुना होगा बड़े २ राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार जंगलों मे जाकर साधु महात्माओं को कुटियाओं पर ठोकरें खाते हैं और निराश होकर लौट आते हैं। क्यों कि यह तो परम पिता परमात्मा की देन है। जिसे चाहे दे और जिसे न चाहे न दे। बच्चे ही देश व जाति का श्रेष्ठ धन हैं क्यों कि ये ही बच्चे बड़े होकर व्यापारी, कारीगर, वैद्य, डाक्टर, नेता, सिपाही इत्यादि बनकर देश और जाति की सेवा करते है। और देश तथा जाति को आपत्ति से बचाने के लिये अपने प्राण तक दे देते हैं, इस लिये हर सभ्य देशों में बच्चों की पूर्णरूप से देख भाल और पालन पोषण किया जाता है। शिक्षा दीक्षा में कोई कसर नहीं रखी जाती ताकि वह बड़े हो कर माता, पिता, जाति व देश का मुख संसार मे उज्वल करें, परन्तु खेद है कि भारत के लोगों को देश व जाति का कुछ भी ध्यान नहीं, वह अपने बच्चों के पालन पोषण पर कुछ भी ध्यान नहीं देते, सभ्य देशों के लोग अपने बच्चों के सिवाय उन हरामी बच्चों का भी जो क्वारी लड़कियों अथवा आवारा औरतो से पैदा होते हैं। उनका पालन-पोषण भी अच्छी प्रकार से करते हैं। परन्तु हमारे देश में अपने बच्चों की भी बहुत बुरी दशा है।

एक वह हैं, कि जिन्हें तसवीर बना आती है।
एक हम हैं, कि लिया अपनी सूरतको भी बिगाड़॥

यहां के मनुष्य सन्तान तो पैदा कर डालते हैं, परन्तु उसके पालन पोषण की ओर लेश मात्र भी ध्यान नहीं देते। बल्कि उनके पालन पोषण की जिम्मेदारी स्त्रियों पर डाल देते हैं। पुरुष निश्चिन्त रहते हैं। मानों, कि उनके बच्चा ही नहीं है, स्त्रियां चूंकि अशिक्षित अधिक होती हैं। इस लिये वह यह नहीं जानती, कि बच्चों का पालन पोषण कैसे करना चाहिये वह केवल इतना जानती हैं, कि जहां बालक रोया उसे तुरन्त दूध पिला दिया जब घर के कामों से अवकाश मिला समय कुसमय का ध्यान न करते हुये तुरन्त स्नान करा दिया, बस इस पुराने ढंग से पाला हुआ बच्चा क्योंकर स्वस्थ बलवान और दीर्घायु हो सकता है। बहुत से बालक तो एक साल के भीतर ही कालवश हो जाते हैं। और जो जीवित रहते हैं, कमजोर निरबल और

रोगों का घर बने रहते हैं। कोई दिन खाली नहीं जाता जब कि प्रातः काल बच्चा वैद्य के पास न ले जाया जावे। भला ऐसी सन्तान से माता पिता को क्या आनन्द मिल सकता है ऐसे बच्चे बड़े होकर देश व जाति की क्या उन्नति कर सकेंगे आवश्यकता है, कि माता पिता इस बारे में पूरा ध्यान दें। और अपने बच्चों को स्वस्थ तथा बलवान बनाने का भर सक प्रयत्न करें। ताकि केवल उनके लिये ही नहीं बल्कि सासोयटी और देश का अनुपम धन कहलायें इस आशय को सामने रखकर मैंने इस लेख में बच्चों के पालन पोषण, रहन सहन और चिकित्सा के बारे में आवश्यक बातें लिख दी हैं। आशा है कि पाठक गण आद्योपान्त इस लेख को पढ़कर इन लाभदायक बातों से घर में भी श्रीमतियों को ध्यमन्त्र दें ताकि शिशु संसार का उद्धार हो।

बच्चों का पालन पोषण तथा स्वास्थ्य रक्षा

सब प्राणियों में केवल एक मनुष्य का ही बच्चा ऐसा है, जिसकी बढोतरी बड़ी कठिनता से होती है, क्योंकि यह फूल के समान कोमल होता है, अतः फूल की ही तरह इसकी रक्षा करनी पड़ती है थोड़ी सी उपेक्षा होने पर वह मुरझा जाते हैं, साधारण सा रोग उनके लिये असाध्य हो जाता है। अतः उनके सुख और शान्ति से रहने का ध्यान रखना माता पिता का पहिला कर्त्तव्य है, भूत काल में मातायें अपनी बहु बेटियों को बच्चों के पालन पोषण और रहन सहन के ढंग सिखा देती थीं और समय पर ऐसी शिक्षा भी देती रहती थीं जिनसे बच्चे रोगी न हों। जैसे जब कोई औरत अपने बच्चे को दूध पिलाने लगती तो पास बैठी हुई बुढ़िया माता तुरन्त कह देती थीं बेटी पहिले दुधी से थोड़ा दूध निकाल डाला फिर दूध पिलाओ कारण यह है, कि जब बच्चा दूध पीकर छोड़ देता है। तो दूध जो स्तनों में मुह तक आकर रह जाता है।

जम कर गाढा हो जाता है, यदि दोबारा पिलाते समय इसे निकाल कर न फेंक दिया जाये तो बच्चे के पेट में जाकर गड़बड़ी कर देता है। जब औरत भोजन बना रही हो उसका शरीर गर्म हो जाता है, परन्तु पास में पड़ा हुआ नन्हा बच्चा भूख से चिल्ला रहा है माता बच्चे को दूध पिलाना चाहती हैं, तो बुढ़िया उसको रोक देती थी और कहती है, कि ठहर जरा ठन्डी होने पर दूध पिलाना यदि वह जी उसकी बात न मान कर स्तन पान करा बैठती है, तो बच्चा के और दस्त करने लग जाता है। क्योंकि अग्नि के सम्पर्क से पित्त अधिक बढ़ जाने के कारण दूध में गर्मी पैदा हो जाती है। इसी कारण बच्चा रोगी हो जाता है, ऐसी बहुत सी बातें हैं। जिनके न जानने से बच्चे रोग ग्रस्त हो जाते हैं। जिन भाग्यवान घरानों में ऐसी दीक्षित मातायें हों। उनके बच्चे बहुत कम रोगी होते हैं। यदि कभी रोगी हो जायें तो वह सोंठ, अजवायन, सोंफ, हल्दी इत्यादि अकेली वस्तु से जो उनकी पिटरी में कपड़े की छोटी २ पोटलियों में बंधी पड़ी रहती हैं। अपने बालकों की चिकित्सा घर में ही कर लिया करती हैं, परन्तु अफसोस है। कि अब

समय बदल चुका है, नई रोशनी की सभ्यता ने घरेलू जीवन की शिक्षा पर पानी फेर दिया, आज कल की पढ़ी लिखी और नई रोशनी से चुंधियाती हुई स्त्रियां पुरानी बातों पर हंस उठती है। और उन्हें असम्भव और जंगली मनुष्यों के रिवाज कहकर ठुकरा देती है। बच्चों की आंखों में काजल लगाना कानोंमे तेल डालने शरीर पर मालिश करना पसन्द नही करती, इसका फल यह होता है, कि शिक्षित घराने के बच्चों की निगाह कमजोर होती है, और वह थोड़े समय में ऐनक का सहारा लेते हैं, कानों में तेल न डालने से बच्चे बहरे हो जाते हैं। जिन बच्चों को तेल या उबटन की मालिश किये बिना केवल साबुन से स्नान कराया जाता है, उनकी त्वचा कड़ी व खुरदरी हो जाती है, बच्चों के पालन पोषण व रक्षा के ढंग न जानने से हमारी वर्तमान नसल दिन प्रति दिन दुर्बल सुस्त और रुग्ण हो रही है, हमारी भविष्य की आशा सन्तान से सम्बन्ध रखती है। अतः प्रत्येक माता पिता का यह आवश्यक कर्त्तव्य है, कि वह अपनी सन्तान की भलाई के लिये पूरा २ प्रयत्न करे, और ध्यान से काम ले ताकि यह पुष्प व पल्लव से भी कोमल बच्चे फूलें फलें और संसार में उन्नत मस्तक होकर भारत वर्ष का नाम उज्वल व विख्यात करें अब में बच्चों के स्वस्थ रहने के ढंग लिखता हूँ। जिससे माता पिता को उनके रोगी होने पर कष्ट न उठाना पड़े।

बच्चों को स्नान कराना

बच्चा जन्मने पर जब नाला कट चुके तो उसे नम हाथों से पकड़ कर रुई के गाले गुन गुने पानी में भिगों कर पहिले उसकी आंखों को साफ करे इसके पश्चात शेष शरीर को धोये ताकि सब मैला साफ हो जाय, फिर नर्म तोलिया से सारा शरीर पोछ कर सुखा कर और ऋतु अनुसार कपड़े में लपेट कर रक्खे एक डेढ महीने तक गर्म पानी ही से स्नान कराते रहे यदि बच्चा दुर्बल हो कुछ दिन तक स्नान न करावे छोटे बच्चों को सर्दी बहुत जल्दी लग जाया करती है। अतः स्नान कराते समय वायु से बचावे।

तेल मर्दन

मनुष्य का शरीर एक मशीन की भांति है, जिसका हर अंग काम में लगा रहता है, जिस प्रकार मशीन के पुर्जे लगा तार चलते रहने से घिसते है अतः उनको रगड़से बचाने के लिये तेल देने की आवश्यकता होती हैं। इसी भांति मानव शरीर के अंग भी चलते रहने से घिसा करते है। इस कमी को पूरा करने और उनमें चिकनाई पहुँचाने के लिये तेल मालिश बहुत बढ़िया उपाय है, अतः बच्चे को स्नान से पहले सरषों के तेल की मलिश करे और थोड़ा सा तालू पर डाल कर शुष्क कराये और २ बूंद कानों में डाले इससे शरीर की रूक्षता जाती रहती है। त्वचा कोमल और चिकनी रहती है, शरीर की बढ़ोतरी होती है शरद ऋतु में तेल को गर्म कर लेना चाहिये।

काजल लगाना

स्नान के पश्चात बहुत बारीक पीसा हुआ सुरमा बच्चे की आंखों में लगाया करें। इससे

निगाह तेज रहेगी आंखें धूप की चमक और गर्मी के कुप्रभाव से रक्षित रहेंगीं। परन्तु ऐसे कोमल अंग के लिये मामूली बाजारी सुरमा नहीं लगाना चाहिये । बल्कि स्वयं घर मे बना कर लगायें।

घरेलू सुरमा व काजल बनाना

काला सुरमा १ छटांक की डली लेकर उसे अग्नि में तपावें लाल होने पर सौंफ के हरे पत्तों के स्वरस में या त्रिफले के काढ़े में सात बार बुझाये' फिर खूब महीन पीस कर शीशी में रखे या सरसों के तेल का दिया जलाकर उसके ऊपर सराई या खपनी कोरी मिट्टी की जिसको पानी न लगा हो बांध दे, दिये की लौ से धुआं उठकर काजल खपनी पर लगेगा उसको उतार ले और पीस छान कर बच्चे को आंखों में सलाई या अंगुली से लगाये।

बच्चों के वस्त्र

बहुत से भारतीय घरानों मे यह रिवाज है, कि नन्हें बच्चों को सिला हुआ कपड़ा नहीं पहनाते बल्कि यों ही एक कपड़ेमे लपेट दिया जाता है। यह भद्दा रिवाज ठीक नहीं क्यों कि बच्चों पर ऋतु की गर्मी और सर्दी का प्रभाव अति शीघ्र हो जाता है। इस रिवाज के कारण अधिक तर बच्चे खांसी, ज्वर, नि मोनियां इत्यादि रोगों में फंस जाते हैं। और जीवन काल के प्रथम मास मे यमलोक सिधार जाते हैं। यदि इस रीति को पूरा करना आवश्यक ही है, तो ऋतु अनुकूल कपड़े में बच्चे को दो–तीन लपेट देकर सेफ्टी पिन से जोड़ देना चाहिये। इससे बच्चों को रुग्ण होने का डर न होगा, साधारणतया बच्चा के वस्त्र ऋतु अनुकूल होने चाहिये शीत ऋतु मे फलालेन या ऊनी कपड़े और गर्मियों मे मलमल या खद्दर के वस्त्र पहनायें परन्तु एक बुनियायिन सर्दी या गर्मी, वर्षा हर ऋतु मे सब से नीचे पहनानी आवश्यक है। वस्त्र तंग न हो ताकि छाती पर दबाव न पड़े और सांस लेने में कष्ट न हो।

यह भी ध्यान रहे, कि वस्त्र हमेशा सादा व नर्म और ढीला होना चाहिये। क्यों कि बच्चे दिन रात बढ़ते रहते हैं। यहां तक कि पांच महीने के बच्चे का शरीर जन्म समय से दो गुणा होता है। आठ माह के पश्चात् तीन गुणा हो जाता है। अतः उनको तग और शरीर से चिपटे हुवे वस्त्र नहीं पहनाने चाहिये। नहीं तो शरीर को फैलने का अवकाश नहीं मिलने का भड़कीले व रेशमी वस्त्र नहीं पहनाने चाहिये इनके सिवाय फिजूल खर्ची के और कोई लाभ नहीं है। कई लोग मैलखोरे वस्त्र पहनाना पसन्द करते है। केवल इस कारण से कि दूसरे लोगों पर मलेपन का आभास न हो परन्तु मल जो जितना सफेद कपड़े मे असर करता है उतना ही रंगीन में भी इस लिये सफेद वस्त्र पहनाना ठीक है। वह सुलभता से साबुन से साफ हो जाता है जितने वस्त्र पहनाये जाय उनको दूसरे दिन साबुन से धो दिया करें' ऐसा करने से मैल की रुकावट न होने से त्वचा रोग का डर नहीं रहता।

बच्चों का व्यायाम

सन्तान सबको प्यारी है। परन्तु जितना अनुचित प्यार हमारे भारतीय लोग अपने बच्चों

से करते हैं। उतना संसार की जाति कोई नहीं करती। नन्हें बच्चों को बानर की भांति हर समय छाती से लगाये रखते या गोदी में लिये बैठे रहते हैं। ऐसा करना बच्चों के स्वास्थ्य के लिये अति हानिकारक है। अतः उन्हें प्राकृतिक दशा में छोड़कर हाथ पर फैलाने का अवसर देना चाहिये। नन्हे बच्चों के हाथ पैर चलाते रहना ही उनका व्यायाम है। रोना भी उनके लिये एक भांति का व्यायाम है इससे फेफड़ोंका व्यायाम होता है। परन्तु हर समय का रोना अच्छा नहीं, बच्चे जब चलने फिरने लगे तो उन्हें गहने न पहनाये जाये इससे उन्हें बाहर स्वतन्त्रता से खेलने कूदने में रुकावट होती है।

बच्चों का भोजन

अन्न दाता ने जिस भांति माता के उदर में बच्चे के पालन पोषण का प्रबन्ध किया है उसी भांति जन्म के पश्चात भी बच्चे का भोजन दूध के रूप में उसकी माता की छाती में रख दिया अर्थात सबसे पहला और प्राकृतिक भोजन बच्चे के लिये दूध है, साधारणतया पहले ही दिन स्तनों में दूध उतर आया करता है। जिस समय दूध उतर आये तो बच्चे की मां को चाहिये छातियों को इधर उधर से मल कर २-४ बूंदे दूध की गिरा के फिर अंगुठे के ऊपर नीचे अंगुलियां रखकर 'ताकि दूध की रवानी एकसा रहे, बच्चे को दूध पिलाना आरम्भ करे दूध हमेशा बैठकर और बच्चे को गोद में लेकर पिलाना चाहिये और यह भी ध्यान रहे, कि एक ही छाती से दूध न पिलावे बल्कि वारी २ से बदल कर पिलावे यदि ऐसा न किया गया तो दूध दूसरी छाती में जमकर सूजन पैदा कर देगा।

दूध पिलाने का समय

जन्म के पश्चात ४० दिन तक बच्चे को हर २ घन्टे बाद दूध पिलाये जब वह २-२॥ मास का हो जावे तो हर २॥ घन्टे के अनुपात से दूध पिलाये, ३ से ६ मास के बच्चा को ३ घन्टे के बाद, ६ मास के बाद ४ घन्टे के अनुपात से दूध पिलाये जब वहइसका अभ्यस्त होजायेगा तो उसे समय पर भूख लगेगी पाचन क्रिया ठीक रहेगी, रात को माता की नीद में विघ्न न करेगा न बार २ टट्टी करेगा, दिन में भी मां घर के काम काज में बे रोक टोक लगी रहेगी क्योंकि समय पर दूध पी लेने के बाद बच्चा फिर रोता नही, बल्कि सुख से सो जाता है। या खेलता रहता है। जब तक बच्चे के दांत नहीं जमते तब तक प्रकृति मां के दूध में वह पदार्थ उत्पन्न करती रहती है, जिससे बच्चा की बढोतरी होती रहे, दांत जमने से पहले बच्चा का भोजन दूध ही है यदि उसकी माता की छातियों मे दूध कम हो तो या गर्भवती हो जावे तो बालक को उसका दूध न पिलाये, किसी ऐसी धाय का प्रबन्ध करे जिसके पास छोटा बाच्चा हो यदि ऐसा न हो सके तो पशुओं के दूध का प्रबन्ध करे, पशुओं में सबसे अच्छा दूध गधी का है। परन्तु वह कम मिलता है। दूसरे नम्बर पर गाय या बकरी का दूध है। पशुओं के दूध में पानी और मिठास कम होता है। अतः उन्हे मां के दूध के बराबर पतला करने के लिये उचित अनुपात मे पानी और

मीठा मिला देना चाहिये। यदि ३–४ मास के बालक को यह दूध पिलाना हो तो दूध मे आधा भाग पानी मिलाले और गरम करे जब चौथाइ भाग रह जाय तब उतार कर छान ले ताकि मलाई अलग हो जावे थोड़ा मीठा मिला कर गुनगुना २ पिलावे जैसे २ बालक बड़ा होता जाये वैसे ही पानी का अनुपात कम करते चले जाये।

दूध पिलाने की बोतल

यह एक चपटी बीच से चौड़ी दोनों ओर से तंग बोतल होती है। जिसमें दूध भर कर रबड़ की नली से पिलाया जाता है, इससे दूध पेट में जाकर फटता नही इसमे आवश्यकता अनुसार गुनगुना गरम दूध जैसा धारोष्ण दूध होता है, भर कर रबड़की नली से बालक के मुंह में देदें बच्चा बड़े आनन्द से पीता रहेगा जो दूध पीने से शेष बचे उसको गिरा कर बोतल और दूध की नली को गरम पानी से साफ करले नही तो सड़कर रोग पैदा करेगा। जब बालक की अयु अधिक हो जावे तो फिर चम्मच और प्याले से भी काम ले सकते हैं।

एक साल के बाद बच्चे के दांत भी निकल आते हैं, जो इस बात का प्रमाण है, कि अब बच्चे का पेट दूध के अतिरिक्त दूसरा खाद्य पदार्थ भी पचा सकता है। अतः बच्चों को दुध चावल दलिया, डबल रोटी सूजी के बिस्कुट भी दिया करे। परन्तु पूरी, मिठाई, कचौरी, हलवा, पेठा मूंगफली, बादाम इत्यादि देर मे पचने वाली वस्तुएं न दे, इनसे पेट खराब हो जाता है।

दूध पिलाने वाली स्त्री को शिक्षा

बच्चे को दूध पिलाते रहने से स्त्री कमजोर हो जाती है। अतः उसको दूध मक्खन इत्यादि पौष्टिक भोजन खिलावे, जिससे दूध अच्छा बने और बच्चा अच्छी बढ़ोतरी कर सके। उसको अजीर्ण व बादीकारक पदार्थ नहीं खाने चाहिये। जैसे—गोभी, आलू, अरवी, प्याज, मसूर की दाल, बैंगन, अधिक मिर्च, गुड़, भुने दाने, तेल से बनी वस्तु क्यों कि इनके खाने से दूध दूषित होकर बच्चे को रुग्ण कर देता है। थकान, क्रोध डर, रंज की दशा मे शीघ्र स्नान के पश्चात या रसोई से शीघ्र हटकर बच्चे को दूध नहीं पिलाना चाहिये। सबसे आवश्यक यह है, कि दूध पिलाने के समय मे माता पिता को सहवास से बचना चाहिये, क्यों कि सहवास करने से दूध मे गर्मी बढ़ जाती है और वह गाढ़ा हो जाता है। उसको बच्चा पचा नहीं सकता पीकर उलट देता है। या इस दूध से उसका यकृत बढ़ जाता है। यदि ऐसी अवस्था मे गर्भ स्थिति हो जावे तो दूध पीने वाले बच्चे की जिन्दगी वृथा हो जाती है। ऐसी माता का दूध पीने से उसको पारगर्भिक रोग हो जाता है, जिससे पेट बड़ा हो जाता है और हाथ पैर पतले हो जाते हैं। अतः इस कार्य से बचना बहुत ही आवश्यक है।

बच्चे को सुलाना

बच्चे को नींद भी आवश्यक है, इससे स्वास्थ्य ठीक रहता है। अतः उन्हें १८ घन्टे सोने का अवसर प्रदान किया जावे। गर्मी की ऋतु मे उसे अलग चारपाई पर सुलाया जावे ऊपर बारीक मलमल या जालीदार कपड़ा बंद

दिया जावे। जिससे बच्चा मक्खी, मच्छर से सुरक्षित रहे। शरद ऋतु मे जब बच्चों को माता अपने पास सुलाती हों तो एक छोटा तकिया बीच मे रखले। ताकि बच्चा स्वतन्त्रता से हाथ पांव हिला सके, बच्चे को लिहाफ मे दबा कर रखना ठीक नहीं क्योंकि सास लेने में कष्ट होगा, प्रातः काल नींद से एक दम न जगाये बल्कि स्वय जागे।

बच्चों की क्रीडा

जब बच्चा चलने फिरने लग जावे तो उसे साथियों के साथ खेलने कूदने का अवसर दें। बहुत से माता पिता बच्चों को अपनी आंखों से ओझल करना नहीं चाहते। यह ठीक नहीं क्यों कि बच्चे बढ़ने नही पाते, दुबल और सुस्त हो जाते हैं। अतः उन्हें स्वतन्त्रता से बिचरने दें। बल्क माता पिता को उनसे खुद भी हसना खेलना चाहिये यही तो दिन हैं, जब उनका तुतला कर बोलना दंगा करना स्वग जंसा आनन्द होता है।

डराना और मारना

बच्चों को मामूली शरारत करने पर मारना या ताडना ठीक नही और नहीं हौव्वा इत्यादि कह कर भी डराना ठीक नहीं ऐसा करने से बच्चे डरपोक और कम दिल हो जाते हैं।

स्वस्थ बच्चों की पहचान

स्वस्थ बच्चे का मुख प्रसन्न खेल कूद मे लगे रहने की इच्छा, रोता कम है। समय पर खाता खेलता और सोता है। रोगी बच्चा इसके विपरीत दुबला, कमजोर, उदास रहता है। खेल कूद में उसका मन नहीं लगता सदा रोता रहता है।

बच्चों के रोग उनका कारण और निवारण

नन्हे बच्चे बहुत कोमल होते हैं। थोड़े कष्ट से फूल की भांति मुरझा जाते हैं। उन्हें जरा कष्ट होने पर घर भर में उदासी छा जाती है। वह अपने आप बोलकर अपना दुख नहीं बतला सकते, सकेत द्वारा ही उनका दुख जाना जाता है, साधारणतया माता पिता थोड़े रोग में ध्यान नहीं देते या यन्त्र मन्त्र टोने टोटगी के पीछे पड़ जाते हैं। ऐसी अवस्था में रोग बढ़कर भयानक रूप धारण कर लेता है। और बच्चे अपने माता पिता को अपने वियोग से दुखी करके यमलोक को पधार जाते हैं। अतः माता पिता से मेरा नम्र निवेदन है, कि रोगी होते ही बच्चे को शीघ्र ही किसी स्थानीय वैद्य हकीम या डाक्टर को दिखावे और उनके आदेशानुसार दवा दारू करे। अब मैं बच्चों के रोग और उनकी सरल चिकित्सा के अनुभूत योग जो मेरे औषधालय मे नित्य प्रति बरते जाते हैं। जिनको कविराजों के सिवाय सर्व साधारण जनता भी घर बनाकर प्रयोग कर सकती है। लिखता हूँ तिस पर भी जो भाई घर बना सके तो घर बनाले अगर न बना सके तो हमारे औषधालय से बनी बनाई मगाले।

शिरो रोग

शिर दर्द एक ऐसा रोग है। जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु बच्चे नहीं बता सकते कि उनके शिर मे पीड़ा है या

वही शिर पर हाथ फेरने से शिर अधिक गर्म ज्ञात होगा मस्तिष्क और कनपटी की शिरायें फड़कती होंगी तथा शिर को इधर उधर मारता है और दर्द की पीड़ा के कारण रोता है।

चिकित्सा

बच्चे को आराम से सुलाया जाये उसके पास शोर न कर शिर पर सरसों तेल या गर्म घी की मालिश करे शिर को धीरे २ दबाते रहे इस उपचार से शीघ्र ही नींद आ जाती है। और जागने पर शिर दर्द स्वयं बन्द हो जाता है यदि दर्द ज्वर चढ़ने के कारण हो तो एक रूमाल पानी में भिगोकर निचोड़ कर शिर पर रक्खे जब रूमाल सूखने लगे तो दोबारा तर कर के रक्खे या गुलरोगन से शिर तर करदे बारीक पिसी हुई हल्दी गरम पानी में घोल कर बालक के मस्तक पर सहता २ लेप करे यदि शिर दर्द का कारण आपको ज्ञात न हो, तो जलेबी की चाशनी को १–२ बूंद नाक में डाल दे इससे हर भांति का शिर दर्द चला जायेगा।

बच्चों की प्रतिश्याय (जुकाम)

जब बालक को बार २ छींक आती हो नाक बह रही हो कुछ खांसी भी हो तो समझ लेना चाहिये कि बालक को जुकाम है।

चिकित्सा

यदि सर्दी लगने के कारण जुकाम अचानक हो तो चाय जिसमें दूध अधिक हो पिलाए और शिर पर गर्म टोपी पहनाये जलेबी का शीरा अंगुली से दिन में २–३ बार चटाये या बतासे तवे पर गरम करके खिलाये। (२) दाल चीनी सोंठ, बड़ी इलायची के बीज सम भाग लेकर चूर्ण बनाये, मात्रा एक रत्ती से चार रत्ती तक उष्ण जल या चाय से या माता के दूध में दिन मे तीन बार दें इससे नाक व गले की खुजली बन्द होकर नाक बहना बन्द हो जाता है।

यदि साथ में ज्वर भी हो तो नीचे लिखा काढ़ा बना कर थोड़ा २ दिन मे कई बार पिलाये अजवायन १ माशा, सौंफ १ मा०, मुलैठी १ मा० गुलबनफशा ३ मा० काली मिर्च ७ दाने बताशे डाल कर चाय की भांति घूंट २ पिलाये इससे पसीना खूब आ जायेगा और जुकाम ज्वर हट जायेगा यदि नाक से पतला पानी बहता हो तो कुछ बूंदे यूकोलिप्टिस आइल की रूमाल पर डालकर सुंघाए और २ बूंद पानी मे डालकर पिलाये। यदि नाक बन्द हो तो भुने चने गर्म २ की पोटली मे बाँध कर सुंघाये और मस्तक पर टकोर करे इससे नाक खुल जायेगा। और सांस सरलता से आने लगेगा।

बच्चों की मृगी (कमेडिया)

यह रोग १२ वर्ष से कम के बालक को कमेडा और उसके बाद मृगी कहलाता है, खेलता करता बालक क्षण मात्र मे चीख मारकर मूर्छित हो जाता है। आंखों का काली पुतली ऊपर चढ़ जाती है, मुंह लाल व नीला पड़ जाता है। सांस तेजी से चलने लगती है। हाथों की मुट्ठियां बन्द हो जाती हैं। जबड़े बन्द हो जाती है, थोड़ी देर बाद यह दौरा होता है। या

तो दौरा समाप्त हो जाता है या बच्चा मर जाता है, अज्ञानी लोग इसको भूत प्रेत समझ कर यन्त्र, तन्त्र, जादू, टोने मे लगते है। चिकित्सा नही कराते। अतः अधिकतर बालक इस रोग के कारण अकाल मृत्यु के गाल मे चले जाते हैं।

रोग के लक्षण

अजीर्ण से वायु गाढा होकर दिमाग मे जमा हो जाता है या कफ की अधिकता से यह रोग हो जाता है। कभी ज्वर में भी दौरा हो जाता है, यह रोग बड़ा ही भीषण और मारक है; अत: रोग के शुरू होते ही चिकित्सा कराये।

उपचार

दौरे के समय बच्चों के कपड़ों को ढीला कर देना चाहिये और मुंह पर ठंडे पानी के छींटे दें। दोनों भौ के बीच में सोने की सींक या मूंगा को सींक गरम करके दाग दें। यदि स्वस्थ बच्चे को हो तो कब्ज इसका कारण होता है। अत: गुदा मे ग्लीसरीन की बत्ती चढ़ायें या एनीमा करें जहां यह वस्तु अप्राप्त हो वहां पर सनलाईट या और कोई नम साबुन गाजर की भांति छीलकर छोटी अगुली जैसा रखकर उसे घी या ग्लीसरीन से चुपड़कर गुदा मे लगावें। शौच खुलकर हो जायगा और बच्चा रोग के फन्दे से मुक्त हो जायगा।

चिकित्सा

पीली हरड़ का छिलका, पोदीना सूखा, सिहोंथ का छिलका, सम भाग ले कूट कर चूर्ण बनावें। मात्रा—१ मा० गरम पानी या अर्क सोंफ में घोलकर पिलादें।

(२) जुन्दवेदस्तर, केसर, एलवा, निर्विसी, सकमूनियां पीली हरड़ का छिलका, रेवन्दचीनी, दालचीनी, कस्तूरी, जहरमोहरा, संगेयसब, सब को सम भाग लेकर गुलाब जल में घिसकर राई के दाने के बराबर गोली बनावें। मात्रा—छोटे बच्चे को एक गोली एक साल से ऊपर के बच्चे को ३ गोली मां के दूध या गाय के दूध में घिसकर दिन में ३ बार पिलायें। माता व बच्चे को ठण्डी, अजीर्ण कारक वस्तु खाने को न दें।

कर्ण रोग

कान बहना या पीड़ा होना या पानी रह जाना कान की फुन्सी इत्यादि।

लक्षण—बच्चा रोते हुये बार २ कान पर हाथ रखता है और उसे नोचता है, तो समझ लेना चाहिये कि कान मे दर्द है।

चिकित्सा

यदि कान मे फुन्सी के कारण पीड़ा है तो आक का पीला पत्ता लेकर उस पर घी चुपड़कर तवे पर सेक कर कूट कर अर्क निकाल लो छान कर शीशी मे रखलो, समय पर १-१ बूंद गरम करके कान मे डालो फुन्सी फूटकर पीड़ा बन्द हो जायगी। यदि कान से पीप आती हो तो भुना हुआ सुहागा १ मा०, शराब देशी १ तो०, दोनों को मिलाकर शीशी मे रक्खे। दिन मे दो तीन बार ड्रापर (पिचकारी) से १-२ बूंद कान मे डालते रहे। इसी भांति भुनी फिटकरी से भी यह औषधि बना सकते हैं। जो पीप

और रक्त आने को रोक देता है। यदि जख्म हो तो उसको भी भर देता है। यदि किसी भांति कान में पानी पड़ जाय तो एक गेहूँ या धान की नली लेकर उसके एक सिरे पर रुई लपेटकर देशी तेल मे तर करके आग लगादो और दूसरा सिरा कान में लगाकर हाथ से पकड़े रहो, धुयें के जोर से पानी बाहर निकल आवेगा।

कान का मैल निकालना—हाइड्रोजन प्रोक्साइड को चन्द बूंद कान में डाले फिर रुई की फुरेरी से कान साफ करदे।

आंखों के रोग

आंखें दुखना, अधिक गर्मी या धूप के कारण या आंखें गन्दी रहने से मक्खियां हग देती हैं। उससे आंखे लाल हो जाती हैं, और सूज जाती हैं, उनसे पानी चलता है।

चिकित्सा

फिटकरी भुनी हुइ १ मा०, पानी या गुलाब जल ८ तोला मे घोलकर पिचकारी से १ या २ बूद आंखों मे दिन में ३ या ४ बार डाले।

(२) एकरीफिलोबीन एक पीले रंग की एलोपैथिक दवा है। १ रत्ती लेकर २ औंस गुलाब जल में घोल ले और पिचकारी से आंख में डाले, यदि आंख सूज रही हो तो फिटकरी सफेद १ मा०, रसौत ३ मा० पानी में घोटकर ऊपर लेप करदे, अधिक दिन आंखें दुखने या बन्द रहने से उनमें जाला या फोला हो जाता है कपास का फूल छाया में सुखा कर रखे उसे पोटली में बांधकर पानी मे तर करके एक दो बूंद आंख में डाले फूला कट जायगा।

रोहे या कुकरे

(१) भुनी हुई फटकरी, भुना जस्त मिश्री कुज्जा बारीक पीस कर सलाई से लगाये। (२) सफेद फिटकरी १ तोला गुलाबी रंग (जो देखने मे हरा होता है) मगर घोलने पर लाल हो जाता है एक रत्ती दोनों को खूब वारीक पीस कर शीशी में रक्खे और सलाई से लगाये,

दान्त निकलने के समय रोग—सात आठ महीने के लगभग बच्चों के दांत निकलने आरम्भ हो जाते हैं। उस समय किसी बालक को शिर दर्द आखे दुटना पाचन क्रिया के बिगड़ने से दस्त होना इत्यादि रोग हो जाते हैं ऐसी अवस्था मे कोई औषधि काम नही करती अत: बालक की पाचन क्रिया ठीक रखने के लिये एक चमचा चूने का पानी एक रत्ती सोडा बायकार्ब डाल कर नित्य प्रति पिला दिया करे इससे चूने की वह कमी जो दांत निकलते समय हो जाया करती है। पूरी हो जायेगी और खाया पिया पचेगा शिर को गुलरोगन से तर रक्खो बच्चे के हाथ में २–३ अंगुल लम्बा मुलहठी का टुकड़ा छीलकर बांध दो उसके चूसने से दन्त सरलता से निकल आते हैं। या मुलहठी १ तो० सुहागा ६ मासे पीस कर शहद मे मिलाकर बालक के मसूड़ों पर मलते रहो जस्ता और तांबे की बारीक तारों की हसली बना कर उसे काली मखमल मे सीकर बालक के गले मे पहना दो या सीरस के बीजों की माला बना कर पहिना दो। तो दांत निर्विघ्नता से निकल आवेगे।

बच्चों का मुंह आना

यह रोग बच्चे की मां के अधिक गरम वस्तु

खाने से दूध में गर्मी पहुँच कर होता है।

चिकित्सा—बच्चे को हलका विरेचन दो। कास्ट्रायल ६ मा० या १ तोला गरम दूध में पिला दो।

(२) ग्लीसरीन १ तो०, सुहागा २ मा० मिलाकर फुरेरी से मुंह में लगाते रहो, इससे लाल व सफेद दोनों भांति का मुंह आना बन्द हो जाता है।

कौवा गिरना या तालु कंठक

गर्मी और खुश्की से बच्चे का तालु ढीला होकर नीचा हो जाता है। इससे गले में खुजली होकर खांसी होती है तालु में गढ़ा हो जाता है, आंखें अन्दर धस जाती हैं, भूख मन्द हो जाती है, प्यास अधिक लगती है, बच्चा दुर्बल और कमजोर हो जाता है।

चिकित्सा—भुनी फिटकरी, काली मिर्च, माजू समभाग लेकर चूर्ण बनाओ। थोड़ा चूर्ण अंगुली पर लगाकर बच्चे के तालू पर अन्दर की तरफ लगाकर और तालू को ऊपर उठादे। गूलर के दूध से फाहा तर करके तालू पर रक्खे। कॉडलीवर आइल ४-५ बूंद दूध मे डालकर पिलाते रहे।

खांसी

यदि दूध पीते बच्चे की मां स्नान करते ही शीघ्र दूध पिला दे या कफ कारक वस्तु गोभी, चावल, मूली, तेल की तली हुई वस्तु खाले तो बच्चे को खांसी हो जाती है। बच्चे खांसी को थूक नहीं सकते। अत. उनको एक चावल उत्तम रेवन्द दूध में घोल कर दे उससे कै होकर छाती साफ हो जावगी।

(२) काकड़ासिंगी, नागरमोथा, पीपल, मीठा अतीस, छोटी इलायची के बीज, बंशलोचन सम भाग महीन पीसकर रक्खे। बच्चे को एक दो रत्ती माता के दूध में देते रहें।

काली खांसी

यह एक संक्रामक रोग है। जो वबा की भांति बच्चों में फैल जाती है, खांसते २ मुंह लाल हो जाता है, मुंह से तबले जसी आवाज आती है और खांसते हुये कै हो जाती है। जिससे खाया पिया निकल जाता है, यह देर में जाने वाला रोग है। यहां अपना एक अनुभूत योग लिखता हूँ जो शत प्रतिशत लाभकारी है। फटकरी सफेद १ तो० लेकर अजवायन के काढ़े से तीन दिन खरल करे, फिर कुल्हिया में बन्द करके २॥ सेर उपलों की आग में फूंक दे। इसकी १ रत्ती से आधी रत्ती की मात्रा छोटे बच्चे को मां के दूध में दें, यदि बच्चा बड़ा हो तो बतासे या खांड में दे सकते हैं, आठ दिन देने से आराम होगा।

बच्चों को डब्बा

यह बालक का निमूनियां ही कहलाता है। खांसी के साथ ज्वर का होना सांस का जल्दी २ आना सांस लेते समय पसली के नीचे गढ़ा पड़ना, प्यास अधिक लगना इत्यादि लक्षण होते हैं, बच्चों की छाती को कफ से साफ करे, उसारे रेवन्द गरम पानी में घोल कर दें। १-२ दस्त व कै हो जायेगी छाती पर तारपीन व बाबूना तेल मलें और गर्म रुई से सेक दें। 'चिकित्सा' गुलबनफ्शा ६ मा०, गुलसुर्ख ६ मा०, सनाय ६ मा० गूदा अमलतास २॥ तो० सबको पाव

अनुभूत योग

दालचीनी ३ मा०, छोटी इलायची ६ मा०, पीपल १ तो०, वंशलोचन २ तो०, मुक्तापिष्टी १ मा० महीन पीस कर रक्खे। मात्रा—१ र० दिन मे ३ या ४ बार शहद से या मां के दूध में दें। शीतला खसरा हर मियादी ज्वर में लाभ कारी है।

सूखा मसान

इस रोग मे बच्चे सूख कर कांटा हो जाते हैं हड्डियां दिखाई देने लगती हैं, मुख बन्दर जैसा हो जाता है, शिर के ऊपर तालू मे गढा हो जाता है, प्यास अधिक लगती है, दूध नहीं पचता दस्त आने लगते हैं। कारण यह माता पिता के रज वीर्य की कमजोरी से होता है। या स्त्री के थोड़े आयु मे गृहस्थी में फसने से गर्मी पहुँच कर भी यह रोग होता है।

चिकित्सा—अच्छा तो यह है, कि गर्भ रहने के दो महीने पश्चात् स्त्री को ऐसी दवा खिलावे जिससे बच्चा रोगी पैदा न हो। सहदेई के पत्ते ४ तो०, तुलसी के पत्र ४ तो०, अजवाइन देशी १ तो० खरल करके चने जैसी गोली बनाले। माता को गर्भ की दशा मे एक या दो गोली प्रातः ताजे पानी से देते रहे तो जन्मने पर बच्चे को यह रोग न होगा। बच्चे को मसान का रोगी होने पर निम्न लिखित दवाइयों में जो चाहे दें।

(१) गेहूँ का आटा गूंद कर मुर्गी के अण्डे पर एक अंगुल मोटा लेप करदे और उसे गरम भूभल में दबादो जब आटा लाल हो जाय तो कीवर की जर्दी ले ले और खांड मिलाकर रक्खें मात्रा—४ र० एक चम्मच दूध में डालकर पिलाते रहें। दो–तीन महीने में बच्चा मोटा ताजा हो जावेगा।

(२) मछली का तेल २–२ बूंद प्रातः सायं दूध में पिलाते रहें।

(३) सूखालीन पावडर और विटामिन मालट्री ड्रोप जो अंग्रेजी दवा बेचने वालों के यहां से मिलता है। उसका उपयोग करें।

(४) कैल्सियम विद विटामिन डी की सूची का मांसान्तगत प्रयोग करे अब ऐसे दो योग लिख कर जो मेरे अनुभूत हैं। और बच्चे को हर रोग मे लाभ दायक है। स्वस्थ बच्चे को देने से हर रोग से सुरक्षित रहता है। लेख को समाप्त करता हूँ। और पाठक गण से प्रार्थना करता हूँ कि योगों को बना कर बच्चों को दें। ताकि शिशु ससार रोग मुक्त होकर मुझे आशीर्वाद देते रहें।

(१) सनाय की पत्ती १ तो०, गुलाब के पुष्प १ तो०, बनप्सा के पुष्प १ तो४, अमलतास का गूदा ५ तो० इन सब औषधियों को डा॥ सेर पानी मे पकावे पाव भर पानी शेष रहने पर मलकर छान ले ठन्डा होने पर आधा पाव शहद घोलकर बोतल मे भरले औषधी तयार है। ज्वर, खांसी, जुकाम, कब्ज, पेटदर्द इत्यादिमें एक छोटा चम्मच मे औषधि लेकर उसमे बराबर गर्म पानी मिला कर दिन में दो बार दें, यदि दस्त हो रहे हो तो ठन्डा पानी मिला कर दे, दस्त बन्द हो जायेगे इसके देते रहने से बच्चे की हाजमा ठीक रहता है।

[शेष ७६ पेज पर]

दन्तोद्गम

आदरणीय बन्धु श्री गोविन्द बल्लभ जी पंत
इञ्चार्ज राजकीय औषधालय, बम्हनी
वाया अनूपपुर शहडोल (M. P.)

आपने 'दन्तोद्गम व बाल शोष में मेरा अनुभव' दो लेख भेज कर जो माला के सवारने में सहयोग दिया है, उसके लिये धन्यवाद।

वि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

दन्तोद्गम को व्याधि का नाम नहीं दिया जा सकता, मेरी समझ से कोई व्यक्ति यह नहीं कहेगा कि दन्तोद्गम का रोग हो गया है। दन्तोद्गम का स्थान अपनी जगह पर स्वाभाविक है। जैसे—आंख का देखना, कान का सुनना, जिह्वा का रसास्वादन करना इत्यादि कार्य स्वाभाविक हैं, वैसे ही दांतों का उगना, वा उखड़ना भी स्वाभाविक है।

मगर ये दांत आते जाते दोनों समय बड़ी ही परेशानी पदा कर देते हैं। मैं इनके विषय में बहुत कुछ यहां पर लिखता मगर विषयान्तर होने का भय लगा रहता है। यहां पर तो केवल मात्र बच्चों के दन्तोद्गम के विषय मे संक्षेप में लिखना है। कारण जैसा मै व्यक्त कर आया हूँ यह रोग न होने पर भी एक महान व्याधि बन जाती है, कभी २ तो प्राण लेवा भी हो जाता है, अन्य रोगोत्पत्ति का कारण बन जाती है, जो भी हो बच्चों को बहुत परेशानी होती ही है। बच्चों के दांत सात माह से उगने शुरू हो जाते हैं शनैः २ वह निकलते हैं। मगर दुःख पहली दन्तोत्पत्ति में ही होता है, बाद में उतना नहीं होता है।

मेरी जानकारी मे ४० प्रतिशत को कष्ट हो जाता है। बड़े अच्छे सुडोल, हृष्ट-पुष्ट बच्चों को भी इसका शिकार होना पड़ता है, और हर तरह का कष्ट हो जाता है। हरे पीले दस्तों का होना, बुखार आना, पेचिश पड़ना, आंख का दुखना, शरीर का सूख जाना, शरीर का दुखना, यानि समग्र व्याधियों का आक्रमण हो जाता है एक विद्वान ने इसके निदान मे अपना बहुत ही अच्छा अनुभव लिखा है कि—

पृष्ठभग्ने विडालानां मयूराणाञ्च शिखोद्गमे।
दन्तोद्गमे च बालानां नहि किंचिदिहदूष्यते॥

इससे प्रत्यक्ष हो जाता है कि बालक को कितना कष्ट होता है, कितनी असह्य वेदना उसको होती है, अगर पूछा जाय तो कहना पड़ेगा कि इसका अनुभव स्वयं वही बता सकता है, दूसरा नहीं। अगर सच कहिये तो स्वयं वह भी इसे व्यक्त नहीं कर सकता है, वह कष्ट अवर्णनीय है। इस लिये चिकित्सक के लिये यह विषय बहुत ही मननीय बहु ज्ञातव्य हो जाता है। अगर चिकित्सक बीमारी के साथ अपना पूर्ण कर्तव्य का निर्वाह नहीं करता है, तो वास्तव मे वह मानव समाज के साथ महान अन्याय करता

है और चिकित्सक कहलाने योग्य उसकी स्थिति नही रह जाती है।

चिकित्सा—

(१) बालचतुर्भद्र २-२ र० ४-४ घन्टे में मधु के साथ देते रहना चाहिये, बहुत बार बच्चे बालचतुर्भद्र की चरपरता के कारण व्याकुल हो जाते हैं। सर्व प्रथम तो दवा को धीरे २ थोड़ी २ करके बीच जिह्वा मे लगाकर चटाना चाहिये फिर भी व्याकुलता हो तो थोड़ा सा मधु रस उसे चटा देना चाहिये, और ऊपर दूध पिला देना चाहिये, तो बच्चा ठीक हो जाता है। व्याकुलता को देखकर घबराना नहीं चाहिये। इस बालचतुर्भद्र से प्राय: सभी दोष शान्त रहते हैं, उपद्रव बढ़ने नहीं पाते।

(२) मसूड़ों में मधु व सुहागा मिलाकर रगड़ना चाहिये, इससे दांतो के निकलने में सुगमता होतीं है, खांसी व पेटका फूलना भी बन्द हो जाता है, टट्टी बराबर साफ होती है।

(३) ज्वर—ज्वर होने पर आधी रत्ती की दर से आनन्द भैरव व आधी र० की दर से दन्तोद्भेद गदान्तक रस की एक मात्रा बना कर ४-४ घन्टे मे चटाना चाहिए।

(४) पेचिस—मे लवंग चतुस्सम रस १ रत्ती की मात्रा मे बेल के मुरब्बे के शीरे मे या थोड़े से बेल के गूदे में दवा मिला कर मां के दूध में घोल कर ४-४ घटे मे पिलाना चाहिये।

(५) आख दुखने पर—फिटकरी की खील करीबन २ माशा लेकर एक पाव गुलाब जल में घोलकर बराबर दिन मे ३-४ बार टपकाना चाहिये।

(६) रोहो पर—दारु हल्दी का लेप बाहर से लगाना चाहिये या रोहो के पकजाने पर बोरिकपोडर से रोहो को फोडकर फिटकरी जल को डालना चाहिये, बाहर मुर्दासंग का लेप कर देना चाहिये, रोहे पके है या नहीं इसकी पहिचान सरल है पहले तो बाहर से पता चल जाता है, अगर नया २ बिमार आया हो तो पलक वाले बाहर भाग को पलट देना चाहिये, अन्दर वा लाल २ हिस्सा दिखाई देने लगता है यह सफेद या गंदासा दिखाई देता है। उस पर बोरिकपोडर छिड़क दो और रुई से रगड़ दो, खून निकलेगा निकलने दो डरोमत, बादमें नमक के पानी से धो डालो, नमक का जल इस तरह बनाओ कि २ रत्ती सेंधा नमक, या सलाइन टेबलेट लो और पाव भर पानी मे डाल कर उबाल डालो, और रखदो समय पर काम में लाओ।

(७) लाइम वाटर (चूने का पानी) का बराबर प्रयोग करो, अगर १-२ वर्ष तक इसका सेवन करते जाओ तो हानि तो होगी ही नहीं बहुत लाभ होगा, अस्थि जन्य अभिवृद्धि मे यह एक बहुत ही लाभप्रद औषधि है, बच्चों का अमृत है।

इस प्रकार दन्तोद्गमभंजन व्याधियों औषधोपचार करने से बहुत लाभ होता है। बाजार में एक टोषिगवायर मिलता है उसका उपयोग भी बड़ा लाभ प्रद है, (Uosd wrde graif water) भी बहुत लाभ प्रद है।

मेरा बिश्वास है चिकित्सक वर्ग उपरोक्त औषधियों का अगर अधिक से अधिक प्रयोग

वाल शोष में मेरा अनुभव

(सूखा मसान रोग)

ले०—वैद्य श्री गोबिन्द वल्लभ जी पन्त इञ्चार्ज रा० आ० औ० बम्हनी अनूपपुर—शाहडोल

अपने आज तक के चिकित्साकाल मे मुझे बहुत से बालक इस रोग से पीड़ित मिले हर वर्ग के हर समाज के बालक इस रोग से ग्रसित हो जाते हैं यह कहना नितान्त अव्यवहारिक है कि खाने पीने वाले घरों मे यह रोग नहीं होता है, हां जहां पर बच्चों के स्वास्थ्य की देख भाल होती है, वहां पर यह रोग कम होता है या शुरूयात में ही उपचार हो जाने से प्रायः रोग बढ़ने नही पाता है।

इस रोग मे मां बाप भी दोषी नहीं है। स्वस्थ मां बाप के लड़कों को भी यह रोग हो जाता है, और बड़े ही दुबले पतले अस्थि चर्म युक्त व्यक्तियों के बच्चों को भी यह रोग नही होता है।

इस लिये रोग यों होता है इत्यादि परिभाषा में मैं इसे आबद्धकरना भी प्रसंगत नही मानता हूँ। परिभाषा वही है जिसमे पूर्णरूपेण 'ही' का प्रयोग हो सकता है। यह तभी होगा जब 'भी' को जगह न मिल पायगी, भी को जगह तभी नहीं मिलेगी जब ही उसे शत प्रतिशत सही सिद्ध कर देगा।

हां जिस बच्चे में इस रोग की शुरूयात शुरू होती है। सब प्रथम उसकी पाचन क्रिया पर असर पड़ता दिखाई देता है। प्रायः जब बच्चे के मां बाप यह कहते नजर आते है कि बच्चे के धातु पड़ती है, तब फौरन कुशल वैद्य उसके विबन्धों की चिकित्सा करना आरम्भ कर देता है। और उसे सतक डाकर दवा करनेको कहता हैं। प्राय: करके आक्रान्त बालकों को दस्त की सिकायत लगी रहती है हरा पीला सफेद दस्त आता रहता है, बच्चे की मुंह की कान्ती क्षीण होती जाती धीरे २ हाथ पर पतले होते जाते है और पेट वा शिर बड़ा २ लगने लगता है। बड़ा ही बद सूरत सा बालक लगने लगता है। अगर चिकित्सक ऐसे बच्चों की कण्डपालिका में नाखून भी गढ़ाय तो इन बच्चों को दर्द मालूम नहीं होता है। इन्हें रोता देखकर बड़ी दया सी लगती हैं, सच पूछिये तो ए बड़े हीं दया के पात्र मालूम पड़ते है, एक चिकित्सक ने क्या ही अच्छी परिभाषा की है—इस रोग की।

संशोषणात् हि धातूनां, शोषमित्यभिधीयते।
क्रियाक्षय करत्वाच्च, क्षय मित्युच्यते पुनः॥

इस रोग मे समस्त धातुओं का संशोषण होने से, "रसात् रक्तं ततो मांसं मांसात् मेदः प्रजायते, मेदोस्थि ततो मज्ज मज्ज शुक्रस्य सम्भवः" ये सातो नहीं बन पाते हैं, वाल्यावस्थामें बच्चों के लिये मुख्य है, अस्थि, इसके बल पर समस्त भावी शरीर का निर्माण होता है जैसे किसी भी वस्तु को ढालने के लिये सर्व प्रथम

करेगा तो आयुर्वेद के चमत्कार के साथ २ बच्चों का भी कल्याण करेगा। इस विषय मे मैंने अपने लेख बच्चों की दवा आयुर्वेदीय ही क्यों। में विस्तृत से लिखा है, जो आयुर्वेद संदेश लखनऊ मे प्रकाशित हो चुका है।

सांचा ढालना पड़ता है। वैसे ही मानव शरीर के आदि मे अस्थि का निर्माण मुख्य है, अगर अस्थि का बढ़ना रुक जाय तो बालक की बढोतरी स्वयं रुक जायेगी, अगर उनमें मांस भी चढ़ गया तो वह और बेडोल या असाद्ध बनता जाता है।

इस लिये चिकित्सक का प्रथम कर्तव्य है कि वह अस्थि वधक औषधियों का प्रयोग मुख्यतया करता जाय, इसका मतलब यह नही कि वह अन्य विषयी पर ध्यान ही न दें। प्रायःकर औषधि व्यवस्था करते समय चिकित्सक को इन तीन बातों पर तो अवश्य ध्यान देना ही चाहिये, कि रक्त वधक, अस्थि वर्धक या पाचक औषधियों की प्रधानता तो रखें ही, साथ २ समय पर होने वाले इन उपद्रवों पर भीविशेष ध्यान रखे कि जो प्राय: हो ही जाते है।

उदाहरण के तौर पर पेट फूल जाना, एहसा ज्वर आ जाना, आंख दुखनी आजाना आदि।

इस लिये आयुर्वेदज्ञांने बड़ी अच्छी औषधि व्यवस्था की है मैंने बहुत से रोगियों में इसे अजमाया है। एक चित्र भी उदाहरण के तौर पर भेज रहा हूँ। जो स्वस्थ होने पर कितनी सुन्दर वा स्वस्थ बालिका है।

मै औषधियों की मात्रा निधारण करने से पहले यह भी व्यक्त कर देना चाहता हूँ कि यह रोग प्राय: १ से ५ वर्ष तक के बच्चों को ही होता है। इस लिये आधी से तीन रत्ती तक की मात्रा का जिक्र यहां पर किया जायगा, उसका सीधा तात्पर्य यह होगा कि १ साल के बच्चे को आधी र० से शुरू करनी चाहिये, ५ साल के

बच्चे को ३ र० से, इसकी बीच की उम्र की औषधि की मात्रा व्यवस्था करना कठिन नहीं है, इसी अनुपात के अनुसार करनी चाहिये।

(१)	बराटिका	१/२ र०
	टकण	१ र०
	मण्डूर	१/४ र०

४-४ घन्टे के अन्तर से मधु से, या मां के दूध से।

(२) चूने का पानी—छोटे २ बच्चों को जिन्हे पानी नहीं पिलाते है, यह मै इस लिये लिख रहा हूँ कि, गांवो मे बच्चों को साल सवा साल तक पानी देते ही नहीं यद्यपि यह प्रथा ठीक नहीं है। पानी न पिलाने से बच्चे के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, मैंने स्वयं देखा है और किया है, बच्चे के पैदा होने पर गरम पानी १ तोला मे थोड़ा सा शहद मिला कर पिला दिया जाय तो बच्चों को बहुत ही लाभप्रद होता है।

हां—उन बच्चों के दूध को गर्म करने से पहले १ तो० इसी पानी को मिलाकर पिला दिया जाय तो बहुत लाभप्रद होता है। यह ध्यान रहे कि दूध उतना ही गरम किया जाय कि जितना बच्चा एक बार पी सकता है। यह प्रथा भी बिलकुल गलत है कि एक बारगी में सारा दूध गरम किया जाय, जब २ पिलाया जाय तब २ उसे गर्म किया जाय, यह भी धारणा गलत है कि दूध गाढ़ा हो, गाढ़ा दूध देर मे हजम होता है, बच्चों की पाचन शक्ति वैसे ही नाजुक होती है, इस लिये बच्चों के दूध के लिये तो यह खास ध्यान रखना चाहिये कि वह पतला हो, अगर गाढ़ा दूध हो तो उसमें पानी मिलाकर ही गरम करना चाहिये तभी पिलाना चाहिये, यह ध्यान रहे गरम करते समय वह पानी पूरा सूख न जाय बल्कि एक ही उफान काफी है। बहर हाल इस बात का ध्यान रहे कि दूध गाढ़ा न होने पाये।

और जो बच्चा पानी पीते हैं उन्हें दिन भर में ४-५ बार २-२ तोला के मान में पिलाना चाहिये।

मैंने इस रोगी के अन्दर एक बड़ी ही विचित्र शक्ति देखी है। आप मुर्गी का एक अण्डा लीजिये, और उसमे एक बिरची के मुख के बराबर छेद करदे और रोगाक्रान्त बालक की गुदा पर उस छेद को रख कर अच्छी तरह दबादें, बच्चा गुदा मार्ग से उस सारे अण्डे की जर्दी को पी जावेगा, इस प्रकार उस दिन २-३ जितने अण्डे वह पी सके पिलादो, फिर ५-७ दिन बाद पुनः प्रयोग करो, इस रोग की यह भी एक अमोघ दवा है और रोग निदान मे मुख्य वस्तु भी है। हर वैद्य को इसका प्रयोग करना चाहिये और डायरी में नोट करनी चाहिये।

हां एक बात भूल गया था, उस चूने के पानी को बनाने का यह तरीका है कि खाने का चूना डली वाला बिना बुझा हुआ लो, और एक पाव पानी में १ र० चूना डाल दो, जब चूना बुझ जाय तो उस बोतल को खूब हिलाओ और बर्तन को रखदो, जब पानी साफ दीखने लगे सफेदी नीचे बैठ जाय, तो उसे खद्दर के रूमाल से तीन बार छान लो और हरी बोतल में भरदो, इस पानी मे कीड़े भी नही पड़ते हैं, और न यह पानी सड़ता ही है, इस लिये एक बार मे ज्यादा भी बनाया जा सकता है।

(३) मालिश—इस रोग में मालिश बहुत ही लाभप्रद है। दिन में दो-तीन बार ऋतु के अनुसार मालिश करनी चाहिये। जैसे गर्मियों में तीन बार मालिश ठीक नहीं है क्यों कि मालिश की गर्मी व ऋतु की गर्मी दोनों नुकसान देह हो सकती हैं इस लिये गर्मियों मे सुबह व रात्री में जब ठण्ड हो, तभी मालिश उपयुक्त मानी जा सकती है, मगर जाड़ों में यह हर समय ही उपयुक्त है।

मालिश के तैल को बनाने की विधि इस प्रकार है—४ मासा सेंधा नमक को एक छटांक पानी में अच्छी तरह घोल दो, और पाव भर सरसों या तिल्ली के तेलमे उस पानी को मिलादो और इतना पकाओ कि पानी जल जाय, और तेल भर रह जाय, उसी तेल की मालिश करो, लिखने का तात्पर्य यह है कि अगर सरसों का तेल प्राप्त न हो तो तिल का तेल भी काम में

लिया जा सकता है। इसी प्रकार अगर सेंधक नमक प्राप्त न हो पाय तो सोंचर से भी काम चलाया जा सकता है।

आधुनिक चिकित्सक शास्त्रियों ने भी इसी का अनुकरण करते हुये अपनी परिभाषा बना कर इन्हीं दवाइयों का उपयोग किया है, वे लोग अधिकांश Astrocelicium with wita-min C (एट्रोकैल्सियम विद विटामिन सी) के इन्जेक्शन भी लगाते हैं, और पीने को भी देते हैं, Tdexolean (एडेक्सोलीन) जो तरल या कैपसूल के रूप मे प्राप्त होता है उसका प्रयोग भी करतेहैं, कोल्ड लीवर आइल (Coud leavre oil) की पिल्स भी देते हैं व तरल भी पिलाते है तथा मालिश भी करते है।

यानी कैलसियम या विटामिन एक प्रयोग यह भी करते है वराटिका में सभी कैलसियम शतप्रतिशत है, लाइमवाटर (चूने का पानी) शतप्रतिशत कैलसियम है, साथ ही साथ इन द्रव्यों के अन्दर जो विशिष्ट गुण है वह प्रथम ही है, जो आयुर्वेदज्ञ व्यामोह मे पड़े है वह एक ही साथ दोनों रोगियों पर इन दो विभिन्न औष-धियों का प्रयोग करे और रिजल्ट देख काला-न्तर तक परीक्षण करें। उनके तमच्छादित हृदय से पर्दा हट जायगा, मगर परिस्थित हूँ वह दूसरी है, मैंने कलेवर बढ़ने के भय से सक्षेप में वह व्यक्त किया है जो भी व्यक्त किया है, वह केवल सिद्धान्तों पर आधारित मात्र नहीं हैं। अपने प्रत्यक्ष प्रयोगों पर शास्त्र यह आधा-रित है।

मुझे विश्वास है कम से कम आयुर्वेदज्ञ तो इसका परीक्षण करेंगे, सचाई में पर्दा पड़ सकता है मगर उसे मिटाया नहीं जा सकता, पर्दा हट सकता है।

[७० पेज का शेष]

बच्चा रोगी नही होता

चूना बिना बुझा ५ तोले लेकर सवा सेर पानी में भिगो दे दो तीन दिन तक उसे हिलाते रहे आधे दिन बिना हिलाये उसका निथरा हुआ पानी लेलें और उसमे सवा सेर खाड या मिश्री डाल कर शर्बत को चासनी करे एक तार की चासनी आने पर उसे उतार ले और उसमे १ तोला टिंचर कारडिको मिला दें ठान्डा होने पर बोतल मे भर लें। मात्रा–१ मासे से ३ तक थोड़े दूध या पानी में डाल कर पिलाते रहे सेवन कराने से गुण स्वयं ही ज्ञात हो जायेगा।

कण्ठ रोहिणी

श्री बन्धु सुरेश जी दीवान मु० पो० रोहना
जि० होशंगाबाद (म० प्र०)

आपने बालकों के भयानक रोग कण्ठ रोहिणी पर अच्छा प्रकाश डाला है, आशा है माला के पाठक इससे लाभ उठावेंगे।

—वि० स० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

गल देश मे वात पित्त या कफ दूषित होकर अथवा तीनों दोष मिलकर अथवा रक्त प्रकुपित होकर मांस को दूषित कर देते हैं, इससे कण्ठ में अवरोधक मांसांकुरों की उत्पत्ति होने लगती है जिसे कण्ठ रोहिणी कहते हैं।

वातज कण्ठ रोहिणी लक्षण—तालू और कण्ठ का शोथ होना है साथ ही हनुस्तम्भ और ओत में पीड़ा होती है।

पित्तज रोहिणी लक्षण—कण्ठ मे अंकुरोंकी शीघ्र उत्पत्ति दाह एवं शीघ्र पाक होता है एव तीव्र ज्वर रहता है।

वाग्भट्ट के अनुसार इस रोहिणी मे ज्वर कण्ठ शोष, प्यास, मोह, कण्ठ से धूम्र का निकलना भासित होना, अंकुरों की शीघ्र उत्पत्ति, शीघ्र पाक, रक्त वर्ण, स्पर्श सहन न होना आदि लक्षण प्रदर्शित होते हैं।

कफज कण्ठ रोहिणी लक्षण—यह रोहिणी स्रोतो की रोधक, अचल व ऊंची उठी हुई, पांडु वर्ण की होती है।

सन्निपातज कण्ठ रोहिणी—यह रोहिणी गम्भीर, पाकयुक्त, त्रिदोषज, एवं असाध्य होती है।

रक्तज कण्ठ रोहिणी लक्षण—यह रोहिणी लाल अङ्गार के सदृश वर्ण वाली और कानों को पीड़ा करने वाली होती है।

संक्रमण—यह एक विशेष प्रकार का सक्रामक रोग है। रोग से पीड़ित व्यक्ति की पेंसिल मुह मे डालना, चुम्बन, बातचीत, हंसते समय झूठे अन्न का सेवन इत्यादि से इसका संक्रमण होता है।

दूध द्वारा भी इसका संक्रमण होता है। ये कीटाणु सूर्य प्रकाश एवं शुष्क वायु में निर्बल हो जाते हैं। परिचर्या करने वाली नर्स कई बार इससे पीड़ित हो जाती है।

आधुनिक मतानुसार रोग उत्पत्तिः—यह रोग लेप्स लौफर-वैसिलस वेक्टीरिया द्वारा होता है। इन जीवाणुओं को कोराइनी वेक्टी, रियम डिप्थीरिया भी कहते हैं। ये एक कोशीय अचल, सूक्ष्म दर्शी, प्लियोमारफिक, वायु में विचरनशील जीवाणु होते हैं। इसका प्रसार समशीतोष्ण और शीतल जल वायु वाले भाग में अधिक होता है। भारत में यह रोग शरद ऋतु मे विशेषतः फैलता है। सर्वाधिक रूप से इसका सक्रमण ४ से ५ वर्ष के बालकों में अधिकतर होता है। १० वर्ष से अधिक आयु वालों में अपेक्षाकृत कम आक्रमण और १५ वर्ष की आयू के वाद इसका आक्रमण अत्यल्प होता है। इसका अधिवास काल से २ से ४ दिन और १२ से २४ घटों के अन्दर मालूम होने लगता है।

शरीर विकृति:—डिफ्थीरिया मे होने वाली विकृति विष को सशोषण से होती है, यह विष स्थान विशेष से लसीका वाहनियों द्वार। शरीर के सब अगों मे जाता है। तन्तु वृति के उत्तान परत पर एक असत्य कला की उत्पति होती है, इस कला से प्रभावित स्थान उपजिह्वा का, तथा उसके निकटस्थ प्रदेश एवं स्वर यन्त्र है। अधिजिह्वा का, श्वास नलिका श्वसनिका और नासापुट भी आक्रान्त होते हैं।

हृदय की पेशियों पर रोहिणी जन्य विष का प्रभाव शीघ्र होता है जिसके कारण एक साथ क्रान्ति होती है।

वातसंस्थान पर इसका प्रभाव परिधि गत सञ्चालक और सवेदक नाड़ियों की श्याम अपक्रान्ति के रूप में होती है।

विष के कारण वृकों में श्लेष्मिक कला की अपक्रान्ति होती है।

गलतोरणीव देश तथा स्वरयत्र में रोहिणी होने से श्वास-प्रणाली का प्रदाह और फुफ्फुस प्रणाली का प्रदाह होता है।

लसीका ग्रंथिया भी कुछ बढ़ सकती हैं। हनु के नीचे भाग मे और कण्ठ में लसी का ग्रंथिवों की साधारण वृद्धि देखी गई है।

लक्षण—सर्व प्रथम गले में दर्द या खांसी आलस्य गले में शोथ, जी मचलाना शिरदर्द, स्वर भंग आदि लक्षण दिखाई पड़ते हैं। ज्वर अधिकतर १०१ के लगभग कभी २ १०३ से अधिक मुखमंडल धूमरित और जानुक्षेप का अभाव होता है।

१/३ रोगियों में प्रथम सप्ताह से ही ओजोमेह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। निगलने में कठिनाई होती है। तुण्डिकाओं पर धूमर वर्ण का धब्बा दृष्टि गोचर होता है जो शीघ्र ही असत्य कला का रूप धारण कर लेता है, इस कला को बलात अलग करने से रक्त स्राव होने लगता है। लसीका ग्रंथियों की वृद्धि तथा तीव्र नासिका स्राव भी इसके लक्षण हैं। अन्तिम अवस्था मे त्वचा पर पिडिकाए निकलती हैं। रोगी के मुँह से एक विशेष प्रकार की दुर्गन्ध आती है गभीर अवस्था मे रोगी नाक से बोलता है ओष्ठ, मुंह, नेत्र नीले हो जाते हैं। नाड़ी तीव्र असम रूप से चलती है तथा हृत पेशी कमजोर हो जाती है।

रोग विनिर्णय—पीड़ितावस्था मे मवाद की सूक्ष्म दर्शी परीक्षा करने पर उसमे लेप्स लोफ्र बसिलस बैक्टीरियम दिखाई पड़ते हैं। रक्त की जांच करने पर उसमें पोलीमार्फ व श्वेत कण वृद्धि ज्ञात होती है। प्रारंभ में लसीका मेह तथा जानुक्षेप के अभाव से भी इसका निर्णय हो जाता है।

चिकित्सा—एलम प्रेसिपिटेट टाक्साइड का अन्त: क्षेपण करने से रोगोत्पत्तिकी सभावना अति कम हो जाती है। रोगी ठीक होने पर उसे ४ सप्ताह तक पृथक रखना चाहिये तथा स्कूल जाना बन्द करा दे। रोगी से संमिलित कपड़े बर्तनों का विशोधन आवश्यक है। रोग ग्रस्त घर के सब व्यक्तियों की कीटाणु परीक्षा करते रहना चाहिये तथा उन्हे ५०० यूनिट एन्टी टॉक्सिन का सूची देना चाहिये।

रोगी को स्वच्छ वातावरण एवं प्रकाश वाले कमरे मे रखे। रोग के ३ दिन व्यतीत होने के पूर्व डिप्थोरिया एन्टी-टॉक्सिन के सूचीवेध से रोग मुक्ति की संभावना काफी रहती है। एन्टी टोक्सिन की मात्रा आयु पर आधारित न होकर रोगावधि और मिथ्या-पटल के प्रसार पर होती है। रोग की प्रथमावस्था में ८००० से २०,००० यूनिट तथा तीव्रावस्था मे २०,००० से १ लाख यूनिट एक दिन में देना चाहिये।

असत्य कला के प्रसार को दृष्टिगत रखते हुये यह मात्रा १२ या २४ घटे मे दुहरा सकते हैं। घातक अवस्था में डिप्थीरिया Anti-K-oxin का प्रयोग शिरान्तगत करना चाहिये।

शिरामार्ग से १ लाख से २ लाख यूनिट तक दवा दी जाती है, शिरामार्ग से औषधि देते समय कम्प और अवसादक मोह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है इस लिये सावधानी रखनी चाहिये।

स्वर यन्त्र रोहिणी मे तत्काल Anti-toxin तथा वाष्पीय स्वेदन से शस्त्र क्रिया की आवश्यकता प्रायः नहीं होती।

हृदय पतन होने पर हृदयोत्तेजक औषधि यथा—हेमगर्भ पोटली रस, लक्ष्मी विलास रस, कस्तूरी, सञ्जीवनी सुरा, पूर्ण चन्द्रोदय आदि प्रयोग मे लाना चाहिये।

पक्षाघात की स्थिति में एकांगवीर रस और नवजीवन रस उपयुक्त हैं।

ओजोमेह की अवस्था में प्रति दिन शिलाजीत २ र०, शीतल मिर्च २-२ ग्रा० के फाण्ट के साथ वमन की अवस्था में मुख द्वारा भोजन करने की असमर्थता उत्पन्न होने पर ५ प्रतिशत ग्लूकोज उष्ण साधारण लवण जल के साथ उत्तर वस्ति द्वारा दें।

ज्वर की निवृत्ति हेतु ज्वर केसरी वटी, आनन्द भैरव रस, त्रिभुवनकीर्ति रस, लक्ष्मी नारायण रस का प्रयोग करे।

प्रथमावस्था में लोकनाथ रस का प्रयोग हितकारी है।

साध्य रोहिणी में आयुर्वेदानुसार रक्तमोक्षण वमन, कंवलधारण, प्रतिसारण, घूम्रपान एव नस्य का प्रयोग करना लाभदायक है।

पथ्यापथ्य—भोजन के रूप मे दूध का उपयोग करें। वमन की अवस्था मे मोसम्बी का रस दें। अल्कोहल इत्यादि उत्तेजक पेयों का उपयोग यथा सम्भव न करना चाहिये।

हूपिं खांसी की होमियोपैथिक चिकित्सा

श्री डा० बनारसीदास जी दीक्षित
H. M. D. S.
दीक्षित फार्मेसी मु० पो० रक्सौल
चम्पारण (बिहार)

आपने हूपिं खांसी की होमियोपैथिक चिकित्सा नामक लेख भेजकर माला के सवारने में जो सह योग दिया है, इसके लिये धन्यवाद।

वि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

परिचय—

हूपिं खांसी का दूसरा नाम पार्टू सिस् (Pertussis) भी है। देहाती भाषा मे इसे कूकर खासी भी कहते हैं। यह बच्चों की बहुत बहुत ही कष्टप्रद बीमारी है।

कारण—

जीवाणु तत्व विद् इसकी उत्पत्ति का कारण एक प्रकार के जीवाणु को मानते हैं। प्रसिद्ध अध्यापक डा० बर्डेट साहब ने सर्व प्रथम इस जीवाणु की खोज की थी। अतः इस जीवाणु का नाम वर्डेट वेसिस रखा गया था। यह जीवाणु स्वस्थ शिशु के नाक एवं कण्ठ में प्रवेश होकर श्वास नली की श्लेश्मिक झिल्ली एवं भोगास् (Vagus narve) मे अत्यन्त उत्तेजना पैदा कर देता है। अतः स्नायु मण्डल मे उत्तेजना पैदा होकर आक्षेपिक खांसी आरम्भ होती है।

रोग की प्रबल अवस्था के समय उक्त जीवाणु रोगी के मुंह से होने वाले स्राव मे पाये जाते हैं। इस स्राव के सूख जाने के उपरान्त भी यह जीवित अवस्था मे रहते हैं और हवा के साथ उड़कर संक्रमण करते हैं।

यह बीमारी संक्रामक है यह सभी पैथी वाले मानते हैं, मोहल्ले में एक बच्चे को होने पर प्रायः उसके सम्पर्क में रहने वाले सभी बच्चों को यह रोग हो जाता है। प्रायः ६ से १० वर्ष तक के बच्चों को अधिक होता है। शरद और बसंत ऋतु मे इसका प्रकोप विशेष होता है। किसी २ बच्चे को हाम (मसूरिका) रोग के बाद भी होते देखा गया है। रिकेटस् (सुखंडी) रोगयुक्त एव दुर्वल बच्चों मे इस रोग का होना बहुत खतरनाक है।

पैथोल जी का निदान—

यह एक स्नायविक रोग है, फुफ्फुस पाका शक्ति स्नायु को (Pneumogastricnerve) जो सब शाखाएं स्वर यन्त्र फुसफुस के कार्य को नियन्त्रित करते हैं उनसे उपरोक्त जीवाणु के विष (Toxin) के कारण उत्तेजना पैदा हो जाती है और फुफ्फुस के मूल मे (Attheroot of the lungs) जो सब शोषक ग्रन्थि है वह बढ़ जाती है एवं फुसफुस पाकाशयक स्नायुओं की शाखा प्रशाखाओं को उत्तेजित करते हैं। अतः आक्षेपिक खांसी होती है एवं स्वरयन्त्र की श्लैष्मिक झिल्लियों में प्रदाह पैदा

होता है और कफ से चटचटा लेसे की तरह का स्राव (कफ) पैदा होता है।

रोग लक्षण—

इस रोग में श्वास नली की श्लेश्मिक झिल्ली में प्रदाह होता है एवं श्वास नली द्वार (Glottis) श्वास क्रिया सहायक पेशियों एवं उदर और वक्ष व्यवधायक पेशी (Diaphargm) का सकोचन और आक्षेप होता है इसी कारण से बार २ आक्षेपिक खांसी पैदा होती है। बहुत देर तक खांसते २ अन्त मे श्वास लेने के समय एक विशिष्ट प्रकार का शब्द होता है। प्राय: बच्चे खांसी से परेशान होकर खांसते २ वमन और पाखाना तक कर देते है। किसी २ बच्चे को नाक मुंह से रक्त स्राव भी हो जाता है। अनेक बच्चों को आक्षेप भी होते देखा गया है। इस रोग को तीन अवस्थाओं मे विभक्त किया जा सकता है।

प्रतिश्याय अवस्था (Catarrhal stage)

यह अवस्था १ से २ सप्ताह तक रहती है। बच्चों को ज्वर, नाक मुंह से पतला स्राव, आंखें लाल रहती हैं, छींक आती हैं, खांसी जो कि रात मे अधिक आती है। इस अवस्था मे स्थेथिस्कोप से वक्ष परीक्षा करने पर बन्शी की अथवा कोयल की कूक की तरह आवाज आती है, इस अवस्था मे यह निर्णय करना मुश्किल होता है कि यह हूपि खांसी है। पर घर में या मोहल्ले मे इस खांसी का प्रकोप हो रहा हो, तब निर्णय हो जाता है।

आक्षेपिक अवस्था (Spasmodic stage)

यह बहुत ही कष्ट प्रद अवस्था है। इसमे ज्वर नही होता है बच्चों को बार २ आक्षेपिक खांसी आती है खासते २ बच्चा बेचेन हो जाता है श्वास लेने का अवसर भी नही मिलता करीब १-१॥ मिनट बाद में जब वह श्वास लेता है उस समय कों शब्द होता है। खांसी के समय किसी बच्चों को टट्टी पिसाब हो जाता है किसी २ को नाक आंख मुह से रक्त आता है आंखे चेहरा लाल हो जाता है गले की शीरायें फूल जाती है. इस खासी का दोग दिन की अपेक्षा रात मे विशेष होता है यह अवस्था ३ से ८ सप्ताह तक रहती है।

उपशय अवस्था (Convalescent stage)

७-८ सप्ताह आक्षेपिक अवस्था के बाद उपशम अवस्था आती है इस समय खांसी मे कमी होती है उसके साथ ही कों शब्द भी कम सुनने मे आता है थोडा ही खांसने पर दुर्गन्ध युक्त कफ उठने लगता है इस अवस्था मे असावधान रहने पर अनेक प्रकार के कष्ट दायक उपसर्ग पैदा हो जाते है। जैसे ब्रोंकाईटिस, निमूनिया, प्लुरसी, हर्निया, मलद्वार का बाहर निकलना स्वर यन्त्र की अनेक बिमारियां, किसी२ बच्चों को हूपिंग खांसी के बाद से टी० बी० का सूत्रपात होते देखा गया है।

नीचे हूपिंग खांसी मे व्यवहार होने वाली खास २ होमियोपैथिक दवाओं के लक्षण संक्षेप मे लिखेंगे। लक्षणों का पूर्ण सादृश्य होने पर निम्न दवाइयों का प्रयोग करने से आशातीत फल होता है। पर होमियोपैथिक दवा व्यवहार करने के समय दवा के लक्षणों से रोगके लक्षणों का सादृश्य रहना अनिवार्य है। दवा से लाभ

होने पर दवा देना बन्द कर देना चाहिये। साधारण लक्षणों का विशेष महत्व नहीं है। इसमें दवा निर्वाचन करने के समय विशेष लक्षणों पर अधिक ध्यान देना चाहिये।

एकोनाईट नेपलस २,६, ३० (बच्छनाभ)

इस दवा का प्रयोग रोग के आरम्भिक अवस्था में करना चाहिये पर प्रायः एकोनाईट की अवस्था के समय कोई ध्यान ही नहीं देता है। वास्तव में जब बच्चे को सर्दी लगती है ... उसके बाद २ छींक आती हैं, रात में ... खांसी अस्थिरता प्यास, और बेचैनी के ... रहते हैं, इस समय एकोनाइट का प्रयोग करने पर रोग अंकुरित अवस्था में ही नष्ट हो जाता है।

बेलाडोना ६, ३०, २००

यह हूपिंग खांसी में बहुत लाभ दायक दवा है लक्षण सादृश्य होने पर इससे बहुत लाभ होता है। खांसने ... की तरफ रक्त चढ़ जाता है इस कारण से चेहरा लाल हो जाता है, माथा गर्म और पैर ठन्डे रहते हैं आंखे लाल रहती है उच्च शब्द युक्त कुत्ते की आवाज की तरह खांसी बहुत देर तक खांसने के बाद थोड़ा कफ निकलता है, खासी के समय बच्चा गले को हाथ से पकड़ता है किसी २ बच्चे को खांसी के समय आक्षेप भी आने लग जाता है।

डा० रडक साहब—लिखते है कि साधारणतः एकोनाइट के बाद ही बेलाडोना का व्यवहार होता है

इपिकाक ६, ३०,

... २ बच्चा कड़ा हो जाता ... चेहरा नीला होने लगता, खांसी के साथ वमन या वमन भाव रहने पर इपिकाक ... अवश्य प्रयोग करना चाहिये। वमन होने पर खांसी का वेग कुछ कम हो जाता है उसके ... दम फूलने का भाव रहता है। किसी २ बच्चे को नाक मूंह से खून भी गिरने लग जाता है हूपिंग खांसी की आरभिक अवस्था मे एकोनाईट के साथ पर्याय क्रम से इसका व्यवहार करने से भी फायदा होता है। कुप्रम मेटा लिकम् के साथ इपिकाक का अनुपूरक ... है। यह सर्दी प्रकार की आक्षेपिक खांसी मे लाभ प्रद है।

मेरा अनुभव—

आक्षेपिक खांसी मे जहां श्वास फूलने का लक्षण मिलता है वहा मै सब प्रथम इपिकाक ३ या ३० का प्रयोग करता हूँ। इपिकाक रोगपूर्ण आरोग्य न भी करेगी तब भी उपशम अवश्य कर देगी। और जिस जगह वमी वमनभाव या वमन का लक्षण स्पष्ट रहता है उस जगह यह रोगी को पूर्ण आरोग्य कर देगी दूसरी दवा की आवश्यकता ही नहीं होगी।

आर्नीका मान्ट ६, ३०

खांसी में नाक से रक्तस्राव होने लगता है और आखों के श्वेत पटल मे रक्तसंचय हो जाता है, खांसी आने के पूर्व बच्चा रोना आरम्भ कर देता है।

कोरेलिया रेब्रीसोस ६, ३०

रात को प्रथम नींद से अचानक खांसी का दौरा आता है ... आने के पहले गले में सुरसुरी होता है ... का अनुभव होता है। जैसे गले में ... हुई है। सोते समय नींद टूटकर बहुत जोर से आक्षेपिक खांसी

आती है, खांसते २ बच्चा बेचैन हो जाता है अन्त मे मामूली कफ गिरता तब खांसी कम होती है इस प्रकार की खांसी के साथ ही श्वास फूलने का भाव भी रहता है।

परेलिया आक्षेपिक खांसी और दमा के आक्षेप को कम करने मे बिशेष लाभदायक है।

कोरलियम् रूब्रम ६, ३० (प्रवाल)

रह रह कर जबरदस्त खांसी का दौरा होता है उसके साथ ही चेहरा नीला हो जाता है, बच्चा मुर्दे की तरह गिर जाता है बलगम निकलने पर कुछ आराम होता है। खांसते २ बच्चा वमन कर देता है। कभी २ मुह की राह से रक्त भी गिरने लगता है। गले में कौं कौं की आवाज आती है। खांसी दिन में जब भी आवेगी दोवार खांसके रुक जावेगी पर रात मे आक्षेपिक बहुत ही जोर की खांसी आती है।

मिफाईटिस ३,६,६,

यह दवा एक प्रकार के जन्तु के मल द्वार की ग्रन्थियों को अलकोहल में गला कर मदर टिंचर तैयार किया जाता है।

इसको खांसी (जिस खांसी में यह व्यवहार होता है वह खांसी रात मे सोने के बाद बढ़ती है खांसी के अन्त मे हूपे शब्द सुनाई देता है। खांसते २ दम घुटने, लगता है श्वास प्रश्वास में कष्ट होता है कभी २ स्वास के आक्षेप के साथ शरीर में भी आक्षेप अकड़न या खिचाव) हो जाता है, भोजन के बहुत देर बाद खांसी आती है और खाई हुई चीज कीवमन हो जाती है। मिफाईटिस के प्रयोगसे अनेक जगह खांसी बढ़ जाती है पर दवा बन्द करने पर धीरे २ खांसी कम होती जाती है।

एम्ब्राग्रिसिया ६, ३०

स्नायविक खांसी आलप से आती है पर प्रधान लक्षण यह है कि खांसी के बाद मे खराब डकार आती है।

ड्रोसेरा ६, ३०,

हुपिंग खांसी या आक्षेपिक खांसी की यह प्रधान दवा है। नये छात्रगण हूपिंग खांसी का नाम सुनते ही ड्रोसेरा का व्यवहार कर देते है, पर यह विज्ञान सम्मत नही है। ड्रोसेरा के विशेष लक्षण होने पर ही यह लाभ दायक है, अन्यथा सफलता नही मिलेगी। आक्षेपिक खांसी जो कि रात मे सोने के लिये तकिये पर सिर रखते ही जोर से आने लगती है। खांसी की आवाज कुत्ते की आवाज की तरह की होती है, खांसते समय रोगी छाती को दोनों हाथों से दबा रखता है। खांसते २ वमन हो जाती है कभी २ पाखाना भी हो जाता है। ठंढा पसीना होता है. यह खासी गले मे सूर सुरी होकर आरम्भ होती है। नेप्थलाइन के बाद ड्रोसेरा विशेष लाभ प्रद है और ड्रोसेरा के बाद सीना देना अच्छा है।

डा० हैनीमेन साहबका कहना है कि ड्रोसेरा का अधिक व्यवहार करना हानि प्रद है; इस से कुछ लाभ होने पर दवा बन्द रखनी चाहिये।

कुप्रम मेटालिकम् (तांबा) ६, ३०, २००

यह दवा तांबा नामक धातु से तयार होती है। कुप्रम मेटालिकम् का प्रधान लक्षण ही आ-

क्षेप है। खांसी आक्षेपिक होती है। उसके साथ ही हाथ पैरों में आक्षेप पैदा हो जाता है श्वास रुक जाती है बोल नहीं सकता है, आक्षेप पहिले हाथों से आरम्भ होता है अगूठा मुट्ठी में आ जाता है और बच्चा बेहोश हो जाता है, खांसी के अन्त में शरीर ठण्डा हो जाता है।

उदाहरण—

उम्र ७ वर्ष १ मास से हूपिंग खांसी से पीड़ित था सर्व प्रथम घरेलू इलाज किया गया इसके बाद एक वैद्य जी का इलाज चला पर कोई लाभ न देखकर एक होमियोपैथिक चिकित्सक का २० दिन इलाज चला रोगी के अभिभावक को होमियो पथिक पर पूर्ण विश्वास था जब लाभ नहीं आया और बच्चे को आक्षेप आना आरम्भ हो गया तब वह अपने मित्र के कहने पर मेरे पास दि० १५-२-६१ को आया रोगी के लक्षण निम्न प्रकार है। वह रोगी के अभिभावक की भाषा में ही लिख रहा हूँ।

सर्व प्रथम २ मास पूर्व बच्चे को १०१ डिग्री ज्वर उसके साथ ही नाक से पानी एवं साधारण खांसी हुई थी। ५-७ दिन कुछ भी दवा नहीं दी गई खांसी बढ़ती गई ज्वर कम हो गया, खांसी की वृद्धि देखकर अडूसा, मधु कण्टकारी आदि का क्वाथ दिया अनार का छिलका चूसने को दिया गया कोई लाभ नहीं हुआ, फिर एक वैद्य जी के पास लेगये उन्होंने कुछ पुड़िया मधु से दी गोली भी दी गई पीने के लिये द्राक्षारिष्ट भोजन के बाद दिया जब लाभ नहीं हुआ तो एक होमियोपथिक डाक्टर के पास गये वहां कई एक पुड़ियां एवं गोली दी पर कोई लाभ नहीं हुआ, तब मेरे मित्र के द्वारा आपके बारे में जानकारी हुई। गत साल आपने इनके चार बच्चों की चिकित्सा की थी। अब आप कृपा करके इस बच्ची की चिकित्सा कीजिये। हम इस बच्ची के रोग से हैरान हो गये यह एक ही बच्चा है कहकर रोने लगे उनको सान्त्वना दी इसी बीच बच्चे को खांसी का दौरा आया और खांसते खांसते बच्चे के हाथ पांव खिचने लगे दोनों हाथों की मुट्ठी बन्द हो गई पास में खड़े हुये अन्य रोगियों से देखा नहीं गया सब ही दुःख प्रगट करने लगे। खैर लक्षण निम्न प्रकार संग्रह किये।

बच्चा गोरा स्वास्थ्य साधारण आंख मुंह पर शोथ आंखों के सफेद भाग में लाल दाग स्थेथिस्कोप से वक्षपरीक्षण से दाहिने तरफ को कों का शब्द बांये से अधिक था। खांसी आक्षेपिक उसके साथ ही वमन और पाखाना होता था। खांसते २ श्वास बन्द का उपक्रम एवं बेहोसी सह आक्षेप के बाद रोगी का शरीर ठंडा हो जाता है। धीरे २ श्वास आदि स्वभाविक अवस्था में आते है। हाँ इसी वक्त मे बच्चों की माँ ने बताया कि यदि किसी प्रकार खांसी के समय १-२ चम्मच ठंडा पानी पिलाया जाता है तो खांसी मे कुछ आराम मिलता है खर उपरोक्त लक्षणों का संग्रह करके दवा के लिये सोचने लगा।

ता० १६ २-६१ को नक्स वोमिका ३० शक्ति का ३ खुराक दी गयी ता० १६ २-६१ को कुप्रम-मेट ३० शक्ति ३ मात्रा रोज के हिसाब से ३ दिन दवा दी गयी। ता० १८ को ज्वर मिली

आक्षेप कम आता है खांसी पूर्ववत् है ता० १८ -२, २१, को दवा बन्द रक्खी गयी, ता० २२ को एमसमेट २०० शक्ति की २ खुराक १-१ घंटा बाद से दी गयी, ता० १-३ ६१ को खबर मिली आक्षेप बन्द है। खांसी आती है पर खांसते २ वमन हो जाने पर खांसी बन्द हो जाती है। इपिकाक नामक दिमाग में आइ पर पूछने पर ज्ञात हुआ कि वमन में कफ निकलता है जो कि रस्सी की तरह जमीन से मुंह तक लगा रहता है हाथ से हटाना पड़ता है। अब दिमाग में दो दवा आयी केलीबाइ क्रोम और कक्कस कक्टाई अत: रिपेटरी देख कर कक्कस कक्टाई ६ दवा आरंभ किया १ सप्ताह बाद खबर मिली बच्चा ठीक है। इस बच्चे की चिकित्सा के बाद उसी गांव के कई बच्चे आये और उनको लक्षणों के अनुसार भिन्न दवा दी गयी उनको विवरण देना यहां सभव नहीं है।

कक्कस कैकटाई ६, ३०

अन्यान्य समय पर खांसी कम रहती है पर सुबह नींद खुलने पर खांसी बढ़ती है और खासते २ बच्चा वमन कर देता है वमन के साथ गोंद जैसा बलगम की कै होती है जो रस्सी की तरह झूलता रहता है।

उपरोक्त दवाईयों के अलावा भी लक्षणों के अनुसार और भी दवाईयों का व्यवहार होता है उन सबके लक्षण लिखना यहां उचित नहीं है लेख काफी बढ़ गया है।

भावी फल (Prognosis)

इस रोग में मृत्यु संख्या विशेष नहीं है। किन्तु ३ वर्ष से छोटे बच्चों अथवा (Riket) सुखंडी रोग ग्रस्थ बच्चों को श्वास रोध होकर या मस्तिष्क में रक्त स्राव होकर मृत्यु हो सकती है जितनी बच्चों की आयु ज्यादा होगी मृत्यु संख्या उतनी ही कम होगी। पर हूपिंग खांसी होने के बाद में बच्चों को फुस् फुस् के अन्य रोग हो सकते है।

पथ्य—

हलका और वायू कफ नाशक भोजन लाभ प्रद है घी दूध में डाल कर पिलाना अथवा मक्खन मिश्री हलवा आदि लाभ प्रद है। यदि लीवर (यकृत) में दोष हो तो विशेष घी न देवें। तेल मालिश भी लाभ प्रद है।

कुपथ्य—सूखी चीजे, मिर्च, दही, ठंडी हवा में घूमना ठंडी आदि का ध्यान रखना चाहिये।

बाल रोग पर मेरा अनुभव

आदरणीय बन्धु वैद्यराज श्रीकृष्ण राव
जो पाटील खाड़े राव कृष्ण औषधालय
मु० पो० नरखेड़ त० मुलताई
जि० बेतूल (M P.)

आपने "बाल रोग पर मेरा अनुभव" नामक लेख भेजकर इस अंक के लिये जो सहयोग दिया है, उसके लिये धन्यवाद।

डि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

बच्चे की शक्ति बाढ़ अच्छी हो स्त्री की गर्भावस्था में महत्व का पहला काम है बच्चे को शरीर प्रकृति अच्छी रहना, माता को सब बातों में सयम से रहने पर ही अवलवित है। अपना बच्चा अच्छा बढ़े, निरोगी रहे इस लिये माता को आरोग्य के सब नियमों का पालन करना चाहिये।

(२) जिस स्त्री को गर्भ रह जाय तो प्रथम मास से ही प्रसूत होने तक नियमसे रहना, खाने पीने की व्यवस्था करना चाहिये ताकि किसी तरह की कोई बीमारी न हो। यदि गर्भवती बीमार हो जाय तो उसका असर गर्भ पर भी होता है, शुरू से ही बच्चे की हालत बिगड़ जाती है बच्चा कमजोर होता व बीमार भी रहता है।

प्रसूत होने के बाद भी १ साल तक आरोग्य के नियमों का पालन करना चाहिये। माता की हालत अच्छी रही तो बच्चे की भी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। बच्चा माता का दूध पीता है। यदि कुपथ्य से माता बीमार हो जाय तो उसका असर दूध पर होता है, वह दूध बालक पिये तो बच्चा कमजोर होकर बीमार होता रहता है, ऐसी अवस्था हो तो माता का दूध बन्द कर निरोग गाय का दूध पिलाना।

जहां तक हो सके प्रसूता बीमार न हो ऐसी व्यवस्था घर वालों को करना चाहिये। ये सब करने पर भी यदि प्रसूता बीमार हो जाय तो किसी कुशल वैद्य से शीघ्र उपचार कराना चाहिये।

स्त्री प्रसूत हो जाय तब १२ रोज तक बड़ी सावधानी से सफाई से रहे इस १२ रोज के अन्दर ही धनुर्वात (टिटनस) होने का भय रहता और हो जाता है, प्रसूता का धनुर्वात बहुत भयकर और सुधरना मुश्किल है। इस १२ रोज के अन्दर वाले टिटनस रोगी देखने को मिले। देहातों मे एक तो डा० वैद्य को देर से बुलाते हैं जब तक रोग बढ़ जाता है। मैं खुद १-२ वैद्यराज अनुभवी और एम० बी० बी० एस० के डा० भी मौजूद थे। दोनों पद्धति के औषधोपचार इजेक्शन लगाये तिस पर भी मैंने अपयश आते देखा।

(५) स्त्री प्रसूत हो जाने पर बहुत जल्दी गरम पानी से नहला कर बदन पोंछ दे और नीम की पत्ती कूट कर पानी में डाल पुरा कर छान ले और जननेन्द्रिय धोना और साफ रुई से पानी सुखाना बाद जगली कन्डों की राख को अच्छी तरह छान कर साफ कपड़े मे रख १-२ परत कर पट्टी से बांध दे या साफ रुई को जन्तु

नाशक दवा डालकर वाधद्दिया जाय ये भी अच्छा है पेट को भी पट्टियों से बांध देना। ३ से ५ रोज तक प्रसूता को ज्यादा हल चल नहीं करने देना। मैं तो प्रसूता को प्रथम रोज से ही १२ रोज तक प्रताप लकेश्वर १-१ र० सुबह शाम शहद अदरक रस से देना शुरू रखता हूँ जिससे लाभ होता है भय नहीं रहता। रात्रि मे कभी २ आधी र० कस्तूरी पान के बीड़े मे देता हूँ, यदि प्रसूता को थकान या सुस्ती मालूम हो तो डा० लोग ब्रांडी देते है, मेरे मत से ब्रांडी या मादक पदार्थ देना ठीक नहीं यदि जरूरत ही पड़े तो मैं द्राक्षासव २-२ चम्मच चौपट गरम पानी मे देता हूँ।

मेरे पास प्रसूता के जो भी घर वाले आवें मै उपरोक्त बातें पहले ही सब समझा देता हूँ। सब साधन सामिग्री तैयार कर लगा देता हूँ। पहले सब तैयारी करने से गरीव हो अमीर यदि सब सावधानी बरती जाय तो सब ठीक होता है और बीमारी का सामना करने का मोका नहीं आता, प्रसूता ने वालत सोप दोनों समय पान के बीड़े मे खाना लाभदायक है।

(६) बच्चा पैदा होते ही उसे सम्हाल लेना और उसका वदन पतले कपड़े से पोंछ कर गरम पानी से उसे नहला देना और आंख नाक कान पर से पतला नाजुक कपड़ा लेकर पोछना ताके कहीं ईजा न हो, वाद मे शहद व घी विषम प्रमाण मे थोड़ा ४ बूंद २ बूंद लेना, ३ रत्ती सुवर्ण (सोना) दमा आड़े घी सकर थोड़ी २ चटाना और बेबी से १ इञ्च फासले से नाल सूत से बांध देना, आगे भाग काट देना खून बहने देना और बच्चे को सुला देना ३ दिन के बाद माता का दूध शुरू कर देना, यदि ३ रोज के अन्दर जरूरत पड़े तो कभी २ गरम पानी ठंडा कोमट रहे पिला देना बच्चा १ से ८-९ माह तक माता का ही दूध पीता है और वह पिलाना भी अच्छा है यदि माता के दूध से बच्चे की पूर्ती हो जाय तो ठीक है न हो तो गाय का दूध पिलाना या बकरी का गाय का दूध हो या वकरी के दूध मे चौथाई पानी डाल कर उसे गरम कर लेना, गरम थोड़ा होजने पर धीरे २ मलाई आजाय उस मलाई को छान कर अलग कर दो और छना हुआ दूध पहले थोड़ा जैसे २ बालक की भूख बढ़े क्रम वार दूध भी चम्मच पिलाना व बढ़ाना मलाई सहित दूध बच्चों को नही, पिलाना, यदि पिलाया तो बच्चों की पाचन क्रिया बिगड़ कर बद्ध कोष्ट हो जाता है ९-१० माह के बाद माता का दूध बन्द कर गाय का दूध पिलाना शुरू कर देना। बच्चा १। साल १।। साल का हो जाय तो उसे थोड़ा अन्न देना शुरू करना, गेहुँ की रोटीसब्जी दूध। चीसावे का या चावल का भात।

(७) बालक के दांत ८-९ माह से निकलना शुरू हो जाते १।। साल तक निकलते है कभी किसी २ की दाढ़े २ साल तक पूर्ण निकल पाती, किसी बालक के दांत तो सुगमता से निकलते। किसी २ के कष्ट से निकलते बच्चा बीमार हो जाता बुखार आने लगता, दस्त कै हो जाते।

(८) मैने देहातों मे बहुतेक देखा प्रसूता जब १ माह मे काम करने लग जाय तब बच्चा

रोग। है का मे बाधा आती है तो बच्चे को थोड़ी अफीम खिलाना शुरू कर देती है। बच्चे को अफीम कदापि नहीं देना। अफीम से बच्चों के दस्त मे रुकावट होकर उसका पाचन क्रिया पर होकर बच्चे बीमार हो जाते हैं।

(९) बच्चे जब ६ से १२ माह के होकर बैठे २ चलने लगते खास कर जो हाथ मे पड़े खा जाते, विशेष मिट्टी खाना तो उनकी आदत सी हो जाती है, उन्हे सम्भालना चाहिये नहीं तो पेट मे बिगाड़ होता है और कृमि हो जाते हैं

(१०) बच्चा बैठ २ या चलते फिरते माता जब रोटी बनाती है, वहां बैठ जाता है माता सामान लेने जाता उतने मे ही लड़के के कपड़े मे आग लगकर जल जाता खास कर ऐसा होता ही है सावधानी रखना चाहिये।

(११) बच्चों को होने वाले रोग वे बता नहीं सकते उनकी जानकारी करना बड़ी कठिन समस्या है।

बच्चे के रोने पर विशेष लक्ष देना चाहिये। बच्चा जोर से रोये तो दर्द ज्यादा है कम रोवे तो मामूली। जहा पर दर्द हो वहां बच्चा जरूर हाथ लगाता है, अपने को हाथ नहीं लगाने देता। शिर में दर्द हो तो आंख मींचेगा। पेट मे गड़-बड़ हो तो रोवेगा, पेट मे आवाज होगी, पेट फूल जावेगा।

(१) बच्चे को मिट्टी नहीं खाने देना निग-रानी रखना। बच्चों के हाथों मे थैली बाध देना या गेरू का ढेला उसे दे देना, उससे कोई हानि नहीं, मिट्टी खाना छूट जाता है।

(२) यदि बच्चा जल जाय तो उसी समय गूलर का गोंद पानी मे घिस कर लगाना, ये भी न मिले तो शहद लगाना।

(३) ग्वारपाठा को चीर कर गूदा निकाल उसका मल कर रस निकाल बार २ लगाना, घाव भी सूख जायगा, जलन भी न होगी।

(४) यदि बच्चा ज्यादा जल गया हो तो एक कोरा मटका लेकर उसमें ३ सेर ठण्डा पानी डालो, उसमे अच्छा कली का चूना ३ तोला पीस डाल कर हिला दो, ३ घन्टे बाद ऊपर से पानी निथार दूसरे मटके मे रक्खो। उसमे से आधा सेर पानी लेकर कांसे के पात्र मे डालो उसमें १ छटांक गरी का तेल डाल कांसे के प्याले से खूब घोटो सफेद मलहम सा हो जावेगा। उसे जले हुये घावों पर नीलकन्ठ पक्षी के पर से लगावे। क्रमशः जलन शान्त होकर घाव भी ठीक होगा। यदि बहुत गहरे जख्म हों तो आप आंवले की पत्ती छाया मे सुखा बारीक पीस छान कर उपरोक्त मलहम लगा ऊपर से इसे बुरक दे शीघ्र घाव भर जावेगा।

एक १४ साल के लड़के का गर्दन से एड़ी तक दाहिना अंग आधा हाथ सहित जल गया था। उपरोक्त औषधी से ठीक हुआ। जलनेवाले को टिटनस होने का भय रहता है। यह हमारा परीक्षित प्रयोग है।

(५) यदि बच्चा पानी में गिर बेहोश हो जाय तो पानी से निकलते ही उसका सिर नीचे कर पैर ऊपर कर, दो आदमियों को दोनों पैर पकड़ कर घुमाना चाहिये। पेट पैरों की तरफ

मुंह की तरफ मलते जाये तो पेट का पानी गिरेगा।

२—१ धोती का गोला बनाइये और बच्चे के पेट के नीचे रखिये. शिर नीचे को रहने दे ऊपर पीठ से दबावे मुंह से पानी गिर जावेगा। पीठ पर करने से ओकी आती है, पानी गिरता है।

यदि ओकी आकर भी कै न हो तो १ गिलास में ५ चम्मच नमक डाल कर घोल लो और ३-४ चम्मच ये पानी रोगी के मुंह में डाली उंगली रोगी के मुह में जीभ पर अंदर तक घुमाओ कै होकर पेढ का पानी गिरेगा पेट का पानी पूरा भीतर तक पेट दवाने की क्रिया जारी रखो पानी पूर्ण निकलने पर रोगी को बेहोशी थोड़ी देर रहती रोगी देर तक बेहोश रहता इसके प्राणपखेरू उड़गये, लेकिन घबराना नही जल्दी इसके बदन को नारायण तेल वक्त पर न मिले तो जगनो या तुलसी का तेल बदन ऊपर मलवा रोगी को शेकना शुरू कर देना और कस्तूरी भैरव की मात्रा शहद या बंगला पान के रस में २-४ वार खिलाना, रोगी गरम होकर होस मे आजाता। १ रोगी का मुझे २ घन्टे उपरोक्त इन्तिजाम करना पड़ा वह बेहोश ही था होस मे आया पानी मे गिरा आदमी २-३ वार ऊपर आता है जल्दी निकाल कर उपचार हो तो जरूर वच जाता यदि जल्दी न हो तो तालाब मे नीचे चला जाय तो मर जाता। मरा हुआ हो निकलता, श्वासो श्वास चलाने की क्रिया भी करना एसे दोनो हाथो को आगे पीछे करना छाती को भी मलना।

(४) बच्चे को कहीं घाव हो जाय या कट जाय चोट लग कर चमड़ी फटजाय खूब खून बहता हो तो जामट या (आबुटी) के पत्तो को पीस कर घाव पर पिंड जमा दे उसी के पत्ते ऊपर रख पट्टो से बाध दे खून बहना तुरत बन्द होगा और रोज नई दवा बना कर दिन मे २ बार रखिये घाव भर जायेगा।

ये बड़ी चमत्कारिक बनस्पति है इसके झाड़ १ फुट से ३ फुट तक बढ़ते, पत्ते गोल कुछ लम्बे मोटे होते हैं, पत्ता के किनारे बारीक २ नुकीले होते है पत्ता मोड़ने से टुकड़े हो जाते इसे अहातोमें बगीचोंमें लगाते है इसकी पत्तियों की जीरा, नमक डालकर चटनी बना कर खाते है यदि इसका पत्ता जमीनमे गाड़कर पानी डालते रहो तो झाड़ उग जाता ३-४ माह में झुंड के झुंड झाड़ निकलते।

जन्त कृमी पर—आज कल डाक्टर लोग व बहुतेक लोग स्टो नाइन देने की सलाह देते। ऊपर से एरंडो (कास्ट्राइल) पिलाने की। जिससे जन्त मर कर गिरते। परन्तु देखा गया जन्त या कृमि बनना बन्द न होकर फिर होजाते मै तो रोगी को कृमिकुठार आधी से १ र० की मात्रा। वायविडंग, नागरमोथा अतीस, सागर गोटी बीज के काढ़े मे देता हूं १ हप्ते तक। बाद कुछ रोज अनार की छाल का काढ़ा देता हूँ, जिससे नये जन्त कृमि बनना बन्द हो जाते। आगे कुछ रोज वायबिडंग, नागरमोथा अतीस, सागरगोटी काढ़ा देता हूँ कृमि जन्त पैदा होना बन्द हो जाते। सागर गोटी बीज, वायविडंग कबीला चूर्ण गुड़ में मिलाकर बलावल देखकर

बच्चों को रात्रि मे खिलाना, सुबह थोड़ा सनाय का काढ़ा दे देना उससे भी जन्त गिरते हैं।

बच्चों को ज्यादा गरमी बढ़ जाने से आकडी रोग हो जाता है। इसके लिये प्याज काटकर गले में माला बना डालना, बिस्तर पर प्याज काट कर डालना, बार २ प्याज सुंघाना। और प्याज को पीस कर गाय का घी मिलाकर सिर के ऊपर पीड रखना खाने का सादा पत्ता ऊपर रख पट्टीसे बाधना जो पीड रखाहै उसे छुटा, नई बना कर रखना आंख खुली नही रखना रोगी के कमरे मे सामने द्वार पर हरा परदा डालना। खाने की तमाखू नवसादर कपूर इसका नस्य बना कर थोड़ा २ सुघाना, ये रोग भी अति खतर नाक है रोगी की स्थिति देख कर योग्य औषधोपचार करना, दस्त रोगी को हुआ या नहीं न हुआ हो तो ग्लेसरिन एनिमा करना, जुलाब नहीं देना।

(७) बच्चों की आख लाल हो जाय, आखो में दर्द हो, या बच्चा की आंख मिच जाय बन्द करले तो बच्चा ने आंव दुध मे रुई के फाहे लगा कर आखों पर जमा दो, आख खोल देगा। बहुत तकलीफ हो आखे सुज गई हो तो, पावना को पका आंखों पर पीड रख ऊपर बाध दो १-२ रोज मे आराम होगा यदि इससे भी आराम न हो तो कडुनाम की पत्ती कदली का खुब पीसकर उसमे गाय का घी मिला कर लगाने से आराम हो जाता है।

लाल फटकरी फूली १ मा० बारीक पीसकर १० तोला गुलाब जल मे मिला कर आखों में १-२ बूद डालने से भी लाभ होता है।

(८) बच्चो को बार २ के होती हो तो बायबि डंग चूर्ण आवला गाढ़ा चूर्ण, कुड़ा छाल समान भागमिला कर १-१ बाल शहद मे चटाने से कै बंद हो जाती है।

आवला गाढ़ी चूर्ण २ वाल शहद में देने से क बन्द हो जाती है।

(९) दांत मे दर्द हो तो हींग व कपूर खूब मिला कर पानी मे घोल कर रुई के फाये भिगो कर दात मे लपेट देना।

(१०) कान म दर्द हो तो चन्दन का इत्र डालना। कान फूटता हो तो कपर्द भस्म कान मे डाल कर उस पर नींबू रस छान कर डालना रोज कान को साफ करना कुछ रोज डालने से कान का दर्द, बहना, बन्द हो जाता है।

(११) देवी-माता—इमली के बीज जिसे इधर गांव की भाषा मे प्रसिबधक चिचीरे कहते १ इमली की फली मे ३-४ निकलते है उन्हें निकाल कर काला बकला अलग कर सफेद बीज निकलेगा उसका चूर्ण कर इसके समान हल्दी चूर्ण मिलाकर तैयार करे माता गांव मे या दूसरे नजदीक गांव मे आगई हो तो।

रोज बच्चों को १ मासे से २ मासे तक १-२ हप्ते पानी के साथ देना, जिन बच्चो को आप दवा देंगे माता नही निकलेगी यदि निकल भी आवे तो कम निकलेगी।

(१२) रिकट सूखा रोग पर—मयूरसिखा बनस्पति उखाड़ कर मगलवार के रोज लाये मामूली कूट कर पानी मे डाल कर पानी गरम करना उससे मगलवार के रोज नहलाना हर मंगलवार १ माह तक, सख में जो कीड़े होते है उन्हे लाकर सुखा कर चूर्ण करना आधी से १ गुंज दिन मे २ बार माता के दूध में या शहद में १ माहतक देना लाभ होता है यदि यह तैयार न मिले तो लाइम अवश्य बच्चे को देना।

"बाल रोग पर अपना अनुभव"

वैद्यराज श्री डा० कामेश्वर ठाकुर आयुर्वेदाचार्य मु० पो० मोकरमपुर, वाया
पण्डौल—दरभंगा (बिहार)

आपने "बाल रोग पर अपना अनुभव" नामक लेख भेज कर जो सहयोग दिया है।
उसके लिये आपको धन्यवाद। वि० स० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

नवजात बच्चों के प्रति कर्तव्य—

बच्चों को वही रोग होता है, जो बड़ों को होताहै। जन्म लेते ही बच्चोंको नहलाने का प्रबंध करे। मुख, नख, नेत्र, कान, नाक साफ कर मधु चटावे। ६ घन्टे बाद गाय का दूध पिलावे। ६ घन्टे पूर्व बकरी का दूध दे सकते हैं।

दूध की मात्रा और समय पर अवश्य ख्याल रखे। १० बजे रात तक प्रत्येक २-२ घन्टे पर दूध पिलाना चाहिये। १ महीने से ५ महीने तक के बच्चों को २॥ घन्टे पर देना चाहिये। ऐसे ही क्रमशः उम्र के अनुसार समय बढ़ाना चाहिये।

रोग परीक्षा—

जहां हाथ लगाने से रोने लगे वहां दर्द जाने आँखें मूंदे रहने पर सिर दर्द, मल मूत्र रुकने और श्वास अधिक चले तो गुदा में दर्द समझें, इसी तरह रोने, मुख के रंग देखने वा स्तन खींचने से बच्चों के रोग की परीक्षा करनी चाहिये।

बच्चों के भेद तीन हैं

१—दूध पीने वाले।

२—दूध और अन्न दोनों पर रहने वाले।

३—केवल अन्न पर रहने वाले।

क्रमशः इसी भेद के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) माताको पथ्य और बच्चोंको हितकर औषधि
(२) दोनों प्रकार से औषधि देनी चाहिये।
(३) अन्न पर रहने वालों को उम्र के मुताबिक औषधि देनी चाहिये।

नाभि रोग—

वायु विकार अथवा नाल छेदन की असावधानी के कारण फूल या पक गई हो तो मोम का मलहम कपड़ा पर लगा या कपड़ा को कड़वे या नारियल तेल मे भिगो कर रक्खे। यदि सूजन हो तो पीली मिट्टी को आग में गरम करे, उसके ऊपर दूध डाले और इसका बफारा दे या सेके।

अथवा—नीम की पत्तियों के क्वाथ में भुनी फिटकरी का चूर्ण ३ मा० मिला नाभि को धीरे२ धोये, साफ कपड़े या रुई से पोंछ निम्नांकित चूर्ण डाले।

योग—बकरी की मेंगनी (लेंडी) की राख १ तो०, लाल चन्दन का चूरा या घिसा १ तो०,

तथा भुने सुहागे का चूर्ण ६ मा० सबको मिला खरल कर ३-४ बार प्रति दिन सूजन पर बुरकने से नाभि पाक का कष्ट दूर होता है।

गुद पाक—

कई असावधानी के कारण मलद्वार सूजकर लाल हो खुजलाता है इससे बालकों को बहुत कष्ट मालूम होता है। धोने, पीने एवं लगाने की तीनों दवा एक साथ चलावे।

योग—पीने के लिये-पकाये हुये ठन्डे जल में या गाय के दूध में घोल मधु मिला "रसवत्" खिलावे। बवासीर की शिकायत में भी देना चाहिये, इससे गुद पाक शीघ्र सूख जाता है।

लगाने के लिये—मुलहठी, रसवत, शंख नाभि चूर्ण, बिजयसार चूर्ण, सफेद सुरमा, छोटी इलायची दाना, भुना तूतिया, मैनसिल इसमे से शुरू के तीन योग और आगे का जो भी मिले चूर्ण कर बुरके या पीसकर लगावे शर्तिया है।

साफ करने के लिये—त्रिफला के क्वाथ में १ से ३ मा० भुनी फिटकरी मिला २ बार प्रति दिन धोवे।

माता या धाय के दूध बिगड़ने पर ध्यान दें। इसकी जांच एवं चिकित्सा अगले पेज मे देखें।

मुख पाक—

ये बीमारी विशेष कर माता के दुग्ध बिगड़ने के कारण से होती है, सब प्रथम दुग्ध का संशोधन होना जरूरी है।

दवा—चमेली के कोमल पत्र और फूलों के क्वाथ अथवा पीस मधु के साथ मुख मे लगाने से घाव सूख जाता है क्वाथ से कुल्ला करे।

२—भेड़ का घी लगाने से जादू सा फायदा करता। केवल घी या ऊपर के योग को मिला कर व्यवहार में लाये।

ज्यादे रोने पर—

बच्चा किसी अन्य कारण से रोता है। उस कारण के निवारण करने पर भी चुप न हो तो निम्न विषय पर ध्यान दे।

योग १—बकरी के दूध पाव हाथ में मले नीद आती है।

२—पोइ के साग या पकाये साग के रस के पान कराने से नीद आती है।

३—टोटका-रविवार या मंगलवार को बच्चों के सोने वाली चारपाई मे नीलकण्ठ के पंख खुरस देने से बच्चों का रोना बन्द होता है। इससे अन्य शिकायतों का निवारण भी होता है।

४—आमला पीपल, बहेड़ा और हर्र का चूर्ण मधु के साथ दोनों समय चटाने से अन्य शिकायते भी दूर होती और रोना भी बन्द होती।

५—इन्द्रयव, उरद, छुछुन्दरके बीज, बेलपत्र सिरस पत्र, हल्दी समान भाग कूट थोड़ा २ आग पर डाल धूनी देने से रोना बन्द होता है।

दांत निकलने मे कष्ट—ऐसे तो ६ महीने के बाद दांत निकलने लगता इस अवसरपर अनेक शिकायते उपस्थित होती। जो दांत निकलने पर आप से आप दूर होती है।

पहचान—सोते समय बच्चों का गाल लाल हो जाय तो समझे दांतनिकल रहे है।

योग—शहद में सुहागा भुना हुआ, नमक, अथवा सोडा मिलाकर मसूढ़ों पर मलने से दांत आसानी से निकल आते है।

बच्चों के लिये तक समय बड़ा नाज़ुक का है, बहुत सोच समझ कर चिकित्सा करे अनेक उपद्रव मे ज्यादा दवा व्यवहार कर बच्चों को न सतावे।

वमन होने पर—पीपल की छाल को पूरा सा जला उजले भाग को पानी मे डाल थोड़ी देर के बाद नितार कर पानी पिलाने से वमन बन्द होता है।

पाचन क्रिया के खराब होने पर—चूने के पानी में काला नमक मिला छोटी हर्रे को फूला सुखा कर घिसे और चटावे। इससे अनेकानेक रोग का निवारण होता है। दस्त ज्यादा होने पर भी फायदा होगा।

नोट—दस्त ज्यादा होने पर नेबू से फाड़ा हुआ दूध का पानी मात्र देना चाहिये।

टोटका—कटहल पेड़ के गाठ (घेधा) को लम्बा पेसा, सुपारी अक्षत से निमन्त्रण दे कर बाद मे ले आवे। बच्चों के गले मे बांध देने से दांत बिना कष्टके निकल आते हैं; लेखके विस्तार से नही इस लिये अपना पूरा अनुभव देने से असमथ है विशेष जानकारी के लिये नेक रोग के लिये मुफ्त परामर्श लें।

मुख्यत: बच्चों को भी वही बीमारी होती है जो बड़ों को होती है। बच्चों को उम्र के मुताबिक दवा की मात्रा कम कर देना चाहिये। ऐसे तो बीमारी की दवा के लिये तत् सम्बन्धी पुस्तकों की भर मार है। मैं यहां महात्माओ की कुछ जड़ी बूटी अपने परिश्रम से जो प्राप्त किये हैं, भेज रहा हूँ। जो बच्चा के साथ २ मनुष्य मात्र भी फायदा उठा सकते हैं।

तन्दुरुस्ती के लिये—पत्थर चूना के पानी में चिरचिटा (अपामार्ग) की जड़ पत्र पीस छान उम्र के मुताबिक मात्रा निश्चत कर पिलाये। जेसे बच्चों को अनेक बीमारी में अनेकानेक कम्पनी के बाला मृत व्यवहार मे लाते है, उससे ज्यादे फायदा मन्द है लेकिन तब तक व्यवहार मे लाये जब तक पूर्ण तन्दुरस्त न होजाय। परीक्षित है। १ से ३ मरीच का योग भी मिलाये।

अनुपान बदल कर जैसे—बुखार में चिरचिटा के रस तुलसी रस के साथ बुखार छूट जाने पर पेटेन्ट दवा के रूप मे चिरचिटा की जड़ मिरच योग के साथ। इससे पेट के पिल्हा, यकृत, कब्ज, सूजन, पेचिस, पेट दर्द, आदि ठीक होता है।

दस्त ज्यादा होने पर—चिर चिटा की जड़ आम के पत्ता, जामुन के पत्तो के रस या क्वाथ मधु के साथ दे।

कफ खांसी मे—आक (मदार) के दूसा (नवपल्लव) के रस एक चम्मच दूध और मधु मिला शुबह शाम दे, एक खुराक से ही लाभ होगा। जवान को मात्रा ज्यादा कर दें। इसे दमे की बीमारी मे भी ठीक होता विशेष जानकारी को लिखे।

२—अडूसा के रस, अदरक रस मधु सम भाग उम्र अनुसार दे। दोनों दवा परीक्षित है।

खुजली—पेट साफ करा अरंड (अण्ड) और धतूरे के जड़ के रस, मिट्टी तेल सम भाग मे गंधक मिला शारे शरीर मे मालिस करे। ३ दिन लगाने के बाद नीम के साबुन से स्नान करे।

हमारा परीक्षित एक पेटेन्ट दवा जो आयुर्वेदिक ढग का मा'लूम होता है, सभी दूकानों से मिलती है। शर्तिया ठीक होता है, उसके अनमोल फायदा देख कर खुजली से लाखो पीड़ित बच्चों के लिये लिखना जरूरी समझा है।

दवा—उचीसीन पाउडर एक पुड़िया जो ५० पैसे मे मिलता है। नारियल तेल मे डाल शरीर में लगाये या घाव पर लगाये एक आदमी के लिये एक पुड़िया काफी है हमने अपने पड़ोस के अनेक बच्चों को पूर्ण स्वस्थ्य बनाया है।

मृत का भक्षण के दोष दूर करने के लिये पका केला के साथ मधु मिला कर खिलाये।

२—केसर, निसोत, पीपर और मुलहठी के क्वाथ में पोतनी मिट्टी मिला बार बार सुखावे। वही मिट्टी बालक को खिलाने से पेट की मिट्टी टट्टी से बाहर निकल जायगी और मिट्टी का विकार दूर हो जायगा।

पेट के कृमि—

तुलसी का स्वरस, बेलपत्र रस, प्याज रस में आम के गुठली, अजवाइन, वायबिडम, हरं के चूर्ण को कपड़ छान कर आग पर चढ़ावे गोली के लायक हो जाने पर मटर बराबर गोली बनाले ३ गोली रोजना एक सप्ताह देने से पेट के कृमि नष्ट होते हैं।

मस्तिष्क के कृमि—

तुलसी स्वरस, या मूली क्षार, कुकरोधा, बूटी छाया में सुखा नस्य लेने से काड़े निकल जाते।

गज—१-आम के अचार के पुराने तेल को शिर मे मले।

२—सर के फोड़े फुन्सी में आम की गुठली उजला धूप; हल्दी, हरड़, धनिया, बकरी के मेगनी पीस सिर पर मलें।

(३) नीबू रस, नारियल तेल, समभाग या नीबू रस, अफीम या बकायन के पत्ते पीस या उसका तेल या एरण्ड के पत्तों में नमक मिला या पलास पत्तों को पीस तेल में पका छान या चुकन्दर के पत्तों का रस या गधे की लीद का तेल शिर पर मलने से गज रोग ठीक होता है।

बाल उड़े स्थान पर—बाल उगाने के लिये काली मिर्च बारीक पीस लगाने से बाल उग आते हैं।

बाल सफेद होने पर—

कितने बच्चों के बाल सफेद हो जाते हैं, इस लिये शीर्षासन करे। या आमला या बढ़िया मिट्टी शिर मे मलकर स्नान करे।

बाल काला करने के लिये—किसी बर्तन में शुद्ध सरसों का तेल १५ दिन तक ठन्डे स्थान में मिट्टी तले गाढ़ा हुआ को फिर १५ दिन राख के ढेर मे रक्खे इस तेल को शिर मे मालिश करे। बाल शर्तिया काले हो जायेंगे।

पारिगर्भित रोग—

गर्भिणी का दूध बच्चे को पीने से नाना प्रकार की शिकायत उत्पन्न होने पर—अजवायन, अमलतास को गूदा, पुराना गुड़, गुलाब के फूल, चौकिया सुहागा, छोटी हर्र, पसरबन्दा, बालबन्दा, मुनक्का, वायविडंग, श्वेत जीरा, सनाय पत्ती, सौंफ की जड़, हड़किल के छिलका २-२ तोला कूट कर रखले। ६ माह के बच्चे को १॥ मा०, ३ वष वाले को ६ मा०, इसी अनुसार

मात्रा निश्चित कर खौलते हुये पानी मे डाल आधा पानी रहने पर २ र० सोंचर नमक मिला दोनों-समय पिलाने ? पारिगर्भित रोग नष्ट होता है। इसके अतिरिक्त अजीर्ण, उदर पीड़ा, अनाह, प्लीहा आदि पेट रोग नष्ट होते हैं। ज्वर खांसी से सुरक्षित हो वालक हृष्ट-पुष्ट होता है। इस दवा (पाचन काय) को पिलाने से कोई रोग नहीं होता, सेवन करने योग्य है।

बिरणी या विषैली मक्खी के काटने पर—

स्याई कांटों को जला जराशा मल दें और दाबकर सूंढ निकालें। न सूजन होगी न दद, परीक्षित है।

तम्बाकू का नस्य स्याई के अभाव में रगड़ें। मिट्टी तेल या नौसादर या गधक या नमक मिला पानी या आक का दूध मलें।

बिच्छू काटने पर—

इमली के बीज का छिलका हटा चिपका दे विष चूस कर गिर जायगा। या काटे स्थान पर फौरन पेशाब करदे। मरे बिच्छू को मलें। या बीस अदद उल्टे गिने। या आक का दूध डाले।

सांप काटने पर—

किसी कदर द्रोण पुष्पी (गूमा) के जर पत्ता का रस, मरिच योग दे पीस रस पिलावे, आंख, नाक मे डाले या सुई द्वारा भीतर प्रवेश करावे।

२—जोड़ हाथ से पीपल की दो टहनी कान में भिरावे बिजली सा करेन्ट मालूम होगा। विष खींच लेगा।

नोट—टहनी भीतर प्रवेश होना चाहेगा। ५–६ आदमियों से पूरे शरीर का पकड़ाये रहे जिससे कान को परदा न फटे। पीपल के पत्ते पीले भी हो सकते हैं, किसी को खाने न दें, जमीन मे गाढ़ दें।

३—लड़का को लड़का का और लड़की को लड़की का पेशाब दवा के बहाने तुरन्त पिलादो परीक्षित है।

शरीर के किसी अङ्ग से रक्त निकलने पर—

उक्त स्थान पर कुकरौंधा (जो ठण्डे स्थान में जाड़ों के समय तम्बाकू जैसा होता है) रस मधु के साथ कुछ खुराक पिलाये रक्त शर्तिया बन्द हो जायगा कटे स्थान पर पींस कर पट्टी बांधे, या कटे स्थान को पेशाब मे डुबो दे रक्त बन्द होगा।

कुत्ता काटे पर—

महात्मा का वताया एक खुराक मात्र। पके केला को पांच भाग कर पुराने कम्बल से सूत निकाल पांचों भाग केला मे थोड़ा २ कम्बल का सूत निगलवायें। शर्तिया विष एक बार के प्रयोग से निकल जायगा। १० दिन के बाद अन्य जांच काम में लावे। रोगी से छिपाकर दें।

मकरी घाव—

बड़ी जलन होती बच्चे को असह्य कष्ट होता है, हमारी आजमाई दवा है। जाल में मरे या पुराने घर मे खोजकर मकड़ी को सरसों के तेल मे पकाकर लगावे पहले बार मे ही घाव सूखने लगेगा।

यहां लेख के विस्तार भय से ज्यादा नहीं लिख रहा हूँ। कोई सज्जन बच्चों की बीमारी से निराश हो गये हों तो बच्चों की हालत लिख भेजे जबाबी काड द्वारा मुफ्त परामर्श ले। हमने श-

नेत्र रोग पर कुछ साधारण योग

वैद्यराज श्री डा० कामेश्वर ठाकुर आयु० मो० करमपुर पण्डौल दरभंगा (विहार)

सुश्रुत के मत से नेत्र रोग

नेत्र रोग ७६ प्रकार के हैं। लेख के विस्तार भय से सब साधारण जनता के लिये सुलभ कुछ योग लिख रहा हूँ। जिस नेत्र रोग के सम्बन्ध में सब साधारण लोगों को जानकारी भी है।

आंख उठना (नेत्राभिष्यन्द)

रसौंत पानी मे घोलकर आंख मे डालने से लालासी और पोड़ा अवश्य मिट जाती है।

२—अफीम इमली की पत्तियों के रस मे पकाकर पलकों पर लेप करने से लाली और पीड़ा दूर होती है।

३—आम के कोमल पत्ते, हल्दी, रक्त चंदन सबको बारीक पीस लेप करने से आंख की पीड़ा दूर होती है।

४—पलकों की सूजन में इमली के फूलों की पुल्टिस बांधनी चाहिये।

५—आंख दुखने पर उसके विपरीत अंगूठे पर आक का दूध चिपकावे, कुल चार घन्टे में

रीर के अलग २ भाग की बीमारी के सम्बन्ध में भारत के कोने २ से महात्माओं की जड़ी, बूटी का अनुभव कर किताब के रूप मे प्रकाशित करना चाहता हूँ, पैसा का अभाव है। कोई सज्जन उक्त किताव को देख इस सेवा काय में मददगार बन सकते हैं। अपने "बाल रोग चिकित्सा" से ही ये लेख भेज रहा हूँ।

बच्चों की बीमारी विशेष कर माता के ऊपर निर्भर है। दूध विकार के कारण ज्यादातर बीमार होते हैं। सब से पहले माता के दूध की जांच कर दूध शुद्ध करने के उपाय सोचे। बच्चा के दवा व्यवहार करने के पहले माता के पथ्य पर भी ध्यान रखे। माता की बीमारी बच्चा दूध द्वारा खीचता है, इस लिये दोनों पर साथ २ ध्यान रखे।

दूध जांचने को एक साधारण तरीका—

माता का दूध एक चौड़े वर्तन में रक्खे। बीच में एक चींटी या जू डाल दे, दूध शुद्ध होने पर आसानी से तैरता हुआ निकल जायगा। खराब होने पर उसीमे मर जावेगा। और अन्य कई जांच हैं। दूध खराब होने पर माता के दूध छुड़ा कर ही बच्चे का इलाज शुरू करे तो अच्छा है।

किसी बच्चे को निरोग रखने के लिये बच्चा अवस्था मे ही ध्यान देना आवश्यक है। सभी रोग की जड़ है कब्ज। कब्जियत से ही सब रोग शुरू होते हैं, इस लिये पेट बराबर साफ रखना आवश्यक है, साथ २ माता का भी पेट साफ रखे। माता के तत्सम्बन्धी विकार दूर करने के लिये हमारी चिर अनुभव बूटी है। चिरचिटे की जड़, मरिच योग के साथ कुछ दिन पिलावे। इससे मासिकधर्म व दूध विकार भी दूर होते हैं; पूर्ण जानकारी के लिये हमारी स्त्रीरोग चिकित्सा मंगाकर पढ़े।

आंख ठीक हो जायगी। नेत्र कड़क, चुभन, पानी बहना, १५ मिनट मे बन्द हो जायगी।

६—मूली का एक फूल खाने से एक साल तक आंख नहीं दुखती।

रतौंधी (नक्तान्ध्य)

बेल पत्र पीस एक सप्ताह दोनों समय पीने से ठीक होता है।

२—बंगालिया खाने की तम्बाकू को पत्ती कपड़े में लपेट कर पोटली बनाले, फिर हथेली पर पानी लेकर पोटली को मसल कर पानी पिला दे और रात के समय रतौंधी वाले की आंख मे पानी निचोड़ने से २-३ दिन में लाभ होगा।

मोतिया बिन्द पर—

१—नीम के फूल, कलमी सोरा समभाग पेड़ पर चढ़ पका हुआ नीम के फूल लाकर छाया में सुखा काले खरल में पीस सोरा मिला खरल करे और कपड़ छान कर शीशी मे रखे। रात को सोते समय सलाई से आंख मे लगावे।

२—प्याज के रस में पुरानी मिर्च की जड़ घिस कर अंजन लगाने से मोतिया बिन्द ठीक होता है।

३—एक बूढ़ी जो मोतिया बिन्द के कारण अन्धी सी हो गई एक महात्मा के कथनानुसार अयोध्या में कनक भवन के भगवान का चर्णामृत आंख मे कुछ दिन टपकाने मात्र से मोतिया बिन्द से मुक्त हो गई। न मालूम भगवान पर विश्वास से या भगवान में लगे केशर आदि युक्त चर्णामृत से फायदा हो गया।

४—कुदरू के पंचांग-सिर पर मलते रहने से आने वाला मोतिया बिन्द रुक जाता।

नोट—मोतिया बिन्द के रोगी नेत्र रोग से बचने के लिये नंगे पांव सुबह हरी घास पर आधा घन्टा अवश्य घूमे पेट शुद्ध पर ध्यान रखे प्रात: काल गाय का मक्खन मधु अथवा धारोष्ण दूध पीवे भोजन सात्विक और सुपच अवश्य करे। बादी, बहुत गर्म, देर में पचने वाली चीज न खाय। गाय के या बकरी के दूध व दूध से बनी चीज सेवन करे। भैंस भेड़ के नहीं। काली मिर्च व्यवहार कर सकते है।

मांस, मदिरा, तम्बाकू, बनस्पति तेल, चाय भांग, गांजा प्याज, लहसन, तेल खटाई, आइस्क्रीम बरफ, मिर्च खाना मना है। रबर की चट्टी जूता न पहने, शिर को विशेष धूप से बचावे। ज्यादा नेत्र फार कर न पढ़े न देखें। खड़ाऊ का व्यवहार अच्छा है हो सके तो शीर्ष आसन कुछ अवश्य करे। उपरोक्त बात पर ध्यान देने वाले को मोतिया बिन्द या अन्य नेत्र रोग बिना दवा के भी ठीक रहेगा।

नेत्र रोग से बचने के लिये सुबह उठते ही बिना कुल्ला किये मुख मे पानी गुल गुलाते रहे और इस पानी के आंख में खूब छींटे मारे, शुद्ध पानी से आंख खोल कर स्नान करे।

चेचक की सम्भावना होते ही नेत्र में रक्त चन्दन गाय के घी मे घिस आंख मे टपकाने से नेत्र खराब नही होते।

दृष्टि दौर्बल्य पर—

स्वर्णक्षीरी के दूध में कई बार रुई भिगो कर अंजन लगाने से ठीक होगी, चश्मा की आदत छूट जाती है।

२—तुलसी रस या प्याज रस आंख में टपकाने से नेत्र-जोति बढ़ती है एक सेकेन्ड मात्र थोड़ा लगेगा बाद में अद्भुत प्रकाश मालूम होगा।

हमने एक जगह पढ़ा है कि बहुत दिन का एक सुरदु[illegible] सेर गम युक्त प्याज को चाकू से कतरने लगा। गैस आंख में लगने से आंख से आंसू निकलने लगे। कतरना समाप्त होते २ आंख खुल गई। इससे पता चला कि नेत्र रोग में प्याज रस अवश्य फायदा करेगा।

३—सूखी नीम के फूल और सोडा खरल कर कपड़छान के बाद शीशीमें रखे और सलाई से आंख में लगाया करे सब से आसान कम दाम का और सबसे ज्यादा फायदा मन्द है।

४—नैत्र वटी— नीला थोथा भस्म ५ मा० फिटकरी भस्म, शु० रसौत १०-१० मा० मिश्री १५ मा०, सफेदा २० मा० पहले गुलाब जल से रसौत को घोल बाकी सभी चीजों का कपड़ छन चूर्ण में मिला घोटे। गुलाब जलसे मटर प्रमाण गोली बना समय पर गुलाब जल या पानी मे घिस कर लगावें इससे धुन्ध, जलस्राव, लाली, इत्यादि नष्ट होते।

नेत्र की फूली—आंखोंको अधिक समय तक बन्द रखने के कारण प्रकाश वाले तिल पर श्वेत बिन्दु आ पड़ जाता है जो धीरे २ बढ़ आख खराब कर देता है।

दवा—१—अपामार्ग की जड़ का रस मधु मे मिला अञ्जन लगाते रहने से फूली नष्ट होता है।

२—बरगद की जड़ मधु में घिस कर या श्वेत पुनर्नवा जड़ या नगरांकुश की पत्ती का रस या बेगन की जड़ को घिसकर या वन तुलसी का रस, वड़ (बरगद) के दूध या नमक लाहोरी को आंख में लगाने से फूली दूर होती है।

३—उड़ाये हुये नौसादर को खूब महीन पीस घोट अञ्जन करने से कुछ समय में फूली नष्ट होती है।

४—निमली का बीज, काले सर्प की चर्बीमें घोट कर डिब्बा में रक्खे रोजाना सलाई से आंख में अञ्जन करने से पुरानी फूली कट जाती है और आंखों में जोति बढ़ जाती है।

५—गेरू, लाख और चमेली की कली सम भाग लेकर पानी से पीस बतिया बना ले, इन्हें जल मे घिस कर लगाने से लाभ होता है। (वं० सं०)

६—चमेली फूल की कोपल व मुलहठी के चूर्ण को घृत से भून कर मन्दोष्ण जल में पीस छान किंचित कपूर घिस कर कुछ बूंदे आंख में टपकाने से फूली नष्ट होती है।

नेत्र ज्योति वर्धक अञ्जन—

अनबिधे मोती ३ मा०, कलमी शोरा २ मा०
चौकिया सुहागा २ मा०, शीतलचीनी २ मा०
नौसादर २ मा०, ममीरा २ मा०
काले सर्प की चर्बी के दीप से बना काजल १तो०

विधि—सब को काले पत्थर के खरल में अर्क गुलाब के साथ आठ पहर घोट कर रखलें, इस अंजन के लगाने से नवीन ज्योति उत्पन्न होती है और फूली, मांड़ा आ[illegible] नेत्र के समस्त विकार दूर होते हैं।

नेत्रामृत अञ्जन—

फूली, माड़ा, जाला, तिमिर, मोतियाबिन्द, आदि आंख के सब रोग के लिये—

योग—नीम की पत्ती १० तो०, बेल पत्र ५ तो०, सिरस पत्ती ४० तो०, इमली पत्ती २० तो०, जामुन की पत्ती ५ तो०।

जायफल दक्षिणी १ नग, लौंग १ मासा, छोटी इलायची दाना १ मा०, समुद्रफेन २ मा०, सिंदूर ४ र० इन सबका चूर्ण बनाले।

उपरोक्त सभी पत्तियों को पीस कपड़ छनकर साफ मिट्टी के नये बर्तन में रात भर ढक कर रखे। सुबह पानी निथार पेन्दी में जमे पदार्थ को धूप में सुखाले, बाकी योग के चूर्ण में मिला सभी सबके बराबर सरसों तेल मिलावे। जस्ता, अथवा फूल धातु के बर्तन में नीम के छाल हटाये हुये डन्डे से १२ घन्टे तक खूब घुटाई कर अञ्जन सिद्ध करले और व्यवहार में लावे।

रोहुआ (खथुआ) रोग—

यह रोग आंख के ऊपर वाली पलकों के भीतर उत्पन्न होता है। इसमें लाल रंग की मांस के समान छोटी पिड़िका होती है। पलकों में सूजन आ जाती, आंख बराबर बन्द रहती है।

पीपो को पानी से घिसकर अञ्जन करने से रोहुआ नष्ट होता है।

२—आम के पत्ते तोड़ डंठल को दबाने से जो रस निकले बम्हनी के ऊपर लगाने से सूख कर अच्छी होती है, पलक बम्हनी की अच्छी दवा है।

३—पके हुये रोहुवों के अग्र भाग पर थोर २ नेनुआ की कोमल पत्ती घिस फोड़ दें। रक्त को पोंछ पलकों पर हल्दी गुनगुना लेप दें। दूसरे दिन से निम्न दवाएं लगाने से कैसा ही भयंकर रोहुआ १ सप्ताह में सूख कर आराम होता है।

योग—एक छोटी हरड़ और २ र० कत्थे की राख, बेलपत्र के रस में घोटकर दोनों समय अञ्जन करे।

४—आंख के काले भाग पर मांस बढ़ जाने पर रात में पढ़ने में दिक्कत उपस्थित होने पर उत्तम दवा—

फिटकरी, कलमीशोरा, सोंठ का कपड़ छान चूर्ण सलाई से लगावे। हरड़ का चूर्ण ५ माम, मधु से खाय।

५—आंख पलक में दाना होने पर—अजवायन, दालचीनी, फिलफिल स्याह तीनों समभाग पीस कपड़ छान कर नेत्रों में लगावे।

आंख की बीमारी शरीर की गर्मी के ही अंग है। तेज धूप, तेज मसाले सेवन, अति मैथुन, मानसिक श्रम की अधिकता, अधिक अध्ययन, तम्बाकू पीना, मादक द्रव्यों का अति सेवन, रक्तस्राव के कारण दौर्बल्यता, शिर के ऊपर अभघात लगना, कम उम्र में चश्मा का व्यवहार, पाचन शक्ति की कमजोरी के कारण होता है।

आदरणीय बन्धु वैद्यराज
श्री जयनारायण जी गिरि 'इन्दु'
धजवा, पो० नूरचक वाया केवटी
जि० दरभंगा (बिहार)

प्रार्थना

आपने इस अङ्क के लिये प्रार्थना व 'बाल रोग' नाम से जो लेख भेजकर सहयोग दिया है इसके लिये मैं आभारी हूं।—वि० स० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

जय धन्वन्तरि जय दुःख हारक ॥
तैने तरु आयुर्वेद लगाया अथक श्रम घनघोर किया ।
सुश्रुत, माधव, वाग्भट्ट सम पुत्र रत्न को जन्म दिया ॥
आ गई बहारें गुलशन में कुसुमित आयुर्वेद प्रसून हुआ ।
सकल भुवन में इसका डंका बड़े गर्व से बोल उठा ॥
पर खेद आज इस युग में देखो सरस वाटिका सूख रही है
आज संकट की वेला में वैद्यों का मन तो दुःखा रही है ॥
उस युग में राजे-रजवारे औ समस्त विश्व थे प्रशंसक ।
पर आज देखलो इसी राष्ट्रके नृपति बने हैं इसके भक्षक ॥
करो नाश सब जड़ता तम को हे उद्धारक हे जगपालक ।
जय धन्वन्तरि जय दुःख हारक ॥

बाल रोग

शस्य श्यामला भारत भूमि पर वीरों की कमी नहीं । यहां अनादि काल से वीरों, पण्डितों, न्यायकों दार्शनिकों, योगियों तथा चिकित्सा शास्त्र विशारदों का अभाव नहीं खटका । जब भारत माँ को अभाव खटका तब एक से एक पुत्र रत्नों को जन्म दिया। यहां के योद्धाओं से देवगण भी हार खाते थे । यहां के योद्धाओं को इन्द्र का हरण किया राज्य प्राप्त होता था । यहां के तपस्वियों की तपस्या से इन्द्र डरते थे, यहां के धर्मों को विश्व ने माना था और यहां की चिकित्सा-पद्धति (वैद्यक) से भारत के सम्राट तक मुग्ध हुये थे। एक समय ऐसा था कि यहां पांच वर्ष के विद्यापति कविता कर सकते थे। मूर्ख कालिदास विश्व प्रसिद्ध पण्डित हुये, अभिमन्यु जन्म से ही चक्रव्यूह प्रवेश जानते थे, शुकदेव गर्भ से ही ज्ञानी हुये, और नन्हे से ध्रुव ने तपस्या के बल पर परम पद प्राप्त किया, अहिरावण का पुत्र गर्भ से ही उछल कर युद्ध कर सकता था लेकिन पट्ठा सिलौटा का पुत्र आज लैक्टोडैस (Lactodex) तथा मीलो (Milo) पर दिन खेप रहा है। इसका उत्तरदायित्व कौन ? आस्ट्रेलिया की महिलायें साड़ी पसन्द कर सकती हैं लेकिन भारत

की सादर महिलायें नहीं। संस्कृत का विकास रूस में, मैथिली का नेपाल में हो सकता है लेकिन हिन्दुस्तान में नाम मात्र, अरब के लोग आयुर्वेद और यूनानी पर लट्टू हैं लेकिन वहाँ की जनता, यहाँ की सरकार डर रही है, लेकिन वे यह नहीं समझते कि जो कोई जिस देश में उत्पन्न हुआ है उसको उसी देश की औषधि फल पद होती है और इस प्रकार यहां के नागरिकों को आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति ही उचित जचती है। यदि आयुर्वेद पद्धति के नियमों के अनुसार चला जाय तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि आज हमारे देश में फिर से अभिमन्यु, ध्रुव और शुकदेव अवतरित हो सकते हैं। भारतवासियों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि बच्चों की आयुर्वेद पद्धति से ही चिकित्सा करायें!

सभी चाहते हैं हमारा बालक बलवान हो, बुद्धिमान हो। लेकिन इसके लिये कोई उचित कार्य नहीं करते, उनकी यह कल्पना हृदय कुञ्ज में खो जाती है, हम इतनी अवश्य कहेंगे कि जिस मकान की जड़ मजबूत होती है वह उतना ही अच्छा भी होता है। यदि मकान की जड़ मजबूत है तो एक महलेसे नौ महला बना सकते हैं, यदि मकान की नींव कमजोर है तो मकान अधिक दिनों तक ठहर नहीं सकेगा। अत: बच्चे को उसी प्रकार स्वस्थ बनाना चाहिये जो आगे चलकर सदा मजबूत रहेगा। उर्वरा भूमि पर सभी चीजें आसानी से उपजाई जा सकती है पर ऊसर भूमि में कदापि नहीं। यदि बच्चा स्वस्थ होगा तो उसके गात्र भूमिमें अनेक फसलें उगाई जा सकेंगी। यथा—बुद्धि, सुशीलता, कर्तव्य परायणता आदि।

जहां तक मेरा अनुमान है, कोई भी रोग होता है—मनुष्य की असावधानी के कारण। रोग का प्रथम कारण मनुष्य ही होता है, रोगी होना शास्त्र में पाप बतलाया गयाहै अत: असावधानी से रहना पाप का कारण है। इस लिये अपने बाल-गोपालों का ठीक प्रकार से पोषण कीजिये। कितना भी दवा—दारू क्यों न किया जाय यदि अपथ्य से निषेध न रखा जाय तो दवा किसी काम की नही होती है। अत: बच्चे के साथ २ उसकी माता भी अपथ्य से बचे।

बहुत सी मां प्यार से बच्चों को सोते से उठा कर दूध पिलाती हैं। ऐसा नही करना चाहिये, और न जाकर उठे बालकको तुरन्त दूध पिलाना चाहिये। सबसे अच्छा तरीका यह होता है कि बालक को दूध पिलाने का समय नियत कर दिया जाय। ऐसा होता है कि बहुत सी माता बालक को जबरदस्ती दूध पिलाती है या खाना खिलाती है (कि हमारा लड़का मोटा ताजा हो) जिससे उलटा हो जाती है, उलटी के बाद भी वे खाद्य पदार्थ देते हैं। यह नहीं देना चाहिये क्योंकि इससे हाजमा कमजोर हो जाता है। बच्चों को साफ-सुथरा रखना तथा खुली हवा में उछलने देना चाहिये, जाड़े के महीने में सुबह धूप में भी थोड़ा रख सकते हैं, खाने के लिये ऐसा पदार्थ देना चाहिये जो बल कारक हो साथ २ हजम भी जल्द हो जाय। आप अपने बालक को खोमचे की चीजें तेल खटाई, तथा मसाले युक्त पदार्थों से सदैव दूर रखें।

बालक क्यों रोता है? इसका ध्यान सतत रखना उचित है। यदि बच्चा अधिक रोवे तो

समझना चाहिये कि इसे कोई बीमारी हो गयी है, जिस कारण से बच्चा रो रहा है उसका ध्यान रखे जैसे रोते समय यदि मुख में उगली डाले तो दांतों को तकलीफ, कान में हाथ करने से कान की बीमारी; घुटने को उठा कर पेट पर रखे तो पेट की बीमारी और खांस कर रोये तो फेफड़े की बीमारी समझना, बालकों को निरोग रखने इसके लिये आवश्यक है कि इसे कब्जीयत न रहे।

बालक को बचपन से ही भूत-प्रेत का डर दिखाना, धमकी देना तथा और भयानक वस्तुओं का वर्णन सुनाना महाबुरा है। क्योंकि इससे उस चीज का असर उसके दिमाग पर पड़ता है जिससे बच्चा डरपोक बन जाता है। उसका यह स्वभाव बराबर के लिये बन जाता है जिसके फलस्वरूप अधिक उम्र में भी वह प्रतिमा डरपोक निकलती है। बच्चे की प्रथम पाठशाला मां का प्यार ही है, वह मां से ही सब कुछ सीखता है। अतः माता को चाहिये कि बच्चों को अच्छी आदत डालने का सही रास्ता अपनाये। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति इब्राहीम लिंकन का कहना था—"मैं जो कुछ हूँ, और जो कुछ होऊंगा इस सबका श्रेय मेरी माता को है।

अस्तु! मैं विस्तार भय के कारण लेख को अधिक विस्तार करना नहीं चाहिता। लेकिन आज अपार हर्ष हो रहा है कि 'माला' के सम्पादक श्री विश्वेश्वर दयालु वैद्यराज जी इस बार माला के विशेषाङ्क "बाल रोग चिकित्सा अङ्क" लेडी डाक्टर श्रीमती दमयन्ती त्रिवेदी के विशेष सम्पादकत्व में प्रकाशित कर रहे हैं। इसके पूर्व के विशेषाङ्क जो कि श्री कृष्ण त्रिवेदी निराला के सम्पादकत्व से प्रकाशित हुआ था वह अपने गौरव से आयुर्वेद वायुमण्डल के दिगदिगन्त को सुरभित किया है। मैं आशा रखता हूँ कि यह विशेषाङ्क भी उसी प्रकार उत्तम होगा। अब मैं बाल रोगों पर लाभकारी योग लिख रहा हूँ।

(१) कब्ज हो तो बड़ी हर घिस कर इसमें जरा सा काला नमक मिला कर चटा दें।

(२) यदि यकृत खराब हो बच्चा दूध फेंकता हो तथा दुबला हो तो चूने का पानी (Lime water) जरा सा कर पिलावें।

(३) बच्चे के पतले दस्त में सोंठ तथा जायफल के पानी के साथ संजीवनी बटी अचूक फल प्रद देखी गयी है।

(४) निमोनिया, इन्फ्लुएंजा में अभ्रक भस्म में समभाग सुहागे का लावा शहद के साथ दें। छाती पर गोघृत की मालिस करे।

(५) हिचकी में सोंठ और पीपल का चूर्ण मधु के साथ दें।

(६) खांसी में अदरख के रसमें मधु मिला कर पिलाये।

(७) बाल शोष पर—अश्वगन्धा चूर्ण १ मा०, त्रिफला चूर्ण १ मा०, सौभाग्य भस्म १ र०, वराटिका भस्म ३ र०, शंख भस्म ३ र०, प्रवाल भस्म १ र०, इसकी चार मात्रा बनाये, इसको जल मिश्रित गोमूत्र के साथ दें।

(८) अजगल्ली रोग—जिससे शरीर में चिकनी, लाल मूंग प्रमाण पीड़ा रहित बहुत

की फुन्सियां हो जावे तो उसे अजगल्ली कहते हैं। इस रोग में आंवले का चूर्ण थोड़ा खिलाना तथा उसी चूर्ण को लगाना चाहिये।

(९) दन्तोपद्रव समय सुहागे का लावा शहद के साथ दांत पर मले, इससे दांत आसानी से निकल आयेंगे।

(१०) बालकों के उदर शूल में तुलसी के रस में सोंठ का चूर्ण मिला कर चटा दे।

(११) बच्चों का पेट फूल जाय तो तुलसी का रस १ माशा पिला दें।

बाल जीवन वटी

गोरोचन ३ मा०, मुसब्बर ६ मा०, उसारे रेवन्द, केशर, कटेरी कुसुम का जीरा, यवक्षार, सत्यानाशी के बीज, हरेक १–१ तोला लेकर महीन चूर्ण कर अदरक के रस में ६ घण्टे घोट कर मूंग बराबर वटी बना छाया में सुखा लें। मात्रा–१ गोली आवश्यकतानुसार माता के दूध या शहद के साथ दे। यह बच्चों की पसली (डब्बा) रोग, कब्जीयत अफरा, श्वास कास, पेशाब का रुकना आदि दूर कर बच्चे को आरोग्य रखता है।

धन्वन्तरि

अरविन्दासव

कमल का फूल, खश, केशर, या गम्भारीफल, मजीठ, नीलोफर, बड़ी इलायची, बला (खरेटी) जटामांसी, नागरमोथा, अनन्तमूल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, बच, कचूर, निशोथ (काली), नील पचांग, परवल का पत्ता, पित्तपापड़ा, अर्जुन की छाल, मुलैठा, महुआ के फूल, सुरामासी हरेक समभाग आधा २ पाव, मुनक्का २॥ सेर, धाय पुष्प २ सेर, जल ११॥८८ सेर चीनी १२॥ सेर, शहद ६। सेर इन सब द्रव्यों को एकत्र कर मिट्टी के पात्रमें सन्धान करे १ महीना बाद छानकर प्रयोग में लावे। यह बालकों के समस्त रोगों को नाश कर बल, पुष्टि, अग्नि तथा आयु को बढ़ाता है। यह ग्रह दोष नाशक, बच्चों को सूखा रोग में रामबाण है। मात्रा—३ माशा से आवश्यकतानुसार १ तोला तक पानी बराबर मिला कर दें। भै० र०

शिशु दन्तोद्भेदकालीन अतिसार में—बाल चतुर्भद्र १ र०, एलादि चूर्ण १ र०, शंखभस्म आधी र० दिन में तीन बार गो दुग्ध से या उष्ण जल से दें।

शिशुदन्तोद्भेदकालीन अवस्था में यदि दस्त और कै दोनों हो तो अर्क पुदीना का सेवन करावे। इससे यकृत की भी गड़बड़ी ठीक हो जाती है जिससे बच्चों को कोई भी चीज आसानी से पच जाती है।

लेख के अन्त में, मैं अपना एक परीक्षित स्वानुभूत बाल रोग नाशक नुस्खा लिख रहा हूँ। इसको मैंने कितने बच्चों पर सफलतासे प्रयोग किया है। इसका योग मैं माला के अप्रेल १९६६ के अङ्क में प्रकाशित कराया था। लेकिन इधर आकर इस योग में मैं तीन वस्तुयें (तुलसी के बीज, अतीस, वंशलोचन) और बढ़ा दी है जिससे यह योग और उत्तम सिद्ध हो गया है, निवेदन है कि वैद्य बन्धु इसकी परीक्षा कर इसके फलाफल की सूचना अवश्य देंगे।

[शेष १०६ पेज पर]

बाल रोग

आदरणीय भाई कविराज वैद्यरत्न
श्री मुक्तिनाथजी शर्मा डुग्याल L.A.M.S.
भिषग्रत्न, आयुर्वेदाचार्य प्राणाचार्य
मेडिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट, आयुर्वेद विद्यालय,
चिकित्सालय नरदेवी (काटमाण्डौ) नेपाल

आप योग्य आयुर्वेद चिकित्सक तथा आयुर्वेद के कर्मठ सेवक हैं। आपकी आयुर्वेदिक सेवाओं को आंककर ही भारतीय जन स्वास्थ्य रक्षक संघ ने आपको वैद्यरत्न की उपाधि से सम्मानित किया है। आपने बाल चि० अङ्क के लिये "बाल रोग" से जो लेख भेजा है। आशा है माला के पाठक इससे लाभ उठावेंगे।

वि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

भ्रूण दश मास पूर्ण कर मां के गर्भाशय से जन्म लेता है तब उसको शिशु या बालक कहा जाता है, वही बाल चिकित्सा भी है। वह दुग्धाहारी होता है। यदि शिशु वात दुष्ट माता का स्तन पान करता है तो उसको वात रोग होता है।

वात दुष्टं शिशुः स्तन्यं पिवन् वातगदातुरः।
क्षामः स्वरः कृशांगः स्याद्बद्धविण्मूत्र मारुतः॥

यदि शिशु पित्त दुष्ट माता का दूध पीता है तो बालक को पित्त रोग होता है।

खिन्नो भिन्न मलो बालः कामला पित्त रोगवान्।
तृष्णालु रुष्ण सर्वाङ्गः पित्त दुष्टं पयः पिवन्॥

यदि बालक कफ दुष्ट माता का दूध पान करता है तो उसको कफ रोग होता है।

कफदुष्टं पिवन् क्षीरं लालालुः श्लेष्म रोगवान्।
निद्रान्वितो जडः सून वक्त्राक्ष्च्छर्दनः शिशुः॥

धातृ या मां की स्तन शुद्धि के लिये प्रथम उसे लंघन कराकर पञ्चकोल सिद्ध पेय खिलावे, इस क्रिया से माता का दूध शुद्ध हो जाता है, बालक को भी स्तन दुष्ट जन्य रोगों से छुटकारा मिलता है।

यदि मां का दूध वात से दूषित हो उस दूध का पीने वाला बालक वात गदातुर हो तो मां को एव शिशु को दशमूल काढ़ा का प्रयोग करावे इस काढ़े से बालक का वात रोग नष्ट होता है।

तत्र वातात्मकं स्तन्यं दशमूली जलं पिवेत्।

पित्त दुष्ट स्तन पान से बालक पित्त रोग से पीड़ित हो तो मां एवं बालक को अमृतादि कषाय पिलावे।

पित्तदुष्टेऽमृता भीरु पटोल निम्ब चन्दनम्।
धातृकुमारश्च पिवेत् क्वाथयित्वा सशारिवाम्॥

गुडूची, शतावर, पटोलपत्र, निम्ब वक्कल, चन्दन, सारिवा समान भाग लेकर पाव भर पानी में पाक करे, शेष २ तोला रहने पर कपड़े से छान उस काढ़े को पिलाने से बालक पित्त रोग से मुक्त होता है, माता को खिलाने से दुग्ध शुद्ध होता है।

कफ स्तन पान से शिशु कफ रोग में ग्रस्त हो तो भार्ग्यादि क्वाथ दें इस क्वाथ के पान से कफ रोग से ग्रस्त बालक स्वास्थ्य लाभ करता है।

रुग्ण बालक अपना दुःख व्यक्त कर नहीं सकता है। अतः चिकित्सक को रोग पहिचान

करने में दिक्कत होती है। अतः माधवकर ने रोग तीव्रातीव्र विवेचन के लिये लक्षण का भी उल्लेख किया है, वह इस प्रकार है—

ज्यादा रोने से बालक का रोग तीव्र है। अल्प रोदन से उतना तीव्र नहीं है। जिस अंग में बालक बार २ स्पर्श करता है एवं जिस अंग को बालक छूने नहीं देता, उस अंगकी वेदना को वैद्य लोग सहज में ही जान सकते हैं, अक्षि निमीलन से शिर में हुये दर्द को जाना जा सकता है। कठिजयत छर्दि, स्तनदंशन, अन्त्रकूजनादि लक्षणों से शिशु का कोष्ठ में हुआ रोग का ज्ञान वैद्य लोग प्राप्त कर सकते हैं। एवं आध्मान बार २ शरीर तनना आदि लक्षणों से भी कोष्ठ गत रोगों को वैद्य अवगत कर सकता है।

शिशोस्तीव्रामतीव्राञ्च रोदनाल्लक्षयेद्रुजम्।
सर्म स्पृशेद्भृसं देशं यत्र च स्पर्शनाक्षमः॥
तत्र विद्याद्रुजं मूर्ध्नि रुजं चाक्षिनिमीलनात्।
कोष्टेविवन्ध वमथुस्तन दंशान्त्रकूजनैः॥
आध्मान पृष्ठनमन जठरोन्नमनैरपि।

पाखाना पेशाब का रुकना, भय, एक तरफ दृष्टि आदि लक्षण देखकर वैद्य वस्ति एवं गुदा मे हुये रोग का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, वैद्य बालक का स्रोतों का एवं सन्धियों को भी बार २ देख कर ही रोग का निश्चय कर सकते है।

बस्तौगुह्ये च विण्मूत्र संगत्रासदिगीक्षणैः।
स्रोतां स्यङ्गानि सन्धींश्च पश्येद्यत्नान्मुहुर्मुहुः॥
(माधव)

कुकूणक रोग जो वर्त्म में होता है, बालक मे ही पाया जाने वाला रोग है, वह रोग भी दुष्ट स्तन पान से ही होता है, इस रोग का लक्षण इस प्रकार है—नेत्र में कण्डु, नेत्रस्राव, ललाट, अक्षिकूट एवं नासा को बालक हाथ से रगड़ता है, सूर्य को देख नहीं सकता है।

कुकूणकः क्षीरदोषाच्छिशूनामेव वर्त्मनि।
जायते तेन तन्नेत्रं कण्डूरञ्च श्रवेन्मुहुः॥
शिशुः कुर्याल्ललाटाक्षि कूटनासावघर्षणम्।
शक्तो नार्कं प्रभाद्रष्टुं न वर्त्मोन्मीलनक्षमः॥

इस रोग मे वायविडंग, हरताल, मनःशिला, लाक्षा, स्वर्णगैरिक सम भाग लेकर चूर्णाञ्जन बनाले। उस चूर्ण को सलाई से लगा देने से बालक कुकूणक रोग से मुक्त होता है।

इसके अलावा शिशु को परिभवाख्य (शोष) रोग भी होता है। यह रोग गर्भिणी माता का दूध पीने से होता है, इस रोग का लक्षण इस प्रकार है—

शिशु को कास, अग्निमांद्य, छर्दि, तन्द्रा, कार्श्य, अरुचि, भ्रम (चक्कर आना) पेट बड़ा होना ये लक्षण देखने मे आते हैं।

मातुः कुमारो गर्भिण्याः स्तन्यं प्रायः पिवन्नपि।
कासाग्नि सादं वमथु तन्द्राकार्श्यारुचिभ्रमैः॥
युज्यते कोष्ठवृद्ध्या च तमाहुः पारिगर्भिकम्।

इस रोग में कुमारकल्याण रस का प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है, इस योग मे स्वर्णसिंदूर, मुक्ता, स्वर्ण, लौह, अभ्रक, स्वर्ण माक्षिक भस्म का योग है, घीग्वार के रस से भावित है।

इसके अलावा बालक को तालु कण्टक रोग भी होता है, इस रोग का लक्षण इस प्रकार है—तालुपात (तालवास्थि का खिसकना) स्तनद्वेष, टट्टी पतली होना, प्यास लगना, आंख, मुख गला मे पीड़ा होना, छर्दि होना, ग्रीवा को धा-

रक्षा नहीं कर सकता ये सब लक्षण तालुकण्टक रोग में पाये जाते हैं।

तालु मांसे कफ क्रुद्धः कुरुते तालु कण्टकम्।
तेन तालु प्रदेशस्य निम्नता मूर्ध्नि जायते॥
तालु पात स्तन द्वेष कृच्छ्रात्पान शकृद्द्रवम्।
तृड्वमि कण्ठास्य रुजा ग्रीवा दुर्धरतावमिः॥

इस रोग में कफ के अधिक होने से कफ चिन्तामणि रस अत्यन्त उपयोगी है शतशः अनुभूत है।

बालक को प्राण नाशक पद्मवर्ण महापद्म नामक विसर्प रोग भी होता है यह रोग बालक के शिर वस्ति में होता है शिर से गुदतक फैलता है।

विसर्पस्तु शिशोःप्राण नाशनो वस्ति शीर्षजः।
पद्मवर्णो महापद्म नामा दोष त्रयोद्भवः॥
शङ्खाभ्यां हृदय याति हृदया द्वा गुदं व्रजेत्।

इस रोग में कुमार कल्याण रस पटोलादि काढा से देने से लाभ होता हैं।

इसके अलावा अहिपूतना रोग भी बालक को होता है इस रोग में यष्टि मधु, रसाञ्जन (दार्वी रसाञ्जन) का लेप बना कर लगा देने से लाभ होता है इसको मधु के साथ बालक को खिलाये।

बालक को अजगल्ली रोग भी होता है। इस रोग मे पटोलादि काढे का अभ्यास कराये।

अगर बालक का नाभि पक जाय तो रक्त चन्दन के लेप से फायदा होता है।

शिशु का गुप्त भाग पक जाय तो हरा नीम का पत्र कच्ची हल्दी का लेप कर दें इससे लाभ होता है।

वयस्क मनुष्यों को जिन २ कारणों से ज्वरादि व्याधियाँ होती है बालक को भी उन २ कारणों से ज्वरादि व्याधियां होती है लिखा है कि—

ज्वराद्या व्याधयः सर्वे महतां ये पुरेरिताः।
बालदेहेऽपि तेतद्वद्विज्ञेयः कुशलैः सदा॥

ज्वरादि रोगों में बालक को वही दवा दी जाती है जो दवा बड़े को दी जाती है केवल मात्रा कमी वेसी होना चाहिये।

[१०३ पेज का शेष]

बाल कल्याण

यवक्षार १० ग्रा०, गोदन्ती भस्म १० ग्रा०, जायफल का बारीक चूर्ण, प्रवाल पंचामृत, मुलहटी, अतीस प्रत्येक ६–६ ग्राम, तुलसी के बीज और वंशलोचन १–१ ग्राम।

इन सबका महीन चूर्ण बनाइये। जितना महीन होगा उतना ही फलप्रद भी। बाद में अदरख के रस में मूंग बराबर इसकी गोलियां बनाये, समस्त बाल रोगोंमे यह धड़ल्ले से प्रयोग कर सकते है। बाल रोगों की यह अव्यर्थ औषधि है। इससे उल्टी, ज्वर, अफरा, दस्त, खांसी, डब्बा तथा दांत निकलने के रोग नष्ट होते हैं।

अनुपान—माँ के दूध अथवा मधु के साथ।

कृमि रोग में—वायविडंग, इन्द्रजो, सौंठ के टुकड़े, इन सबको पीस कर गर्म पानी से देना चाहिये।

बाल रोग और ज्योतिष

आदरणीय बन्धु

श्री प्रतापनारायण जी शर्मा

ज्योतिषरत्न

२/६०११ देवनगर न्यू दिल्ली ५

आप ज्योतिष शास्त्र में निपुण हैं, विद्वान हैं, तथा निस्वार्थ भाव से आप जनता की सेवा करते हैं। आपकी जन सेवा को निरख कर ही भारतीय जन स्वास्थ्य रक्षक संघ ने अपने वार्षिक उत्सव पर ज्योतिषरत्न की उपाधि से सम्मानित किया है। आपने बाल रोग वि० अंक के लिये बाल रोग और ज्योतिष नाम से लेख देकर जो सहयोग दिया है, उसके लिये आप धन्यवाद के पात्र हैं।

— वि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

वनं समाश्रिता येऽपि निर्ममानिष्परिग्रहाः।
अपिसे परिप्रच्छन्ति ज्योतिषां गतिकोविदम्॥

जो ससार के भोगों को त्याग कर वन का आश्रय ले चुके हैं, ऐसे राग द्वेष शून्य, निष्परिग्रह। सन्त महात्मा भी ज्योतिष-शास्त्रसे भविष्य जानने के लिये उत्सुक रहते हैं। तब और साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या है।

इस प्रकार की भविष्य वाणी ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही की जाती है जो अत्यन्त कठिन और श्रमसाध्य है। आयुर्वेद महाशास्त्र की तरह ज्योतिष शास्त्र के आर्ष ग्रन्थों में भी सुस्पष्ट और विस्तृत रूप से असाध्य रोगों का वर्णन और उनकी शान्ति के उपाय लिखे हैं। परन्तु आज कल मेडीकल नवीन वैज्ञानिक प्रणाली, विदेशी भाषा और फैशन का प्रभाव ज्यों ज्यों बढ़ता जाता है त्यों त्यों लोगों की बुद्धि भी मोटी होती जा रही है। लेकिन वे शायद इस बात को नहीं मानेंगे कि एक कुशल कविराज (वैद्य) हाथ की नाड़ी अथवा अन्य लक्षणों को देखकर ही प्राणी के शरीर की आभ्यन्तरिक क्रिया को जान लेता है। अथवा एक ज्योतिर्विज्ञान वेत्ता विना स्पर्श के ही प्राणीके स्वभाव, भूत, भविष्य, वतमान किस आयु में क्या होगा, वह कितनी विद्या प्राप्तकरेगा कब भाग्योदय होगा, जीवन मे कितनी उन्नति करेगा, उसकी मानसिक शक्ति कैसी होगी, स्वस्थ होगा अथवा अस्वस्थ, किस अज्ञात कर्म के द्वारा कब कौन सा रोग होगा, कौन से रोग की प्रबलता अधिक होगी, किस आयु में कौन सा रोग होगा, कौन सा उपाय करने से कितने दिन के बाद उस रोग की शान्ति होगी, और वह कब तक इस संसार मे रहेगा आदि भविष्य को ज्योतिषी पहले से ही बता देता है। जिसे विश्व का चतुर से चतुर डाक्टर (आधुनिक यन्त्रों की सहायता प्राप्त होते हुये भी) नहीं बता सकता। अतः उन्हीं ऋषि प्रणीत उक्त शास्त्र द्वारा वर्णित कुछ रोग सम्बन्धी योग यहां दिये जा रहे हैं।

सर्व प्रथम यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि प्राणी के शरीर के किस भाग पर कौन से ग्रह, भाव व राशि का अधिकार है। बारह राशि और लग्नादि द्वादश भाव पापग्रहों से युक्त व दृष्ट हों तो शरीर का वह भाग निर्बल तथा रोग युक्त होता है। यदि उक्त राशि और भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट न हों तो शरीर का वह भाग हृष्ट पुष्ट सुन्दर और रोग रहित होता है।

प्राणी के शरीर में ग्रहों व राशियों का अधिकार

सूर्य—शिर और मुख।

चन्द्रमा—कण्ठ और वक्षस्थल।

मंगल—पेट और पृष्ठ।

बुध—हाथ और पैर।

गुरु—कमर और जंघा।

शुक्र—गुह्यस्थल और अण्डकोष।

शनि—घुटने।

मेष—शिर	तुला—मूत्राशय
वृष—मुख	वृश्चिक—गुप्तेन्द्रिय
मिथुन—दोनों भुजायें	धनु—उरु (जंघा)
कर्क—हृदय	मकर—घुटने
सिंह—पेट	कुम्भ—पिंडली
कन्या—कमर	मीन—पैर

काल पुरुष के प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव मे हृदय, पंचम भाव में उदर, षष्टम भाव में कमर, सप्तम भाव में बस्ति (मूत्राशय), अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव मे उरु, दशम भाव मे जानु (घुटने), एकादश भाव मे जंघा, द्वादश भाव मे पैर।

अनिष्ट ग्रहों द्वारा उत्पन्न हुये रोग

अनिष्ट सूर्य से—

दाह, पीला वमन, गर्म व पीले दस्त, क्षय रोग, ज्वर-वृद्धि आदि पित्त से उत्पन्न हुये रोग।

अनिष्ट चन्द्रमा से—

सफेद वमन, कमल, पूतना ग्रह, पांडु, शरीर कांपना, देव दोष आदि कफ और वात से उत्पन्न हुये रोग।

अनिष्ट मंगल से—

अण्ड वृद्धि, कफ, शस्त्र व अग्नि द्वारा पीड़ा, फोड़े फुन्सी, गांठों के रोग, दरिद्रता के कारण उत्पन्न हुये रोग, शिव के गण भैरव आदि देवताओं द्वारा पीड़ा आदि पित्त से उत्पन्न हुये रोग

अनिष्ट बुध से—

उदर रोग, पूतना ग्रह, गुदा रोग, संग्रहणी, शूल, हवा-डब्बा, भूतादि द्वारा कष्ट आदि त्रिदोष से उत्पन्न हुये रोग।

अनिष्ट गुरु से—

मुखपाक, गुल्मरोग, शरीर कांपना, ब्राह्मणों ऋषियों द्वारा शाप ग्रसित आदि कफ से उत्पन्न हुये रोग।

अनिष्ट शुक्र से—

धातु क्षीणता, शीघ्रपतन, प्रमेह, अंडवृद्धि, गुप्त रोग, नजला, शिरशूल, गुह्यस्थल के रोग आदि कफ और वात से उत्पन्न हुये रोग।

अनिष्ट शनि से—

गठिया, दरिद्रता के कारण उत्पन्न हुये रोग भयानक स्वप्न, बालक अंग प्रत्यंग को पटकता है नींद न आना आदि वात रोग से उत्पन्न हुये रोग।

अनिष्ट राहु से—

हड्डियों मे दर्द, मृगी, पिशाच भूत बाधा, अरुचि, भयानक स्वप्न, कुष्ट, सर्प से पीड़ा, खांसी, श्वास वात और कफ से उत्पन्न हुये रोग।

अनिष्ट केतु से—

गंज, खुजली, उदर कृमि, क्षय, ज्वर, पेट

आंख के रोग, शूल, फोड़ा फुन्सी, आदि वात रोग से उत्पन्न हुये रोग।

कुण्डली मे जो ग्रह नीच, अस्त अथवा शत्रू के घर में हो और पापग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो उस ग्रह से उत्पन्न हुये रोग समझना। राशि, भाव एवं ग्रहों के द्वारा अपनी बुद्धि से तारतम्य कर फलादेश करना चाहिये।

रोग संबन्धी योग

जिसके जन्माङ्ग में छटे भाव का स्वामी शनि अष्टम स्थान स्थित हो तो संग्रहणी रोग होता है। उक्त भाव का स्वामी यदि मगल अष्टम भाव मे हो तो सर्प से पीड़ा होती है। शुक्र शत्रु भाव का स्वामी होकर मृत्यु स्थान में हो तो नेत्र रोग होता है।

लग्नेश–रोगेश शनि के साथ हों तो अधो-वायु, सूर्य के साथ हो तो ज्वर पीड़ा होती है।

जन्म लग्न से या चन्द्रमा से अष्टमेश शुक्र शत्रुभाव में हो तो नेत्र रोग, शनि हो तो मुख पीड़ा, बुध होय तो सर्प से पीड़ा होती है। यदि शुभ ग्रह से दृष्ट होय तो अशुभ फल नही होता।

कर्क अथवा सिंह राशि मे सूर्य चन्द्रमा हो तो सूखा रोग होता है।

चन्द्रमा, मगल छटे भाव में हो तो वात दोष से पाण्डु रोग कहे।

लग्न में चन्द्रमा आठवे शनि हो तो उसके मन्दाग्नि और पेट में रोग होता है।

सूर्य, चन्द्रमा, मगल छटे भाव में हों तो शूल रोग कहना, राहु, सूर्य, मंगल से दृष्ट शनि गुलिक के साथ शत्रु भाव मे हो शुभग्रहों से युक्त व दृष्ट न हो तो खांसी, दमा अथवा क्षय रोग से पीड़ित होवे।

शुक्र युक्त चन्द्रमा छटे वा आठवें स्थान में हो तो मन्दाग्नि उदर रोगी होता है।

चर लग्न में शुभग्रह हो सातवे स्थानमें शनि हो चन्द्रमा पाप दृष्ट हो तो भूत प्रेतादि से प्राणी दुखी होता है।

चन्द्रमा के घर (कर्क राशि) में मगल हो तो कुष्ठ रोगी होता है।

लग्न में मगल चौथे राहु आठवे सूर्य हो तो वह बालक कुष्ठ रोगी होता है।

चन्द्रमा, बुध, सूर्य, शनिश्चर बारहवें भाव में मंगल दसम स्थान में हो तो उसकी नजर कमजोर हो।

चन्द्रमा से सूर्य आठवें भाव में हो तो वह अनेक रोगों से पीड़ित होता है बारहवें हो तो नेत्रोंमें अल्प प्रकाश हो। चन्द्रमा से दूसरे स्थान मे बुध हो तो जूड़ी हो सातवे गुरु हो तो नपुं-सक अथवा पाण्डु रोगी होता है।

मेष राशि का सूर्य लग्न में हो तो बाल्या वस्था मे पित्त विकार अथवा रुधिर से उत्पन्न हुये रोग होते हैं।

आसन्न मृत्यु लक्षण

जिस रोगी का मुख लाल कमल की तरह हो जावे जीभ काली हो जाये शरीर में पीड़ा उत्पन्न हो तो यह मृत्यु के लक्षण हैं।

आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति, मूल, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, भरणी,

नक्षत्र रवि, शनि, मंगलवार तथा चतुर्थी, षष्ठी अष्टमी, द्वादशी तिथियों मे रोग उत्पन्न हो तो उसे मृत्यु के वश जाने।

जिसको दूसरे मनुष्य की पुतली में अपना स्वरूप न दीखे सूर्योदय के समय दाहिना तथा सूर्यास्त के समय बांया स्वर सवदा चले तो वह मृत्यु का लक्षण है।

जिस मनुष्य को अपनी जीभ और नाक का अग्र भाग तथा दोनों भौंह का मध्यभाग दिखाई न दे तो उस प्राणी की शीघ्र ही मृत्यु जाने।

यन्त्र रत्नादि द्वारा अनिष्ट ग्रहों की शान्ती के उपाय

यदि सूय पीड़ा कारक हो तो—माणिक्य ५ रत्ती रविवार को धारण करें।

चन्द्रमा पीड़ा कारक हो तो—मोती ४ रत्ती सोमवार को धारण करें।

अनिष्ट मंगल के लिये—मूंगा ८ रत्ती मंगलवार के दिन धारण करें।

बुध दुखदायी हो तो—पन्ना ६ रत्ती बुधवार को धारण करें।

गुरू पीड़ा कारक हो तो—पुखराज ९ रत्ती गुरुवार के दिन धारण करें।

अनिष्ट शुक्र के लिये—हीरा २ रत्ती शुक्रवार के दिन धारण करें।

शनि अनिष्ट कारी हो तो—नीलम ६ रत्ती शनिवार को धारण करें।

राहु पीड़ा कारक हो तो—गोमेद ६ रत्ती बुधवार के दिन धारण करें।

केतु के लिये—लहसनिया ६ रत्ती गुरुवार को धारण करें।

सूर्य यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

भौम यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध यन्त्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र यन्त्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु यन्त्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु यन्त्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

जो ग्रह पीड़ा कारक हो उसी ग्रह का रत्न सोने अथवा चांदी की अंगूठी में शुभ मुहूर्त मे धारण करें। अंगूठी में धारण करने से पूर्व प्रत्येक रत्न को रेशमी वस्त्र में दाहिनी भुजा में बांधकर एक सप्ताह तक परीक्षा करे। रत्न बांधने के उपरान्त रोगादि उपद्रव शान्त हों मन प्रसन्न रहे तब अंगूठी में जड़वा कर धारण करे। यदि रत्न बांधने के उपरांत चित्त मे अशान्ति रोगादि उपद्रव बढ़े तो वह रत्न आपकी राशि के अनुकूल नहीं है उसे बदल दीजिये। जिस ग्रह का रत्न हो उसे उसी ग्रह से संबन्धित उंगली में पहनना चाहिये।

सामान्य जन बहुमूल्य रत्न धारण करने मे असमर्थ हों तो वह ग्रह दोषों की शान्ति के लिये विधि पूवक यन्त्र धारण करे। जिस ग्रहका दोष हो उसी ग्रह के यन्त्र को अष्टगन्ध से भोज पत्र पर अंकित कर धूप दीप देकर तावीज में भर कर (जिस ग्रह का यन्त्र हो उसी वार को) दाहिने बाहु मे बांधे।

यन्त्र को यदि ग्रहण मे अथवा होली या दिवाली की रात मे अष्टगन्ध से भोजपत्र पर कम से कम १०८ वार लिखकर सिद्ध करले तो विशेष प्रभाव कारी होगा।

बाल रोगों पर कुछ योग व कुछ रोगों की चिकित्सा

ले० कवि० श्रीकृष्ण त्रिवेदी (निराला) आयुर्वेदाचार्य
एम० ए० एम० एस०, डी० एस० सी० ए०
प्रधान—भारतीय जन स्वास्थ्य रक्षक संघ
भूतपूर्व वाइस प्रिंसिपल-एस. डी. पी. जी आयुर्वेदिक कालेज
न्यू दिल्ली। (लाहौर)
(१) ईस्ट पार्क रोड, मानकपुरा, न्यू दिल्ली-५
(२) १४८२, वजीरनगर, कोटलामुबारिकपुर, न्यू दिल्ली-३

बाल त्रि रसायन

लौह भस्म १० ग्राम, भुना सुहागा ५० ग्राम, सोडा वाईकार्ब ५० ग्राम तीनों को बारीक पीस रखे। मात्रा—बालक की अवस्थानुसार ⅛ ग्राम से ¼ ग्राम तक रोगानुसार मधु, दूध, पानी उष्ण पानी जो बच्चे जन्म से ही कृश होते हैं। दूध पीते ही उवाक कर देते हे। हरा, सफेद, मिट्टी के रंग का कई कई वार मल त्याग करते हैं। बिस्तर पर निढाल गुम सुम पड़े रहते हैं, पेट को छूते ही रोने लगते हैं। जिनका यकृत स्थान कुछ कठोर-शोथ युक्त भासता है, किसी भी कारण वश बालक का वजन न बढ़ रहा हो, मन्द २ ज्वर, कास हर समय रहता हो, किसी रुग्णता के बाद वालक अशक्त हो गया हो तो दिन में १ ३ खुराक तक इसका सेवन करावे। यकृत युक्त रक्त संस्थान वात तन्तु पर इसका प्रभाव होता है।

शंख रसायन—

शंख भस्म ५० ग्राम, भुनी सफेद फिटकरी २५ ग्राम दोनों को बारीक पीस कर रखे।

मात्रा—बालक की अवस्थानुसार ⅛ ग्राम से चौथाई ग्राम तक। जो बच्चे जन्म से ही अति-सार से ही ग्रस्त रहते हैं। बाल शोष के अति-सार में जब कोई भी औषधि कार्य नही करती आंतों मे सूत्र कृमि हो जाते हैं, उनके कारण भी मल वार २ आता है। बालक कुछ भी खावे खाते ही मल त्याग करता है। यहां तक कि मल त्याग के साथ गुद भ्रंश भी हो जाता है। रक्त निकलता हो उदरशूल, उदरफूलना, मरोड़ बालक पैरों को पटकता है। अथवा उदर की तरफ मोड़ता है, दांत निकलते समय भी अधिकतर बच्चों को पतले दस्त आजाते हैं। मल के साथ आंव भी निकलती है। इन सब अवस्थाओं मे

यह औषधि बहुत ही उत्तम कार्य करती है। अनुपान मधु जल, उष्ण जल, अकसौंफ अथवा सोंफ क्वाथ से दे। पथ्य आयुर्वेदानुसार।

अभ्रक भस्म १० ग्राम, छोटी पीपल १० ग्राम, दोनों को बहुत बरीक पीसे चौथाई बटी गाय के दूध में मिला लोहे की बड़ी कढ़ाई में डाल उसमे चार किलो पानी और भर मन्दाग्नि पर रख पकावे जब पकते २ सब जल जावे सामूली चिकनाहट रहे तो कढ़ाई से सुखा कर खरल में डाल घोटे तथा बाजरे से थोड़ी बड़ी गोली बनाले। मात्रा एक गोली मधु दूध अथवा उष्ण जल से दिन में तीन बार रोगानुसार वात ज्वर मास पसली चलना मन्दाग्नि दुर्बलता प्रतिश्याय उदर शूल आदि बाल रोगो के लिये महौषध है।

बाल उदर रोग नाशक

जायफल, लौंग, सफेद जीरा, भुना सुहागा चारो को सम भाग ले अनार के रस में खरल कर बाजरे से थोडी बड़ी गोली बनाले। मात्रा— १ गोली उष्ण जल दूध इत्यादि से दिन मे ३-४ बार दे इससे बालक के हरे पीले दस्त, वमन उदर शूल, बदहजमी आदि रोग नष्ट होते है।

बाल मुख पाक

पीली कौड़ी भस्म तथा कत्था समभाग दोनों को बारीक पीस कर घी मे मिला कर बालक के मुंह के छालों पर लगावे। यदि बालक को उदर विकार के कारण मुख पाक हो तो बालक को अवस्थानुसार एरण्ड तेल दूध के साथ दे। तो उदर विकार नष्ट हो तथा मुख पाक भी नष्ट हो।

बाल शक्ति वर्द्धक घृत

मुलहठी २॥ तो. ग्राम, असगन्ध २॥ सौ ग्राम, पहले दोनों को कूट कर बारीक करले फिर पानी में डाल कर पीसे फिर इस कल्क को १ सेर घृत मे डाल कर पकावे जब घृत मात्र रह जावे तो छान कर रखे। यह घृत अवस्थानुसार बालक को आधा ग्राम से १ ग्राम तथा आयु के अनुसार इससे भी अधिक मात्रा में देने से बालक निरोग रहता है। वह हृष्ट पुष्ट होता है यदि बालक के दांत निकलते समय इसका सेवन कराया जाये तो बालक आसानी से दांत निकाल लेता है।

बाल रक्त दोष—

रक्त दूषित होने के कारण बालकों के सारे शरीर मे फोड़े फुन्सी, बार-बार मुख पाक, कान का बहना, शिर में छोटी २- फुन्सियों का छत्ता सा जमना, फुन्सियों मे पीला चिपचिपा पाक निकलना इत्यादि विकारों पर निम्न क्वाथ बहुत ही उत्तम है।

चिरायता, नीम की छाल; बासे के पत्ते तीनों समभाग रात को पानी में भिगो दे। प्रातः उबाल कर छानकर मधु मिलाकर पिलावे। यदि बालक माता का दूध पीता हो तो यही क्वाथ माता को भी पिलावे।

लगाने की दवा—

गन्धक, मैनसिल, जली हुई गन्नी सुपारी, जली हुई बोरी की काली राख सब सम भाग ले बारीक पीस गरी के तेल मे मिलाकर लगावे। इसके लगाने से पामा, विचर्चिका, खुजली आदि त्वचा के विकार नष्ट होते हैं।

बाल अग्नि दग्ध—

गर्म दूध, पानी, तेजाब तथा गरम तेल के गिरने से शरीर पर जहां भी यह चीजे गिरेंगी वही स्थान जल जावेगा। साधारण जलने से चमड़ी के ऊपर का भाग लाल होता है। इससे ज्यादा जलने से फफाले हो जाते हैं और यदि इससे भी अधिक जले तो नीचे व ऊपर की चमड़ी जल जाती है और यदि इससे भी अधिक जले तो स्नायु धमनी, रक्तवाहिनी शिरा जलकर वह भाग काला पड़ जाता है। और इससे अधिक जलने पर अस्थि पर प्रभाव पड़ता है।

अगर शरीर का अधिकांश अङ्ग जल जाय, मस्तक, छाती वा गुप्तांग जल जावे तो अधिकांश मृत्यु हो जाती है।

अधिक जलने पर दाह हो जलन, तृष्णा की अधिकता अन्दर के अवयवों मे रक्त का जमाव व खिचाव हो नाड़ी क्षीण हो।

उपचार—अलसी के तेल में कच्छा सिंदूर मिला कर लगावे, सरसों का तेल चूने का पानी दोनों को मिलाकर लगावे।

तिल तेल १ किलो राल २५० ग्राम तेल को गरम कर राल डालकर पिघलावे फिर उसमें २५० ग्राम मोम डाल पिघलावे जब वह भी पिघल जावे तो अग्नि से उतार कर थोड़ा २ जल डालकर लकड़ी से जोर से चलावे। जब वह सफेद हो जाय तो जले हुये स्थान पर लगाने से शीघ्र लाभ हो।

खाने को—प्रवालपिष्टी, मुक्तापिष्टी, गन्धक, रसायन आदि दे।

निद्रा में मूत्र त्याग—

कई बच्चे ८–१० साल की आयु के हो जाते हैं। परन्तु निद्रावस्था मे अवश्य ही मूत्र कर देते हैं।

इसके कई कारण हो सकते है। जैसे—मूत्राशय का कमजोर होना, सोते समय तरल पदार्थ ज्यादा मात्रा मे न पिलावे। अगर बालक के उदर कृमि हों तो उसे खुरासानी अजमोद ढांक के बीज तथा वायविडग तीनों समभाग ले पानी से, सेवन करावे। बालक की अवस्थानुसार १ ग्राम की आठ से चार तक खुराक बनाले। वह ४–५ दिन देने के बाद एरण्ड तेल दूध के साथ अवस्थानुसार दे। इस प्रकार उदर कृमि जन्य मूत्र शैया त्याग रोग नष्ट हो जाता है। फिर कुछ दिन लौह भस्म खुरासानी अजवायन के साथ थोड़ी मात्रा मे अवस्थानुसार मधु से सेवन करावे से यह रोग नष्ट हो जाता है।

बाल शीत पित्त—

आम भाषा मे इसे पित्ती उछलना कहा जाता है, इसमे प्रथम तीव्र खारिश होती है, तथा

जहां २ खारिश होती जाती है उस स्थान पर लाल, पीत, भूरे रंग के गोल चकत्ते शोथ युक्त होते है। यह साधारणतः दो प्रकार का है। जिसमे वात दोष की प्रधानता होनी है, उसे शीत पित्त कहते हैं, तथा जिसमें कफ की प्रधानता होती है उसे उदर्द कहते हैं।

जब किसी कारणवश त्वचा को क्षोभ पहुँचती है, तो बाल नाड़ियां तथा रक्त बाहिनियों की प्रतिक्रिया स्वरूप शीत पित्त उत्पन्न हो जाता है।

उपचार—हेतु का परित्याग—यदि कोई पदार्थ बाहर तथा अन्दर से क्षोभ उत्पन्न कर रहा हो तो उसे सेवन न करावे।

अगर इसका कारण आन्त्र कृमि अथवा आंत्र विष हो तो हल्का वमन विरेचन दें।

अदरख रस तथा मधु मिला कर चटावे। खुरासानी अजवाइन तथा गेरू सम भाग ले। अवस्थानुसार मधु से अथवा उष्ण जलसे सेवन कराये अग्नितुण्डी वटी बारीक पीस उष्ण जल से सेवन करावे। सरसों के तेल मे थोड़ा पिपरमेट मिला कर प्रयोग करावे। अजवायन को अग्नि पर डाल बालक को मोटा वस्त्र उठा कर धूनी दे। ऐसा करते समय बालक का मुख वस्त्र से बाहर रखे। इससे बालक को पसीना आ गा परन्तु ऐसा करते समय यह ध्यान रखे कि बच्चे को पसे समय हवा न लगे। उसे कोई ऊनी वस्त्र कम्बल आदि उढ़ा दे। पसीना आने पर मोटे वस्त्र से पोछ दे, बालक के स्वस्थ होने के बाद भी उसे शीतल जल से कुछ दिन स्नान न करावे। तथा वात कफ कारक वस्तुओं का सेवन न करावे उसे नमी वाले फर्श पर न बैठावे।

बालकों के लिए रौप्य रसायन

रौप्य भस्म १० ग्राम, गाय का दूध ढाई सौ ग्राम, गंगा जल चार किलो सबको लोहे की कढ़ाई मे डाल पकाये। जब सब जल कर मधु के समान गाढ़ा हो जावे तो उसमें ५० ग्राम ढाक के फूलों का बारीक चूर्ण मिला मोट के समान गोली बना ले मात्रा १ से ३ बार दिन मे १–१ गोली प्रति बार दूध जल अथवा मधु से सेवन करावे।

उपयोग इस रसायन के सेवन से वात बाहिनियों का क्षोभ शान्त होता है, अतः वातापस्मार मे इसका सेवन करावे। बच्चों के पाण्डु रोग, हर समय मन्द ज्वर रहना सर्वांग दाह ज्वर बार २ अतिसार का होना अतिसार में रक्त का आना, वमन का बार बार आना, कुकर कांस, बाल शोष बिना कारण के बालक का रुदन भोजन मे अरुचि इत्यादि रोगों में रस रसायन का सेवन करावे।

बाल पंच सुधा

शंख भस्म ५० ग्राम, मुक्ता शुक्ति ५० ग्राम, वराटिका भस्म ५० ग्रा०, गोदन्ती भस्म ५० ग्रा० मण्डूर भस्म ५० ग्राम पांचों चीजों को खरल में डाल बारीक पीसे घी ग्वार के रस मे घोट सरसों के समान गोली बनाले।

मात्रा-१ से २ गोली दिन में तीन बार दूध या मधु अथवा सौंफ अर्क के साथ जो बालक जन्म के बाद से ही कमजोर होने लगते है। जो दूध पीते समय ही वमन कर देते है। जो जन्म से ही ८-१० बार दस्त चले जाते है, जिन शिशुओं की तीन मास की आयु होने के बाद भी अवस्थानुसार वजन नही बढ़ता बाल शोष दन्तो त्पत्ति के कारण उत्पन्न रोग बाल मृदूवस्थि बाल यकृत शोथ इत्यादि में बाल पंच सुधा बहुत ही उपयोगी है।

बाल मृद्वस्थि

बाल मृद्वस्थि बच्चों का अस्थि सम्बन्धी रोग है। ६ माह से ३ वर्ष तक के शिशुओं में अधिक तर प्रकट होता है कई बार माता के आहार मे अस्थि पोषक तत्वों की कमी के कारण गर्भावस्था से ही यह रोग हो जाता है। अथवा उपदंश व क्षय ग्रस्थ माता पिता की संतान में भी यह रोग पाया जाता है, जो शिशु अन्धेरे नमी वाले तथा जिनमे साफ हवा नही आती ऐसे मकानों मे रहते हैं। तथा जिन्हें दूध नहीं मिलता बल्कि अल्पायु मे ही चावल रोटी आदि देने लगते है, उन्हे यह रोग हो जाता है। रुग्ण शिशु का शिर बड़ा व बेडोल हो जाता है। शिर आगे से चौड़ा तथा पीछे से दबा हुआ सा हो जाता है। रात्रि में शिर पर बहुत स्वेद आता है। थोड़ा ज्वर भी रहता है, ऐसे बालक के दांत कुछ देर से निकलते है, यदि बालक बैठने लगता है। तो मेरू मे वक्रता होने लगती है। बाहु तथा पाद की अस्थियों में वक्रता आ जाती है। जिन अस्थियों पर दबाव पड़ता है, वह ज्यादा वक्र हो जाती है, रुग्ण का उदर बड़ा हो जाता है। तिल्ली व यकृत बढ़ जाता है। शिशु की वृद्धि रुक जाती है। देह क्षीण रक्ताल्पता बेचैनी इत्यादि हर वक्त ही रहती है. रक्त मे चूने की कमी के कारण मांस पेशियों में भी आक्षेप जनन संकोचादि होने लगता है।

उपचार चिकित्सा शिशु की अवस्थानुसार प्रवाल पचामृत तथा मण्डूर भस्म मक्खन तथा १-२ बादाम को पीस कर मधु मिला उसके साथ सेवन करावे लाक्षादि तेल का मर्दन कर फिर बेसन मल ऋतु अनुसार उष्ण व शीत जल से स्नान करावे। तेल मलने के बाद बालक को कुछ देर मिट्टी पर छोड़ दे, अगर शरद ऋतु हो तो धूप में मिट्टी पर छोड़ दे, बालक को हलका पोष्टिक तथा शीघ्र पचने वाला भोजन दे।

बाल अजीर्ण—

दूध दोष के कारण या जिन द्रव्यों का वह सेवन करता है, उनकी गुरु विदाही आदि प्रकृति के कारण ऐसी अवस्था को जिसमे पाचन की मन्दता हो और खाद्य यथा समय न पचकर क्षोभ हो जाता है, तथा अरुचि, विदाह, हृल्लास आदि विकार होते हैं। इसे ही अजीर्ण कहते हैं शिशुओं मे अजीर्ण से निम्न विकार हो जाते हैं

आध्मान, वमन, अतिसार, ज्वर, अंगमर्द, शोथ वृक्क विकार, पाण्डु, कामलादि।

आध्मान—अजीर्ण की वह अवस्था है, जिसमे खाद्य या तो अपक्व रहता है। उदरकठिन व तना सा होता है, उदर वायु से भर जाता है, वायु अतिलोम होने के कारण कंठ शोप श्वास लेने मे कठिनाई नाभि प्रदेश का उभार, कई वार मूत्रावरोध, सूचीवत वेदना होती है. वालक बहुत ही बेचैन रहता है।

उपचार—पहले हिगुवर्ति बनाकर गुदा में लगावे। हींग को पानी मे घोलकर रुई की वत्ती में लपेट कर लगावे। इससे बालक को मल साफ होकर पेट हलका हो जाता है। हींग व सेंधे नमक को सिरके में मिलाकर पेट पर लगावे। इससे वायु का निस्सरण होकर उदर हलका हो जाता है। खुरासानी अजवायन व कालानमक थोड़ी मात्रा मे उष्ण जल से वालक को देने से आध्मान नष्ट हो जाताहै। अजीर्णमे अगर वमन हो तो सौंफ का अर्क अथवा सौंफ का उवला हुआ पानी पिलावे या द्राक्षासव ४–५ बूंद पानी में मिलाकर दें। यदि अजीर्ण मे अतिसार भी हो तो शख भस्म, सोडा वाई काव के साथ दें। वालक की अवस्था के अनुसार। गोदन्ती भस्म दही के साथ दे गन्धक वटी सेवन करावे। यदि अजीर्ण के साथ ज्वर भी हो तो मृत्युञ्जय, गोदन्ती, सञ्जीवनी इत्यादि औषधियों का प्रयोग करे। अजीर्ण से विषों की उत्पत्ति है। जिनसे यकृत, वृक्क इत्यादि पर प्रभाव होकर सारे शरीर पर प्रभाव होता है। अत: वातानुलोमक रेचक मूत्र रेचक औषधि देकर दोषों का नाश करे।

जन्म समय बाल ग्रह—

जन्म के दिन शिशु को पापिनी नामक गृही का आवेश होता है, इसके प्रकोप से बालक दूध नहीं पीता, गर्दन को इधर उधर पटकता है तथा कुछ बेचैन सा रहता है।

उपाय—मांस, सुरा, पुष्प, धूप, दीप आदि द्रव्य एकत्रित कर बच्चे के ऊपर से उतार कर चौराहे पर रखव दे, गूगल की धूनी बालक को दे। मजीठ, लोध, श्वेतचन्दन को पीसकर शिशु के शरीर पर मले।

दूसरी रात्रि में भीषणी नामक ग्रही शिशु को ग्रहण कर लेती है। इसके कारण कास, श्वास, गात्र संकोच उत्पन्न हो, इसके लिये भी पहले के समान वलि चौराहे पर रखे. तथा बकरी के मूत्र मे पिप्पली, अपामार्ग, श्वेतचंदन खस पीस कर देह पर लेप करे। गाय के बालों से बालक को धूप दे।

तीसरी रात्रि को घण्टाली नामक गृही बालक को दुख देती है। इससे बालक रोता है, जम्भाई लेता है, हाथ पांवों को इधर उधर पटकता है, डरता है। इसमे भी पहले के समान चौराहे पर वलि दे। केशर को बकरी के दूध मे पीस शिशु के शरीर पर लेप करे तथा राई से धूप दे।

चौथी रात्रि में काकाली नामक गृही बालक को कष्ट देती है इसी से बालक दूध नहीं पीता वमन करता है। मुंह से झाग निकलता है, नेत्रों को ऊपर को चढ़ाता है, इसके लिये काले सांप तथा शराव से चौराहे पर बलि दे। सांप की

केंचुली को घोड़े के मूत्र मे पीस लेप करे, गूगल व साप की केंचुली से धूप दे।

पांचवी रात्रि को हंसाधिका नामक गृही बालक को ग्रसती है। इसके कारण बालक रोता है बार २ मुट्ठियों को बांधता है, जम्भाई लेता है तथा जोर २ से शिशु का श्वास चलता है, इसके लिये मछली की वलि दे। राई, गूगल, कूठ आदि से लेप कर तथा धूनी दे।

छटी रात्रि को फटकारी नामक गृही बालक को कष्ट देती है। इसमे भी हंसाधिका के समान वलि, धूप, लेप करे।

सातवीं रात्रि को मुक्तकेशी नामक गृही बालक को पीड़ा देती है। इसमे बालक बार २ दुर्गन्ध जम्भाई लेता है, जमी हुई वमन करता है बालक को बार २ खासी आती है।

आठवीं गृही जिसका नाम श्री दण्डी है। आठवी रात्रि को शिशु को पीडित करती है। इस कारण बालक बार २ जिह्वा को निकालता है, रोता है, चारों ओर देखता है, इसमे भी रोगी को मछली की चाराहे पर वलि दे, गूगल की धूनी दे, हिंगुल, बच, सरसों इत्यादि का लेप करे और इन्हों से धूप दे।

इसमे शरीर पर गोमूत्र या गोबर मले व्याघ्र नख से धूप दे।

नवमी रात्रि मे महागृही बालक को पीड़ित करे। इससे बालक अपने दोनों हाथोंकी मुट्ठियों को बांध मुख में दे, कुछ चचल सा हो जावे, श्वास जोर २ से चले। इसमे भी पहले के समान वलि दे, रक्त चन्दन, कूठसे लेप करे, बन्दर के नख अथवा रोम से धूप दे।

दसवीं गृही रोदनी नाम की है, इससे पीड़ित शिशु निरन्तर रोता रहता है, बालक का रंग नीला हो जाता है, इसमें से एक प्रकार की सुन्दर गन्ध आती है। इसमें पके हुये चावलोंकी चौराहे पर वलि दे। राइ राल आदि का लेप तथा धूप १३ दिन तक दें तो बालक स्वस्थ हो।

एक मास के बालक को पूतना सकुलीनामक गृही कष्ट देती है, बालक काक के समान रोता है, इसमे बालक को गोमूत्र से स्नान करावे। लाल चन्दन का लेप करे, पीत वस्त्र पहरावे, लाल फूलों की माला धारण करावे दक्षिण दिशा को ओर मांस व शराब से वली दे, ऐसा तीन दिन करने से बालक स्वास्थ्य हो।

दो मास के बालक को मुकुटा गृही पीड़ित करती है। बालक को सर्दी लगती है। वमन करता है। उसके वस्त्रों मे से अजीव गन्ध आने लगती है, बालक का मुख जिव्हा व कण्ठ बार २ सूखता है इससे मीठ व लड्डू से चौराहे पर वली दे। धूप दीप दे।

तीसरे मास मे गोमुखी नामक गृही बालक को कष्ट देती है, इसमे बालक बरावर मल मूत्र का त्याग करता है, रोता रहता है, निद्रा मे चौक २ कर जग जाता है। इसमे पके चावल उरद की प्रातः चौराहे पर वली दे पंच पल्लव को जल में उबाल कर उससे बालक को स्नान कराये। दोपहर को सरसों से धूप दे।

चौथे मांस मे पिंगला नामक गृही बालक को कष्ट देती है, बालक का शरीर सूखने लगता है। अधिक शीतल रहता है तथा उसमें एक अजीव गन्ध आती है।

पांचवे मास मे षडंग देवी गृही बालक को पीड़ित करती है, इसमें बालक स्तन पान न करे अरुचि हो सदैव रोता रहे वार २ खांसी आवे मुख सूखे शरीर में पसीना निकले, इसमें मछली की दक्षिण दिशा मे बली दे । तथा गूगल की धूप दे।

छटे मास में पंकला अथवा पद्मागृही बालक को कष्ट दे। बच्चा बहुत रोवे गला बैठ जावे मुख से राल वह इसमे मांस शराब और पुष्प वलि दे गूगल से धूप दे।

सातवे मास मे पूतना नामक गृही बालक को पीड़ा दे इसमे बालक दिन प्रति दिन कृश होता जाता है वहुत रोता रहता है, वमन करता है, स्तन पान वहुत धीरे २ करता है तथा इसमें भी पके चावल भात शराव की वल दे। राई सरसों गूगल की धूनी दे।

आठवे मास मे प्रजिता नामक गृही से बालक पीड़ित होता है इससे बालक ज्वर ग्रस्त हो नेत्र रोग हो वमन करे । तथा जोर २ से रुदन करे शरीर मे विस्फोट हो । इसमे भी उड़द चावल उवले हुये पीले रग से रंग कर चौराहे पर वलि दे गूगल की धूनी दे।

नवम मास मे कुम्भ कर्णिका नामक गृही बालक को ग्रसे। इसमें बालक नेत्र वन्द किये पड़ा रहे, स्तन पान न करे ज्वर हो वार २ वमन करे। शरीर से दुर्गन्ध आये. इसमे भी पके चावल उड़द शरावकी वलि दे, गूगल सरसों की धूनी दे।

दसवें मास मे तावंती नामक गृही बच्चे को ग्रहण करे। इसमे बालक आंखों को बन्द रखे हाथ पैरों को पटके स्तन पान न करे, मलत्याग न करे। तथा वेचैनी अधिक हो। इसमे शराब मांस पताका इत्यादि चढ़ा कर वलि दे, गूगल की धूप दे।

ग्यारहवें मास में सुग्रही नामक गृही बच्चे को ग्रहण करे। इससे ग्रस्त बालक नही बचता अतः इसके लिये किसी प्रकार की भी चिकित्सा नहीं है।

बारहवें मास में कालिका गृही बालक को पीड़ा दे बहुत वेचैन हो, रुदन करे, वमन करे, तृषा लगे जल्दी २ श्वास ले, इसके लिये भी पहले के समान वलि व धूप दीप न करें।

वर्षों के अनुसार बालकों के गृह

प्रथम वष नन्दिनी नामक गृह बालक को पीड़ित करती है इससे बालक नेत्र वन्द कर जमीन पर पड़ा रहना चाहता है. यहां तक कि गोद मे भी नही चाहता उसके शरीर मे दाह होता है। खाने की इच्छा नही होती । इसमें तिल चावल मास इत्यादि की वलि दे। बच्चे को गंगा जल से स्नान करा सफेद चदन का लेप करे। सुगन्धित धूप दे।

दूसरे वर्ष मे रोदनी नामक गृही अपना प्रकोप बालक पर डालती है। बच्चे को तीव्र ज्वर हो अध्मान हो मूत्र का वर्ण लाल हो, हाथ पैरों को पटके, इसमे भी ऊपर के अनुसार बलि इत्यादि कार्य करे।

तीसरे वर्ष मे धनदा गृही कष्ट दे। इससे बालक को मन्दाग्नि हो कण्ठ में शोथ हो, ज्वर हो, कम्प हो, बच्चा जोर २ से रोवे, इसमें गुड़ चावल तिल के पुष्पों से बलि दे, तिल की पीठी की मूर्ति बना पूजन करे। पंच पल्लवों के जल से स्नान कराये गूगल और अमलतास से धूप दे।

चौथे वर्ष मे चचला गृही बालक को कष्ट दे, बालक के कन्ठ पर शोथ हो, ज्वर हो श्वास चले बहुत रोवे बेचेनी अधिक हो अंग फड़के, इसमें भी चिकित्सा के साथ पके चावल उरद इत्यादि से बलि दे गूगल सरसों इत्यादि की धूप दे।

पांचवे वर्ष में नर्तकी गृही का प्रकोप हो इससे ग्रस्त बालक बार २ मूत्र त्याग करे। शरीर का वर्ण बदले मुख सूखा रहे, बेचेनी हो, शरीर मे दर्द हो हाथ पावों को दबवानेकी इच्छा करे। इसमे बालक के शरीर मे तिल तेल मले, गूगल की धूनी दे।

छटे वर्ष मे जमना नामक गृही बालक को कष्ट दे, बालक को बहुत अधिक डकार आवे जम्भाई आये, सारे शरीर म दाह हो तथा शरीर सूखता जावे। बालक को पीपल के पत्तों को जल मे उबाल कर उससे स्नान कराये, कपूर की धूप जलावे, मिट्टी के बर्तन में जल भर इसमे चंदन डाल बच्चे को छुआ कर चौराये पर संध्या के समय रखे।

सातवें वर्ष मे बालक को भावन्ता गृही कष्ट दे। बालक के शरीर में पीड़ा हो, शरीर अशक्त हो मूत्र अधिक आवे, मुख सूखे। बालक को असगन्ध जल में उबाल कर उससे स्नान कराये असगन्ध औषधि के रूप में दे। असगन्ध अमलतास से धूनी दे।

आठवें वर्ष मे कुमारिका गृही से बालक पीड़ित हो बालक को दस्त न आवे, वमन बार बार आवे, ज्वर हो सारे शरीर मे दर्द हो, तथा बार २ शरीर कांपे, बालक को लक्षणों के अनुसार औषधि दो, गूगल की धूप दो. उड़द की दाल की पीठी से चौराहे पर बलि दे।

नौवे वर्ष में कलहणी नामक ग्रह बालक को पीड़ित करे, बालक बार २ मल मूत्र त्यागे वमन हो ज्वर के साथ सारे शरीर में दर्द हो, हाथ पांव मे ऐठन हो। औषधोपचार के साथ मोर पंखों की धूनी दे, हाथ पैरों पर तिल तेल मले, जल, चावल, पुष्प, दूध बालकों से छुवा कर चौराहे पर चढ़ावे।

दसवे वर्ष मे देवहूती नामक ग्रही बालक को उत्पीडित करे। बालक को ज्वर हो, बार २ वमन करे, कब्ज हो, नेत्रों में पीड़ा हो, कभी हसे कभी रोवे, कुछ का कुछ बोले, इसमे औषधि उपचार के साथ २ आटे का पुतला बनाकर उसे चावल, हल्दी, रोली से पोत थोड़ा सा वस्त्र लगा चौराहे पर रखे।

ग्यारहवें वर्ष मे बालक को कालका ग्रह कष्ट दे। इससे बालक का नेत्र पीड़ा हो, श्वास चले,

ज्वर हो, शरीर में दर्द हो, मां मां शब्द का उच्चारण करे। औषधोपचार के साथ काले तिल व काले उड़द, कनेर के फूल रात्रि को चौराहे पर चढ़ावे, मोम व चड़द की धूनी दे।

बारहवें वर्ष में यापता नामक ग्रही बालक को पीड़ा दे, बालक बहुत बेचैन हो, ज्वर आदि बार २ आवे, सारे शरीर में पीड़ा का अनुभव करे। पके चावल, दही, शक्कर सन्ध्या समय चौराहे पर रखे, असगन्ध गूगल की धूप दे, साथ में औषधोपचार भी करे।

तेरहवें वर्ष में यक्षिणी नामक ग्रह बालक को पीड़ित करे। बालक कभी हसे, कभी रोवे, ज्वर हो, हृदय स्थान पर शूल हो, ज्वर कभी हलका कभी तीव्र हो, औषधोपचार के साथ राई गूगल, असगन्ध की धूप दे। शराब, गुड़, आटा के सन्ध्या समय चौराहे पर रखावे।

चौदहवें वर्ष में स्वच्छन्दा नामक ग्रह से पीड़ित हो। तीव्र ज्वर हो, नाभि स्थान पर शूल हो, तृषा हो, वमन करे, वमन के साथ रक्त निकले, नाक से रक्त निकले, औषधोपचार करे। कपूर की धूनी दे; खीर, लड्डू इत्यादि रात्रि को चौराहे पर चढ़ावे।

पन्द्रहवें वर्ष में कपी नामक ग्रह से बालक पीड़ित हो, बालक को तीव्र ज्वर हो, निद्रा बहुत आवे, वमन हो, शरीर कापे, बालक भ्रम में पड़ा रहे, औषधोपचार करे, वेसन का मीठा रोट बना प्रातः काल पीपल के नीचे चढ़ावे, राई व गूगल की धूप दे।

सोलहवें वर्ष मे दुर्जया नामक ग्रह बालक को कष्ट दे। ज्वर हो वमन करे, निद्रा बहुत आवे, बार २ शरीर कापे औषधोपचार करे, बतासे सफेद फूल चौराहे पर सन्ध्या समय चढ़ावे, गूगल शकर की धूप दे।

बाल उपयोगी कुछ यन्त्र

यन्त्र नजर न लगे

७२	८१	३३	४८
६८	८२	६	११
२५	३७	४६	५०
४५	२७	६	१

ऊपर लिखे यन्त्र को स्याही से कागज पर लिख तांबे के तावीज में डाल गूगल से धूपित कर बालक के गले में बांधे तो नजर न लगे।

यन्त्र गुदभ्रंश नष्ट हो

७	३	८०	१०
७६	८६	७	८
८२	७७	६	१
४	६	८२	८१

इस यन्त्र को कागज पर केशर से लिख धूप दे, बालक के गले में बांधे, तो गुदभ्रंश रोग नष्ट हो।

यन्त्र सोते बालक न डरें

तं	त	त	तं
त	तं	त	तं
त	त	तं	त
त	त	तं	तं

इस यन्त्र को दूधी के रस से कागज पर लिख बालक के गले में बांधे, बालक सोता हुआ नहीं डरे।

कान दर्द निवारण यन्त्र

४२	२६	७	८
७	३	१६	१५
२८	२२	६	१
५	६	२४	१

इस यन्त्र को अनार के रस से कागज पर लिख धूप दे, बालक के कान में बांधे तो कान का दर्द जावे।

यन्त्र बालक के रोग नष्ट करने का

१४	३१	२	८
२०	३	१५	१४
१	१५	१६	१६
४४	६	१६	१९

इस यन्त्र को लाल चन्दन से भोज पत्र पर लिख बालक के गले में बांधे तो बालक का रोग जावें।

बालकों का काग लटकना

गले तथा मुख की संधि के ऊपर के भाग में शोथ होकर मांस नीचे को लटक जाता है। इसका कारण अधिक खांसी मस्तक में दूषित दोषों के संग्रह होने से नम्र स्थान पर दबाव पड़कर मांस नीचे को लटक जाता है। शुद्ध सुहागा, शु० फिटकरी तथा भुनी माजूफल तीनों को बारीक पीस मधु में मिला अंगुली पर लगा काग को उठावे अथवा उड़द की दालको बारीक पीस तालु पर लेप कर दे, इससे काग अपने स्थान पर आजाता है।

शिशु तुण्डी पाक

दूषित अस्त्र से नाल काटने से अथवा किसी अन्य कारण से भी नाभि पक जाती है, शोथ हो जाता है तथा नाभि का स्थान फूल जाता है, हल्दी को घी में गर्म कर उस रुई में तर कर

उसे नाभि पर रख बांध दे, इससे शोथ व पाक दोनों नष्ट हो जाते है । माजूफल को पानी में पीस कर नाभि पर लेप करे।

बाल घुटी

वायविडग, वेलगिरि, सौंफ, नागर मोथा, बड़ी हरड़, जटामांसी, अजवायन, सोया दाना उश्नाव, छोटी इलायची सबको सम भाग ले कूट कर रखे। इसमें से बच्चे की आयु अनुसार १ से ३ मासे तक थोड़े पानी में उबाल कर छान कर थोड़ा गुड़ या चीनी डाल कर बालक को पिलावे, यह घुटी ५ वर्ष तक के बालको को सप्ताह में एक दो बार जरूर देना चाहिये इसके प्रयोग से बालक स्वस्थ रहता है, अगर ज्वर अतिसार, कास इत्यादि रोगों में नित्य दे तो भी कोई हानी नही है। यह घुटी अग्नि वर्द्धक तथा अनेक रोग नाशक है।

शिशु अन्ड कोश वृद्धि

वायु का दवाव वढ़ कर बालक को ठीक प्रकार न उठाने से झटका लगने से एक ओर अथवा दोनों ओर के अण्डनीचे की ओर बढ़ जाते है, शोथ हो जाती है, उपचार सरसों के तेल में थोड़ी अफीम पकाकर लगावे ऊपर से गर्म कर एरण्ड के पत्ते बांधे।

बाल पामा विचर्चिका

हल्दी, पमाड़बीज, राई, इन्द्रायन इन सबको तक्र से पीस कर लेप करे तो बालक की खुजली विचर्चिका आदि नष्ट हो!

बच्चों के उदर में केंचुवे पड़ना

इस रोग की उत्पति भी माता के अहित आहार बिहार के द्वारा ही होती है, परन्तु जो बालक माता का दूध नही पाते उन्हे स्वयं के आहार विहार जसे मृतिका भक्षण अजीर्ण भोजन मीठी चीजो का अधिक साग इत्यादि के द्वारा इसकी उत्पति होती है, इनके कारण शरीर का वर्ण बदल जाता है। अतिसार वमन की इच्छा होना, ज्वर आलस्य का होना, नाक को बार २ रगड़ना है, सोते में दांत कटकटाता है।

उपचार—रेवन्द चीनी, वायबिडग, कमीला सबको समभाग ले बारीक पीस रखे मात्रा १/८ ग्राम से १/४ ग्राम तक रात सोते समय थोड़ा चीनी मिला दूध अथवा पानी से सेवन करावे अथवा आयु के अनुसार विडंगारिष्ट, या कृमि-मुदगर प्रयोग कराये यदि उदर में चूरने हो तो अवस्थानुसार थोड़ी २ खुरासानी अजवायन बच्चे को दे। इससे चूरने नष्ट हो।

वालापस्मार (कमेड़ा)

बालक के पेट में केंचुये हो आतों मे मल बढ़ा बड़े दान निकलते समय तीव्र ज्वरमे कुक्कर कास में बालक के कमजोर होने पर बालक ऐठता है, हाथ पांवो में बल पड़ जाते है। बालक श्वास हीन जान पड़ता है। आयुर्वेद मे इस रोग को स्कन्धापस्मार कहते है। इसमें मुख से झाग आने लगता शरीर से रक्त की गन्ध आने लगती है।

उपचार—शुद्ध तुन्दिक, काली मिर्च, बड़ी हरड़, असगन्ध, निगुण्डी बीज सब सम भाग बच के क्वाथ में खरल कर मोठ के समान गोली बनाले १-१ गोली दोरे के समय जल्दी २ बच्चा

जलमें पीस के दे। अथवा वच को पानी में पीस गर्म कर पिलाये मूच्छा पर नौसादर बालक की नाक में सुंघाये इसके सुंघाने से बालककी मूर्च्छा नष्ट हो जाती है. इसके अतिरिक्त वातगजांकुश वृहत वातचिन्तामणि इत्यादि रस मधु अदरक रस से दे। तिल तेल का मर्दन कर गूगल की धूनी दे इस प्रकार कुछ दिन उपचार करने से यह रोग नष्ट हो जाता है।

मृत्तिका भक्षण जन्य बाल पांडु

कई बालक बहुत ही मिट्टी खाने लगते हैं। मिट्टी खाने से रसवह स्रोतों का अवरोध हो जाता है अतः जो रस बनता है उसका सम्यक ग्रहण नहीं होता इसी कारण उक्त रस का ग्रहण न होने से रसादि धातुओं की समुचित पुष्टि नहीं होती शरीर क्षीण व दुर्वल हो जाता है, शरीर ओज वर्ण और कान्ति क्षीण हो जाती है यह पाडु को उत्पत्ति का कारण है। पांडु होने पर नेत्र, मुख, उदर, हाथ, पर और लिंग पर शोथ हो जाती है। यकृत व प्लीहा का स्थान वहुत कठोर हो जाता है. रोगी को अधिकतर कब्ज हो जाता है, कभी २ रक्त मिश्रित दस्त भी होने लगते हैं।

उपचार—प्रथम मिट्टी को निकालने के लिये रेचक दवा दें। इसके लिये अश्वकचुकी रस दें अथवा निम्न औषधि दे।

एलवा, कालीमिर्च चूर्ण समभाग ले गुलाब के अर्क मे खरल कर चणक समान गोली बनाले यह गोली जल में पीस उष्ण कर पिलावे, इससे बालक को २-३ दस्त आजावेगे। इसके बाद पुनर्नवा, मण्डूर का सेवन करावे, तथा आरोग्य वर्धनी वटी भी सेवन करावे, जब रोगी का पेट कुछ हलका हो जावे तो पुनर्नवा मण्डूर के साथ थोड़ा वंशलोचन भी मिलाकर सेवन करावे।

पथ्यापथ्य—आयुर्वेदानुसार।
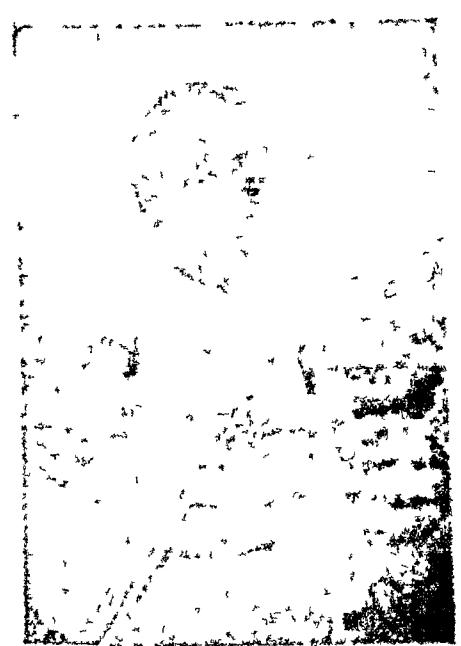
बालकों का व्यायाम

व्यायाम, वास्तव में आबाल वृद्ध सबके लिये समान रूप से उपयोगी है। इससे रक्त शरीर में तेजी से दौड़ता है, तथा शरीर का काफी विकार पसीने के द्वारा वाहर निकल जाता है। छोटे शिशु के लिये विशेष कोई व्यायाम की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह अपने हाथ पैरों को उछाल कर इधर उधर फेंक कर स्वाभाविक रूप से व्यायाम कर लेते हैं, तथा जब वह कुछ बड़े होते हैं, तो उठते हैं, गिरते हैं, बैठते हैं, इस प्रकार वह काफी व्यायाम कर लेते हैं। जब बच्चा कुछ चलने लगे तो उसकी अंगुली पकड़ कर थोड़ा टहलाना चाहिये। तथा जैसे २ बालक के शरीर मे शक्ति आवे उसके टहलने की दूरी भी बढ़ानी चाहिये। बहुत कोई बच्चों को बाहों पर

चित-लिटा कर उछालना चाहिये ऐसा करने से एक दो बार बच्चा डरता है, परन्तु फिर उछलने से बालक प्रसन्न भी होता है, तथा उसकी पसली आंत्र, पांव, हाथों का व्यायाम भी हो जाता है। अब जरा और बड़ा हो जाय तो बच्चों के दोनों हाथ पकड़ कर झूले के समान हिलावे इससे बच्चे के हाथ पांव, पसली, पट्ठे मजबूत होते हैं। जब बच्चा कुछ और बड़ा हो जावे तो हाथों के समान पैरों को पकड़ कर (शिर नीचे और ऊपर) उसी प्रकार झुलावे, इससे फुफ्फुस व हृदय को विशेष रूप से लाभ होता है। यह ध्यान रखे कि यह व्यायाम कराते समय बालक का पेट खाली हो उसे इतनी जोर से न झुलावे कि उसके हाथ पैर या पट्ठे दर्द करने लगें। जब बच्चा अच्छी प्रकार चलने लगता है, तो फिर व्यायाम की आवश्यकता नहीं होती क्यों कि बड़ा बच्चा दिन भर में इतना उछल कूद लेता है कि उसे किसी व्यायाम की आवश्यकता नहीं होती।

बाल मृत्यु के कारण

नगरों का दूषित वातावरण—माता-पिता मे शिक्षा का अभाव तथा अन्ध विश्वास माता पिता की दरिद्रता, माता पिता का बाल विवाह, असंयमित जीवन आदि कुछ ऐसे कारण हैं, जो बाल मृत्यु के कारण होते हैं। क्यों कि बालक के जन्म-मरण, पोषण, स्वास्थ्य रक्षा, चरित्र निर्माण आदि में माता पिता का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहां बालक की भलाई मे माता पिता एक महान कारण हैं, वहां बाल मृत्यु के लिये भी माता पिता का बाल विवाह प्रेम परायण गृहस्थ जीवन, निर्धनता, अशिक्षित होना उनका अन्ध विश्वास तथा रोगी की चिकित्सा में असावधानी इत्यादि ही मुख्य कारण हैं। जिनकी आयु कम होती है यानी धर्म शास्त्र के अनुसार २५ वर्ष का पुरुष व १६ वर्ष की स्त्री ही विवाह के योग्य होते हैं। परन्तु आज कल बहुत कम आयु के विवाह हो रहे, ऐसा देहाती इलाकों में बहुत होता है। कम आयु में गर्भ धारण होने पर वह बच्चा क्षीण दुर्बल प्रायः रोगी रहने वाला अल्पायु होता है। माता पिता के दरिद्र व अशिक्षित होने के कारण बालक का ठीक प्रकार लालन पालन नहीं होता तथा नहीं कुछ धनाभाव के कारण तथा कुछ अन्ध विश्वास के कारण ठीक चिकित्सा नहीं कराते। बल्कि झाड़ फूक, धागे, तावीज पर ही विश्वास कर बच्चे को काल के गाल मे भेज देते हैं। देहातों मे तो अनेक कारण बाल मृत्यु के होते हैं। फिर नगरों में इतना वातावरण दूषित होता है, कि छोटी २ तंग गली अन्धेरे जैसे मकान जिसमें वायु तथा सूर्य के दर्शन ही दुर्लभ होते हैं। बच्चों में क्योंकि रोग क्षमता कम होती है। इसी कारण ऐसे दूषित वातावरण मे वह बार २ रुग्ण होते हैं और अन्तमे क्षीण हो वह काल के गाल में समा जाते हैं, इस बाल मृत्यु को रोकने के लिये वैयक्तिक, समाजिक और राष्ट्र के रूप के प्रयत्न हो तो तभी कुछ हो सकता है।

बालकों की देखभाल और चिकित्सा

बालकों का लालन पालन व देख रेख बड़ी सावधानी के साथ करने की आवश्यकता होती है। थोड़ी भी असावधानी से अनेक रोग हो जाते हैं और इनके परिणाम बड़े भयंकर होते हैं बच्चों की सम्भाल पान के पत्ते की तरह होनी चाहिये ताकि उन्हे कोई व्याधि न होने पावे।

मातायें यदि अपने बच्चों के खान-पान मे सावधान रहे तो वे रोग ग्रस्त न होने पावें।

चुस्त और अधिक कपड़ों का पहनना, भोजन पर भोजन देना, अधिक मीठा खिलाना, बच्चों के हठ के कारण उन्हे पैसा देना इत्यादि अहितकर है। यह बात भी आवश्यक है कि बच्चों को कुछ समय तक खुले बदन हवा और मिट्टी मे खेलने दिया जावे। इससे उनके स्वास्थ्य के लिये प्राकृतिक मदद मिल जाती है। साबुन, सोडा, पाउडर, वेसलीन, क्रीम के स्थान में काली मिर्च और स्वच्छ जल का उपयोग विशेष उपकारी होता है। अस्तु माता पिता को उपरोक्त सुझावों पर ध्यान रखकर बच्चों की रक्षा करनी चाहिये।

बच्चों के लिये कुछ औषधियों के सफल प्रयोग यहां पर दिये जातेहैं जिनसे फायदा उठाया जा सकता है।

वैद्यराज श्री हरवंश प्रसाद जी पाठक
अवधेश बन्धु आयुर्वेदिक औषधालय
मु० सिहोरा रोड (म० प्र०)
आपने बाल चि० अंक के लिये तीन योग भेजकर जो सहयोग दिया है उसके लिये कृतज्ञ हूं
—वि० सं० डा० दमयन्ती त्रिवेदी

(१) ज्वरातिसार पर—

असली अतीस को गोदुग्ध में २४ घन्टे रखा जावे उसके बाद गरम जल में धोकर छाया में सुखा ले। बारीक पीसकर शीशी में रखे।

मात्रा—आधी से २ रत्ती तक दिन में दो बार शहद से देवे, जरूरत होने पर बिल्वगिरी का चूर्ण मिलाले।

(२) कुकर कास—

बच्चों के लिये कुकर खांसी बड़ी दुःसह होती है। इससे बच्चे बेचैन हो जाते हैं। उन्हें खांसते २ वमन हो जाती है व स्वास्थ्य गिरता जाता है। अतः इसकी सरल व सफल औषधि करके हित साधा जावे।

फिटकरी का फूला — १ माशा
सुहागा का फूला
मुलहठी का चूर्ण
बबूल का गोंद
काकड़ासिंगी
पुष्करमूल
खाने की हल्दी
कंटकारी के फूल की केशर

एकको घोटकर रखलें।

लीवर हरण

वैद्यराज श्रीयुत वन्धु शिवदयालु जी मिश्र
मु० शिवदयालु औष० जैतपुर (हमीरपुर)

आपने लीवर हरण नाम से एक योग भेज कर कृतार्थ किया है। धन्यवाद

वि० ब्र० बा० दमयन्ती त्रिवेदी

अधपके बड़े पपोता के बीज निकाल उसमे आध पाव सेंधा नमक भर दें और कपरोटी करके १० सेर उपलों में फूंक दें स्वतः ठन्डा होने पर निकाल कर खरल करलें ३ माशा दिन में तीन बार बालकों को खिलावे। ऊपर से १ तोला जल पिलावे साथ ही चूने के पानी से बना शक्कर का शीरप दिया करें आश्चर्य जनक पुराने से पुरना लीवर शान्त होता है घी दूध से बचाव करें अर्थात कम देवें, चिकने गरिष्ट पदार्थ बालक को न मिलने चाहिये हो सके तो प्रातः चौथाई तोला बिन ब्याई बछिया का गोमूत्र देते रहे, ३ माह के प्रयोग से भयकर लीवर में आराम होता है साथ ही रक्त वर्धक टानिक देते रहे।

मात्रा—१ से २ रत्ती।

अनुपान—शहद से ६–६ घन्टे में।

(३) आँख—

आंख शरीर के अङ्गों में रत्न है। अतः उसकी रक्षा सदैव रत्न के समान सावधानी से होनी चाहिये। कहा है—

आंख बनाकर ईश ने, सबको दिया प्रकाश।
बिना आंख के जगत में, सबही वस्तु बिनाश॥

आंख की रक्षा हेतु निम्नांकित सुझाव दिये जाते हैं।

(१) त्रिफला के जल से आंख का प्रक्षालन किया जावे।

(२) माता के दूध या बकरी के दूध का फाहा आंख पर रखा जावे।

(३) अमरूद (बिही) के कोमल पत्तों और अनार के पत्तों का रस आंख मे छोड़ना और उसी की लुगदी की पट्टी कुछ समय बांधना।

(४) हीरा कसीस को पानी मे घोलकर गरम २ आंख के पलकों पर लेप करने से दर्द दूर होता है।

अञ्जन

(५) आंबा हल्दी	आधा मा०
फिटकरी का फूला	१ मा०
इलायची दाना	२ र०
कबाबचीनी	२ र०
सिन्दूर	१ र०
कपूर	आधी र०

सबको खूब घोट कर सूखा या घी मे मिला कर अञ्जन करें।

गुलाब जल मे कुछ दवा डालकर ड्रापर से आंख मे छोड़े।

इससे आंख की लाली, दर्द, जाला, माड़ा, फूली, कमजोरी, चकाचौंध इत्यादि के लिये लाभ होता है।

कुछ परीक्षित प्रयोग

वैद्यराज श्री लालाराम जी शर्मा वाशिष्ठ मु० पो० खेड़ी रू (करनाल) हरियाना प्रान्त

(१) सूखा रोग पर—मक्खन जड़ी, छोटी दुद्धी, अजवायन देसी तीनों को समभाग लेकर खूब महीन पीस कर शीशी में रखें, मात्रा–४ से ८ रत्ती बलाबल विचार कर अजा दुग्ध या लक्षणानुसार योग्य अनुपान से दिन मे तीन बार दे केवल दो सप्ताह के सेवन से ही शिशु की काया पलट जाती है, वमनातिसारादि उपद्रव तो केवल तीन या चार मात्राओं से ही शांत हो जाते हैं।

(२) शख पुष्पी बूटी का स्वरस सूखा रोगी बालक की पीठ पर धीरे २ १५–२० मिनट तक हलके हाथ से मर्दन करें कुछ देर पश्चात बालक की पीठ मे काले २ अथवा श्वेत रंग के मुंह वाले कीड़े निकलेंगे उन्हें बारीक चीमटी या मोचने आदि से पकड़ कर दूर फेंक दें बाद में गऊका गोबर पीठ पर मल कर गर्म जल से स्नान करा दें, यह क्रिया सप्ताह में एक बार करें।

(३) मोतीझारा पर—कछुवा की खोपड़ी को तुलसी के पत्तों की लुगदी में रख कर अरने कण्डों में फूंक दें बाद को भस्म में तुलसी पत्र स्वरस की ही भावना दे देकर सात बार फूंक दें इसकी मात्रा–२ से ४ रत्ती तक तुलसी रस या लक्षणानुसार योग्य अनुपान से दिन मे तीन बार दें केवल दो दिन के सेवन से ही रुका हुआ मोतीझारा बाहर आकर सब कुलक्षण शांत होंगे।

(४) पसली चलने पर—भारगी उसारे रेवन्द दोनों को मिला कर या अलग एक से दो र० चार २ घन्टे पर दूध के देने से पसली चलना रुक जाता है।

(५) बच्चों की खांसी पर—लवंग, मिर्च, बहेड़े का छिलका ३–३ माशे खैर ९ माशे महीन पीस कर कीकर की छाल काथ में घोंट कर एक २ रत्ती की गोलियां लें मात्रा १ से २ घन्टे पर चटाते रहे।

(६) सामान्य ज्वर पर—शुभ्रा भ अमृतासत्व, गोदन्ती भस्म समभाग लेकर ख कर एक जी बना ले बच्चों के हर प्रकार के ज्व पर रामबाण है योग्य अनुपान से बला विचार कर २ से ४ रत्ती तक प्रति ४–४ घ पर देते रहे।